तक़्वियतुल ईमान

(تقوية الإيمان باللغة الهندية)

लेखक

अल्लामा शाह मुहम्मद इस्माईल रहिमहुल्लाह

अनुवादक

अबू आबिद फैसल बिन सनाउल्लाह

सन्शोधन

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

www.islamhouse.com

1428-2007

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
प्रस्तावना	८
बन्दा और बन्दगी	८
वर्तमानकाल में मुसलमानों की स्थिति	९
सब से बेहतर राह	९
दीन का समझना कठिन नहीं	९
रसूल क्यों आए ?	१०
हकीम और बीमार की मिसाल	११
तौहीद (एकेश्वरवाद) और रिसालत (ईश्दूतत्व)	१२
पुस्तिका तक़्वियतुल ईमान	१३
प्रथम अध्याय तौहीद का बयान	१४
अवाम की बेखबरी	१४
शिर्क के काम	१४
दावा ईमान का और काम शिर्क के	१५
कुरआन का निर्णय	१६
अल्लाह के अतिरिक्त कोई क़ादिर नहीं	१७
अल्लाह के अतिरिक्त कोई सहयोगी नहीं	१८
अल्लाह के सिवा कोई कारसाज़ नहीं	१८
शिर्क की हक़ीक़त	१९
दूसरा अध्याय शिर्क की क़िस्में	२३
१– इल्म (ज्ञान) में शिर्क करना	२३

२– अधिकार में शिर्क करना २४
३– इबादत (उपासना) में शिर्क करना २५
४– दैनिक कामों में शिर्क करना २६
तीसरा अध्याय : शिर्क की बुराई और तौहीद की खूबियाँ ३०
शिर्क माफ नहीं हो सकता ३०
एक उदाहरण ३१
शिर्क सब से बड़ा अत्याचार है ३२
तौहीद ही मुक्ति का रासता है ३३
अल्लाह तआला शिर्क से अप्रसन्न तथा बेपरवाह है ३३
अज़ल (अनादिकाल) में तौहीद का इक़्रार ३४
शिर्क प्रमाण नहीं बन सकता ३७
भूल का बहाना स्वीकार नहीं होगा ३८
रसूलों तथा आसमानी किताबों के मूल उपदेश ३९
तौहीद और मग़फिरत ४१
चौथा अध्याय ४४
अल्लाह तआला के ज्ञान में शिर्क करने का खण्डन ४४
ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान केवल अल्लाह को है ४५
इल्मे ग़ैब (परोक्ष विद्या) का दावा करने वाला झूठा है ४६
एक सन्देह का निवारण ४६
ग़ैब केवल अल्लाह ही जानता है ४७
पुकार केवल अल्लाह ही सुन सकता है ४९
लाभ तथा हानि का मालिक केवल अल्लाह है ५०
अम्बिया का मुख्य काम ५१
अम्बिया ग़ैब दान (परोक्ष ज्ञानी) नहीं ५२

इल्मे गैब के विषय में रसूलुल्लाह (स) का आदेश	५२
हजरत आईशा (रज़ियल्लाु अन्हा) का कथनें	५४
गैब तो अल्लाह के सिवा कोई जानता ही नहीं	५५
पाँचवाँ अध्याय	५६
अल्लाह के अधिकारों में शिर्क करने का खण्डन	५६
लाभ तथा हानि का मालिक केवल अल्लाह है	५७
अल्लाह के अतिरिक्त कोई दूसरा रोज़ी देने वाला नहीं	५८
केवल अल्लाह को पुकारो	५८
अल्लाह तआला की आज्ञा के बिना कोई सिफारिश के लिए मुँह नहीं खोल सकता	६०
श्फाअ्त (सिफारिश) की क़िस्में	६१
श्फाअते विजाहत् सम्भव नहीं	६१
श्फाअते मोहब्बत भी सम्भव नहीं	६२
आज्ञा मिलने के पश्चात सिफारिश होगी	६३
सीधा मार्ग	६४
अल्लाह सब से निकट है	६७
केवल अल्लाह पर भरोसा कीजिए	६८
रिश्तेदारी काम नहीं आ सकती	७०
छठवाँ अध्याय : उपासना में शिर्क करने की बुराई तथा उपासना का अर्थ	७३
उपासना केवल अल्लाह ही के लिए है	७३
सजदा केवल अल्लाह ही के लिए जाईज है	७४
अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को पुकारना शिर्क है	७५
अऋल्लाह के शआइर (कर्मकाण्ड) का सम्मान	७६
ग़ैरूल्लाह के नाम की चीज़ हराम है	७८
शासनाधिकार केवल अल्लाह के लिए है	८०

मनगढ़न्त नाम शिर्क हैं	८१
मनगढ़न्त रीतियाँ तथा परम्पराएँ शिर्क हैं	८१
लोगों को अपने आदर तथा सम्मान के लिए सामने खड़ा रखना मना है	८२
बुतों (मूर्तियों) और थानों की पूजा शिर्क है	८३
अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए बलिदान करना अल्लाह की लानत् (अभिशाप) का कारण है	८५
क़ियामत की निशानियाँ	८५
थान पूजा तुच्छ लोगों का काम है	८७
बुतों का तवाफ	९०
सातवाँ अध्याय : रस्म व रिवाज में शिर्क करना हराम है।	९२
शैतान की चाल।	९२
सन्तान के विषय में शिर्क की रीतियाँ	९४
खेती बाड़ी में भी शिर्क हो सकता है	९६
चौपायों में भी शिर्क हो सकता है	९७
हलाल एवं हराम में अल्लाह पर झूठ गढ़ना	९८
तारों में तासीर (प्रभाव) मानना शिर्क है	१००
ज्योतिषी, जादूगर तथा काहिन काफिर हैं	१०१
ज्योतिषी से पूछ ताछ करना महा पाप है	१०२
शकुन और फाल शिर्क की रस्में हैं	१०३
अल्लाह तआला को सिफारिशी नबनाओ	१०७
अल्लाह के नजदीक सब से प्यारे नाम	११०
अल्लाह के नाम के साथ कुन्नियत् न रखो	१११
केवल माशाअल्लाह (अल्लाह जो चाहे) कहो	११२
ग़ैरूल्लाह की क़सम खाना शिर्क है	११३

नज़्र व नियाज के विषय में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निर्णय	११४
सज्दा केवल अल्लाह के लिए जाईज़ है	११६
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश अपनी ताज़ीम के विषय में	११८
सैयि्द् शब्द के दो अर्थ होते हैं	१२१
चित्र (तस्वीर) के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश	१२१
पाँच बड़े गुनाह	१२३
अपने बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान	१२४

بسم الله الرحمن الرحيم

प्रस्तावना

इलाही तेरा हज़ार बार शुक्र है कि तूने हमको अनेक उपहार प्रदान किए हमें अपने सच्चे धर्म की रहबरी फरमाई , सीधे मार्ग पर चलाया , एकेश्वरवादी (मोवहि्हद) बनाया , अपने प्रिय मुहम्मद ﷺ के समुदाय (उम्मती) में से बनाया, दीन का शौक़ दिया और दीनदारों की मुहब्बत प्रदान की ।

ऐ हमारे पालनहार हमारी ओर से अपने प्रिय पैग़म्बर मुहम्मद ﷺ पर और आप के परिवार जन पर , आपके साथियों पर तथा आप के सभी प्रतिनिधियों पर अपनी दया और कृपा की वर्षा कर, हमें भी उन में सम्मिलित कर ले, और इस्लामी जीवन व्यतीत करने का सौभाग्य प्रदान कर और इस्लाम पर हमें मौत दे , और आप ﷺ की ताबेदारी करने वालों की सृची में हमारा भी भी नाम लिख ले । आमीन (ए अल्लाह हमारी इस प्रार्थना को क़बूल फर्मा)

बन्दा और बन्दगी

सभी मनुष्य अल्लाह के बन्दे हैं । बन्दे का कार्य है उपासना करना, जो बन्दा उपासना न करे वह बन्दा नहीं । मूल उपासना अल्लाह पर ईमान को शुद्ध रखना है , इस लिए कि जिसके ईमान में कोई खोट और गड़बड़ी हो तो उसकी कोई भी उपासना क़बूल नहीं होगी और जिसका ईमान शुद्ध है उसकी थोड़ी उपासना भी क़ीमती है । अतः हर मुसलमान पर अनिवार्य है कि वह ईमान को

दुरुस्त करने का प्रयत्न करे और ईमान शुद्ध करने को अन्य तमाम वस्तुओं से आगे रखे ।

वर्तमानकाल में मुसलमानों की स्थिति

इस समय लोग दीन के मामले में विभिन्न राहों पर चल रहे हैं । कुछ लोग बाप दादा की रीतियों को अपनाते हैं , कुछ लोग बुजुर्गों के तरीक़ों को अच्छा समझते हैं , कुछ लोग धार्मिक विद्वानों की गढ़ी हुई बातों को प्रमाण बनाते हैं , कुछ लोग अक़्ली घोड़े दौड़ात हैं, और धार्मिक बातों में बुद्धि को घुसेड़ते हैं ।

सब से बेहतर राह

बेहतरीन राह यही है कि कुरआन और ह़दीस को मूल आधार बनाया जाये । धार्मिक बातों में अपनी बुद्धि को हस्तक्षेप करने का अवसर न दिया जाये और इन्हीं दोनों सोतों (यानी कुरआन व हदीस) से आत्मा को सैराब किया जाये । बुजुर्गों की जो बात , मोलवियों और धार्मिक विद्वानों का जो मसूअला और बिरादरी की जो रस्म (परम्परा) कुरआन तथा ह़दीस के अनुकूल हों उसे मान लिया जाये और जो इन के खिलाफ हो उसे छोड़ दिया जाए ।

दीन को समझना कठिन नहीं

लोगों में यह बात मश्हूर है कि कुरआन और ह़दीस का समझना बड़ा कठिन है , इन दोनों को समझने के लिये बहुत बड़े ज्ञान की ज़रुरत है , हम जाहिल लोग किस तरह समझ सकते हैं और किस तरह इन के अनुसार अमल कर सकते हैं , इन पर अमल तो केवल वली और बुजुर्ग ही कर सकते हैं । उनका यह विचार बेबुनियाद है , क्योंकि अल्लाह तआला ने फर्माया कि कुरआन पाक की बातें बहुत साफ और स्पष्ट हैं :

وَلَقَدْ أَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ءَايَٰتٍۭ بَيِّنَٰتٍۖ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ إِلَّا ٱلْفَٰسِقُونَ ﴿٩٩﴾

(البقرة: ٩٩)

अर्थः– बेशक हमने आप पर साफ साफ (स्पष्ट) आयतें उतारी हैं , उन का इनकार केवल फासिक् (नाफरमान) ही करते हैं ।[1]

यानी कुरआन की बातों और आयतों का समझना कुछ भी मुश्किल नहीं बिल्कुल आसान है, हाँ इन पर अमल करना मुश्किल है , क्योंकि मन को किसी की फरमांबरदारी बुरी लगती है , इसी लिए नाफर्मान लोग इन को नहीं मानते ।

रसूल क्यों आये ?

कुरआन और ह़दीस को समझने के लिए कुछ अधिक ज्ञान की ज़रुरत नहीं , क्योंकि रसूल नादानों को सीधा मार्ग दिखाने के लिए , जाहिलों को समझाने के लिए और अनजानों को ज्ञान सिखाने ही के लिए आये थे ।

अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿ هُوَ ٱلَّذِى بَعَثَ فِى ٱلْأُمِّيِّـۧنَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا۟ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا۟ مِن قَبْلُ لَفِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٢﴾ ﴾ (الجمعة 002)

---

[1] कुरआन में इस अर्थ को स्पष्ट करने वाली बहुत सारी आयतें है, जैसे उदाहरण स्वरूप अल्लाह तआला का यह फरमान हैः ﴿وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ﴾ '' हम ने कुरआन को समझने के लिए आसान किया है तो कोई है जो इसे समझे''। (सूरा क़मरः१७)

अर्थ : उसी (अल्लाह) ने अन्पढ़ों में उन्हीं में से (चुन् कर) एक रसूल भेजा, जो उन पर उसकी आयतें पढ़ता है और उन को (शिर्क तथा कुफ़्र से) पाक करता है और उन्हें किताब (कुरआन) और हिकूमत (ह़दीस) की शिक्षा देता है , निःसन्देह वह लोग इस से पहले खुली गुम्राही में थे ।

यानी अल्लाह तआला की यह बड़ी नेमत है कि उसने ऐसा रसूल भेजा जिसने अनजानों को जानकार , अपवित्रों को पवित्र, जाहिलों को ज्ञानी , नादानों को दाना और भटके हुए लोगों को सीधा मार्ग दिखाया। इस आयत को समझने के बाद अब भी अगर कोई व्यक्ति यह कहने लगे कि कुरआन समझना आलिमों (ज्ञानियों) और इस पर अमल करना बड़े-बड़े बुजुर्गों ही का काम है तो निःसन्देह उसने इस आयत को ठुकरा दिया और अल्लाह तआला की इस अज़ीम नेमत की नाक़द्री की , बल्कि यह कहना चाहिये कि जाहिल इसकी बातें समझ कर ज्ञानी और गुमराह इस पर अमल करके बुजुर्ग (महापुरुष) बन जाते हैं ।

हकीम और बीमार की मिसाल

मिसाल के तौर पर यूँ समझो कि एक माहिर हकीम है और एक आदमी किसी बड़े रोग का शिकार है । एक आदमी हमदर्दी में उस रोगी से कहता है कि तुम फलाँ हकीम के पास जाकर अपना इलाज (चिकित्सा) करालो , लेकिन रोगी जवाब देता है कि उस के पास जाना और उस से इलाज (उपचार) कराना बड़े बड़े तन्दुरुस्तों और निरोगियों का काम है , मैं तो बहुत बीमार हूँ भला मैं किस तरह उस के पास जाकर इलाज करा सकता हूँ । तो क्या आप ऐसे रोगी को पागल न समझेंगे ? कि नादान उस माहिर हकीम की हिक्मत को नहीं मानता । इस लिए कि हकीम तो रोगियों ही के इलाज के लिए होता है , जो तन्दुरुस्तों और निरोगियों का इलाज

करे वह हकीम कैसे हुआ ? मतलब यह है कि जाहिल और पापी को भी क़ुरआन तथा ह़दीस के समझने और शरीअत के आदेशों पर सर्गरमी से अमल करने की उतनी ही जरुरत है जितनी एक ज्ञानी और बुज़ुर्ग को । अतः हर ख़ास व आम का फर्ज़ (दायित्व) है कि क़ुरआन तथा सुन्नत ही की खोज में लगा रहे । उन्हीं को समझने की प्रयास करे , उन्हीं पर अमल करे और उन्हीं के साँचों में अपना ईमान ढाले ।

तौह़ीद (एकेश्वरवाद) और रिसालत (ईश्दूतत्व)

याद रखो ईमान के दो भाग हैं : (१) अल्लाह तआला को एक मात्र माबूद (इबादत के योग्य) समझना । (२) रसूल को रसूल मानना। अल्लाह को एक मात्र माबूद समझने का मत्लब् यह है कि उसके साथ किसी को शरीक न किया जाए और रसूल को रसूल मानने का मत्लब् यह है कि उन्हीं के पथ पर चला जाये । प्रथम भाग तौह़ीद है और दूसरा भाग सुन्नत की पैरवी (अनुसरण) है । तौह़ीद का विप्रीत शिर्क है और सुन्नत का विप्रीत बिदअ़त् है । हर मुसलमान का फर्ज़ है कि तौह़ीद और सुन्नत की पैरवी पर मज़बूती के साथ क़ाइम रहे , उन्हें सीने से लगाये रखे , शिर्क और बिद्अ़त् से बचता रहे । इस लिए कि शिर्क और बिदअ़त् यह दोनों ऐसे पाप हैं जो ईमान को नष्ट कर देते हैं , दूसरे गुनाहों से केवल आमाल में गड़बड़ी पैदा होती है । इसलिए जो आदमी तौहीदपरस्त और सुन्नत की पैरवी करने वाला हो, शिर्क और बिद्अ़त् से दूर भागता हो और उसके साथ रहने से तौह़ीद और इत्तिबाए सुन्नत का शौक़ पैदा होता हो , उसी को अपना पीर और गुरु समझना चाहिए ।

पुस्तिका तक़्वियतुल ईमान

हम ने कुछ आयतें और ह़दीसें जिनमें तौह़ीद और सुन्नत की पैरवी का बयान है और शिर्क और बिद्अत् की बुराई का वर्णन है , इस पुस्तिका में जमा कर दी हैं । और उन आयतों तथा ह़दीसों का अनुवाद साधारण उर्दू भाषा में किया गया है ताकि ख़ास व आम सभी प्रकार के लोग इससे लाभ उठा सकें और जिनको अल्लाह तआला चाहे सीधी राह पर ले आये । अल्लाह करे हमारा यह काम आख़िरत में हमारी नजात का कारण बन जाए। (आमीन)

इस किताब का नाम तक़्वियतुल् ईमान है , इस में दो अध्याय हैं, पहले अध्याय में तौहीद का बयान और शिर्क की बुराई है और दूसरे अध्याय में सुन्नत की पैरवी का बयान और बिद्अत की बुराई है। (मगर अब इस पुस्तिका को नये सिरे से तरतीब दिया गया है, जिस में सात अध्याय हैं)।

प्रथम अध्याय

तौह़ीद का बयान

अवाम की बेखबरी

मालूम होना चाहिए कि अधिकांश लोगों में शिर्क फैला हुआ है और तौह़ीद का पता नहीं । ईमान का दावा करने वाले अधिकांश लोग तौह़ीद और शिर्क का अर्थ नहीं जानते, मुसलमान हैं मगर अनजाने में शिर्क में फंसे हैं। इस लिए सब से पहले तौह़ीद और शिर्क का अर्थ समझना चाहिए , ताकि क़ुरआन और ह़दीस से उनकी भलाई और बुराई मालूम हो सके ।

शिर्क के काम

आम तौर पर लोग कठिन समय में पीरों को , पैग़म्बरों को , इमामों को , शहीदों को , फरिश्तों को और परियों को पुकारा करते हैं , उन्हीं से मुरादें मांगते हैं ,उन्हीं की मन्नतें मानते हैं , आवश्यकता की पूर्ति के लिए उन्हीं पर नज़र व नियाज़ चढ़ाते हैं और बीमारियों से बचने के लिए अपने बेटों को उन्हीं की ओर सम्बोधित (मन्सूब) करते हैं । कोई अपने बेटे का नाम अब्दुन्नबी , कोई अली बख़्श , कोई हुसैन बख़्श ,कोई पीर बख़्श, कोई मदार बख़्श , कोई सालार बख़्श, कोई गुलाम मुह़ीयुद्दीन , कोई गुलाम मुईनुद्दीन रखता है । कोई किसी के नाम की चोटी रखता है , कोई किसी के नाम की बद्धी पहनाता है , कोई किसी के नाम पर कपड़े पहनाता है , कोई किसी के नाम की बेड़ी डालता है , कोई किसी के नाम पर जानवर भेंट चढ़ाता है । कोई संकट में किसी की दोहाई देता है और कोई किसी की क़सम खाता है । सारांश यह कि जो कुछ हिन्दू अपनी मूर्तियों के साथ करते हैं वही सब कुछ यह नाम

के मुसलमान वलियों , नबियों , इमामों , शहीदों , फरिश्तों तथा परियों के साथ करते हैं , इस के बावजूद मुसलमान होने का दावा करते हैं । सच फर्माया अल्लाह तआला ने सूरः यूसुफ में ।

﴿ وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُم بِٱللَّهِ إِلَّا وَهُم مُّشْرِكُونَ ﴿١٠٦﴾ ﴾(يوسف 106)

अर्थ : – उन में से अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान लाकर भी शिर्क करते हैं । (सूरा यूसुफ् आयत : १०६)

दावा ईमान का, काम शिर्क के

यानी अधिकतर लोग जो ईमान का दावा करते हैं वे शिर्क में फंसे हुए हैं। अगर कोई उन से कहे कि तुम दावा तो ईमान का करते हो ,मगर् काम शिर्क का कर रहे हो, शिर्क और ईमान की विभिन्न राहों को क्यों मिला रहे हो ? तो वे यह जवाब देते हैं कि हम तो शिर्क नहीं करते हैं, बल्कि नबियों और वलियों से प्रेम करते हैं और उन के अक़ीदत्मन्द हैं । शिर्क तो तब होता जब हम उन्हें अल्लाह के बराबर समझ्ते , हम तो उनको ऐसा नहीं समझ्ते हैं । हम तो उन को अल्लाह का दास और उसी की पैदा की हुई (मख़्लूक़) समझ्ते हैं , किन्तु अल्लाह ने उन को अधिकार और शक्ति प्रदान की है । इस प्रकार यह लोग उसी की इच्छा से संसार में अपना अधिकार लागू करते हैं । अतः उनको पुकारना अल्लाह ही को पुकारना है और उन से मदद् मांगना अल्लाह ही से मदद् मांगना है, यह लोग अल्लाह के प्यारे बन्दे हैं जो चाहें करें , यह लोग अल्लाह के दरबार में हमारे लिए सिफारि्श (अनुशंसा) करने वाले और वकील हैं । इनके मिलने से अल्लाह मिल जाता है और इनको पुकारने से अल्लाह की कुरबत् (निकटता) प्राप्त होती है , जितना हम उन्हें मानेंगे उसी प्रकार से हम अल्लाह के निकट होते जायेंगे । इस प्रकार की और बहुत सी फजूल बातें की जाती हैं ।

क़ुरआन का फैसिला

इन सब बातों का एक मात्र कारण यह है कि ये लोग क़ुरआन और ह़दीस को छोड़ बैठे , धार्मिक बातों में बुद्धि से काम लिया , क़िस्से कहानियों के पीछे लगे हुए हैं और ग़लत् रस्मों (तुच्छ रीतियों) को प्रमाण बनाते हैं । अगर उन के पास क़ुरआन तथा ह़दीस का ज्ञान होता तो उनको मालूम हो जाता कि रसूलुल्लाह ﷺ के सामने भी मुश्रिक् लोग (बहुदेववादी) इसी प्रकार के प्रमाण पेश किया करते थे। अतः अल्लाह तआला ने उन पर अपना क्रोध प्रकट किया और उन्हें झूठा बताया । सूरः यूसुफ् में अल्लाह तआला फरमाते हैं :

﴿ وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰٓؤُلَآءِ شُفَعَٰٓؤُنَا عِندَ ٱللَّهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّـُٔونَ ٱللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِى ٱلْأَرْضِ ۚ سُبْحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ١٨ ﴾ (يونس 018)

अर्थ : वे अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों की उपासना करते हैं जो उन को न हानि पहुँचा सकते न लाभ और कहते हैं कि यह लोग अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारशी हैं । हे नबी आप कह दीजिए कि तुम अल्लाह को ऐसी बात बता रहे हो जिसे वह आसमान एंव जमीन में नहीं जानता । (अर्थात जिसकी कोई हक़ीक़त नहीं) वह उनके शरीकों से पाक और पवित्र है । (सूरा यूनुस् आयत १८)

अल्लाह के अतिरिक्त कोई क़ादिर (शक्तिशाली) नहीं

यानी मुश्रिक (बहुदेववादी) लोग जिन चीज़ों की पूजा करते हैं वे बिल्कुल् बेबस हैं । उन में न किसी को लाभ पहुँचाने की क्षमता है और न हानि पहुँचाने की, और उन का यह कहना कि अल्लाह तआला के पास ये हमारी सिफारिश् (अनुशंसा) करेंगे , तो यह ग़लत विचार है, क्योंकि अल्लाह ने यह बात बताई नहीं, फिर क्या तुम अल्लाह से अधिक ज्ञान रखते हो और आसमान तथा जमीन की बातों को अल्लाह से अधिक जानते हो जो तुम कहते हो कि वे हमारे सिफारशी होंगे ? मालूम हुआ कि संसार में कोई किसी का ऐसा सिफारिशी नहीं कि अगर उसको माना जाए तो वह लाभ पहुँचाये और अगर न माना जाये तो हानि पहुँचाये , बल्कि अम्बिया और अवलिया की सिफारिश् भी अल्लाह ही के अधिकार में है । संकट के समय उनको पुकारने या न पुकारने से कुछ नहीं होता । और यह भी पता चला कि यदि कोई किसी को अपना सिफारिशी समझकर पूजे वह भी मुशरिक है । अल्लाह तआला ने सूरः ज़ुमर में फरमायाः–

﴿ أَلَا لِلَّهِ ٱلدِّينُ ٱلْخَالِصُ ۚ وَٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِهِۦٓ أَوْلِيَآءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَآ إِلَى ٱللَّهِ زُلْفَىٰٓ إِنَّ ٱللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِى مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى مَنْ هُوَ كَٰذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾ ﴾ (الزمـــر 003)

अर्थ : सावधान ! केवल अल्लाह ही के लिए ख़ालिस् उपासना है और वह लोग जिन्हों ने अल्लाह के आतिरिक्त अन्य लोगों को सहयोगी बना रखा है और कहते हैं कि हम उनकी उपासना केवल इस लिए करते हैं ताकि वे हम को अल्लाह से निकट करदें । निःसन्देह अल्लाह उनके बीच निर्णय करेगा जिसमें कि वे झगड़ा

करते हैं। निःसन्देह अल्लाह झूठे और नाशुकरी करने वाले को रास्ता नहीं दिखाता। (सूरा जुमर आयतः ३)

अल्लाह के सिवा कोई सहयोगी नहीं

यानी सच्ची बात तो यह है कि अल्लाह बन्दे से बहुत ही निकट है, लेकिनु इस को छोड़ कर यह बात गढ़ी कि अम्बिया, अवलिया और नेक लोग हमें अल्लाह से निकट कर देंगे और उन को अपना सहयोगी समझा और अल्लाह की इस नेमत को कि वह बिना किसी माध्यम के सब की सुनता है और सब की कामनाएँ पूरी करता है ठुक्रा दिया और दूसरों से प्रार्थना करने लगे कि वे उनकी कामनायें पूरी कर दें। और फिर अनोखी बात यह है कि ग़लत और तुच्छ तरीकों से अल्लाह की निकटता (कुरबत्) भी तलाश की जाती है। भला ऐसे उपकार को भुला देने वालों और झूठों को कैसे मार्गदर्शन मिल् सकता है। ये तो इस टेढ़ी राह पर जितना चलेंगे उतना ही सीधी राह से दूर होते जायेंगे।

अल्लाह के सिवा कोई बिगड़ी बनाने वाला नहीं

उपरोक्त आयत से मालूम हुआ कि जो कोई दूसरों को यह समझ कर पूजे कि इन की पूजा से अल्लाह की नज़दीकी् प्राप्त होती है तो ऐसा आदमी मुश्रिक, झूठा और अल्लाह की नेमत को ठुकरा देने वाला है। अल्लाह तआला फरमाते हैं :

﴿ قُلْ مَنْ بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾ ﴾

(المؤمنون 088- 089)

अर्थः ((आप कह दीजिए कि कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ का अधिकार है और वह पनाह देने वाला भी हो और उस के विरुद्ध कोई

दूसरा पनाह न दे सके , यदि तुम जानते हो तो बताओ ? इस के जवाब में वह यही कहेंगे कि यह सारी चीजें केवल अल्लाह के अधिकार में हैं । आप कह दीजिए फिर तुम कहाँ दीवाने बने जारहे हो ? **(सूरः अल्मूमिनून : ८८, ८९)**

यानी अगर मुशरिकों से पूछा जाये कि वह कौन है जिसका अधिकार पूरे संसार में चलता है और जिसके अधीन सभी चीजें हैं और जिसके विरुद्ध कोई भी खड़ा न हो सके ? तो वह इस प्रश्न के उत्तर में यही कहेंगे कि यह अल्लाह ही की शान है । फिर अल्लाह को छोड़कर दूसरों को मानना दीवानापन् नही ंतो और क्या है? इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह ने किसी को संसार में तसर्रुफ् करने की क्षमता और शक्ति नहीं प्रदान की है और न ही कोई किसी का हिमायती (सहयोगी) हो सकता है । इस के अतिरिक्त यह भी मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने के मुश्रिक भी बुतों (मूर्तियों) को अल्लाह के बराबर नहीं मानते थे बल्कि उनको अल्लाह की पैदा की हुई (मख़्लूक) और उसका दास ही समझते थे और यह भी जानते थे कि इन में ईश्वरीय शक्तियाँ नहीं हैं , मगर यही उनका उन्हें पुकारना , उन से प्रार्थना करना , उनकी मन्नतें मानना , भेंट चढ़ाना तथा उनको अपना वकील एंव सिफारिशी समझना ही उनका शिर्क था । यहाँ से मालूम हुआ कि जो कोई किसी से ऐसा ही व्यवहार करे चाहे उसको अल्लाह का बन्दा , दास और मख़्लूक़ ही समझता हो तो वह और अबूजहल् दोनों शिर्क में बराबर हैं ।

शिर्क की हक़ीक़त

इस बात को अच्छी तरह समझ् लेना चाहिए कि शिर्क केवल यही नहीं है कि किसी को अल्लाह के बराबर या उसके मुक़ाबिले का माना जाए , बल्कि शिर्क यह भी है कि जो चीज़ें अल्लाह ने उपने लिए विशेष कर रखी हैं तथा जिनको अपने बन्दों पर बन्दगी

की निशानियां घोषित की हैं उन्हें किसी अन्य के लिए किया जाए, जैसे सजदा करना , अल्लाह के नाम की कुरबानी, मन्नत, मुश्किल के समये पुकारना , अल्लाह को उसकी ज़ात (अस्तित्व) के साथ हर स्थान पर उपस्थित (हाजिर) समझना तथा शक्ति और अधिकार आदि में दूसरों का भी कुछ हिस्सा जानना। यह सब शिर्क के विभिन्न रूप हैं ।

सज्दा केवल अल्लाह ही के लिए मखसूस है, कुरबानी उसी के लिए की जाती है , मन्नत केवल उसी की मानी जाती है ,संकट के समय उसी को पुकारा जाता है, केवल वही अल्लाह हर जगह हावी और निगराँ है और हर प्रकार का अधिकार और शक्ति उसी के क़ब्ज़े में है। अगर इन में से कोई सिफत् (गुण) अल्लाह के सिवा किसी दूसरे में मानी जाए तो यह शिर्क है । अगरचे उसको अल्लाह से छोटा ही समझा जाए और उसे अल्लाह की पैदा की हुई मख्लूक़ और बन्दा ही माना जाए । फिर इस मामले में नबी , वली , जिन्नात, शैतान , भूत परेत और परी आदि सब बराबर हैं । जिस से भी यह मामला किया जाएगा शिर्क होगा और करने वाला मुश्रिक होगा। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने बुत परस्तों (मूर्तिपूजकों) की तरह यहूदियों और नसरानियों को भी डाँट डपट किया है हालांकि वह मूर्तिपूजक न थे, हाँ अवलिया और अम्बिया के साथ ऐसा ही मामला करते थे । अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ ٱتَّخَذُوٓا۟ أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَـٰنَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ ٱللَّهِ وَٱلْمَسِيحَ ٱبْنَ مَرْيَمَ وَمَآ أُمِرُوٓا۟ إِلَّا لِيَعْبُدُوٓا۟ إِلَـٰهًا وَٰحِدًا ۖ لَّآ إِلَـٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَـٰنَهُۥ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾ ﴾ (التوبة 031)

अर्थ ((उन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर अपने आलिमों और दरवेशों को रब (प्रतिपालक) बना लिया और मरयम् के पुत्र ईसा को भी । हालाँकि उन्हें एक ही अल्लाह की उपासना का आदेश दिया गया था, जिसके सिवा कोई पूजनीय नहीं । जो मुश्रिकों के शिर्क से पवित्र और पाक है ।)) (सूरा तौबा आयतः ३१)

यानी वे अल्लाह को बड़ा मालिक समझते हैं किन्तु अपने मोलवियों , धार्मिक विद्वानों तथा दरवेशों को अल्लाह से छोटा मालिक मानते हैं । जब कि उनको इस का आदेश नहीं दिया गया । अतः इस से उन पर शिर्क साबित हुआ । अल्लाह तो अकेला है , उसका कोई शरीक और साझीदार नहीं । चाहे वह छोटा हो या बड़ा, सब उसके बेबस् बन्दे हैं और बेबसी में बराबर हैं। जैसाकि अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿ إِن كُلُّ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ إِلَّآ ءَاتِي ٱلرَّحۡمَٰنِ عَبۡدٗا ﴿٩٣﴾ لَّقَدۡ أَحۡصَىٰهُمۡ وَعَدَّهُمۡ عَدّٗا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمۡ ءَاتِيهِ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ فَرۡدًا ﴿٩٥﴾ ﴾

(مريم 93- 95)

अर्थ : ((आसमान और जमीन पर जितने भी लोग हैं सभी अल्लाह के सामने दास बन कर आने वाले हैं । निःसन्देह अल्लाह ने उन सब को घेर रखा है और एक एक करके उनको गिन रखा है और उन में से हर एक को क़ियामत के दिन उसके सामने अकेला आना होगा ।)) (सूरा मरयमः९३,९४,९५)

यानी इनसान हो या फरिश्ते सभी अल्लाह के गुलाम हैं । अल्लाह के सामने उसका इस से अधिक पद् नहीं, यह अल्लाह के क़ब्ज़े में है और आजिज् तथा बेबस् (विनीत) हैं, उसके अधिकार में कृछ नहीं, सब कुछ सारी चीज़ों के मालिकुल मुल्क के अधिकार में है। वही सब पर अधिकार रखने वाला और सब को चलाने वाला है। किसी को किसी के अधिकार में नहीं देता। हर एक को उस के सामने हिसाब

व किताब के लिए अकेला ह़ाजिर होना है । वहाँ न कोई किसी का वकील होगा और न ह़िमायती (सहयोगी) । कुरआन मजीद में इस विषय की सैकड़ों आयतें हैं लेकिन हमने नमूने के रुप में कुछ आयतें लिख दी हैं जिस व्यक्ति ने इन्हें समझ लिया वह इन्शाअल्लाह शिर्क और तौह़ीद को अच्छी तरह समझ जाएगा ।

दूसरा अध्याय

शिर्क की किस्में

अब यह जानना जरुरी है कि अल्लाह तआला ने कौन कौन सी चीज़ें अपनी ज़ात (व्यक्तित्व) के लिए मख़्सूस फरमाई हैं ताकि उनमें किसी को शरीक (साझी) न किया जाए । ऐसी चीज़ें तो बहुत अधिक हैं , हम यहाँ कुछ चीजों को बयान करके क़ुरआन तथा ह़दीस से साबित करेंगे ताकि लोग इनकी मदद् से दूसरी बातें भी समझ लें ।

१– इल्म (ज्ञान) में शिर्क करना

पहली चीज़ यह है कि अल्लाह तआला अपने ज्ञान (इल्म) की हैसियत से हर जगह ह़ाज़िर व नाज़िर (उपस्थित) है । उस का इल्म (ज्ञान) हर चीज़ को घेरे में लिए हुये है । (अर्थात कोई भी चीज़ उस के इल्म से बाहर नहीं है) वह हर चीज़ के विषय में हर समय ख़बर रखता है , चाहे वह चीज़ दूर हो या क़रीब , ज़ाहिर (स्पष्ट) हो या पोशीदा (लुप्त) , ग़ायब् हो या ह़ाजिर , आसमानों में हो या ज़मीनों में , पहाड़ों की चोटियों पर हो या समुद्र की तह् में, यह केवल अल्लाह ही की शान है किसी और की यह शान नहीं । अब यदि कोई उठते बैठते अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे का नाम ले, या दूर व क़रीब से उसे पुकारे ताकि वह उसकी सङ्कट टाल दे , या दुश्मन (शत्रु) पर उसका नाम लेकर ह़म्ला (आक्रमण) करे या उसके नाम का ख़तम् पढ़े या उस के नाम का विर्द करे (अर्थात उसके नाम को जपे) या उसका तसव्वुर दिमाग़ में बैठाए और यह अक़ीदा रखे कि मैं जिस समय ज़बान से उसका नाम लेता हूँ या दिल में उसकी कल्पना करता हूँ या उसकी सूरत् का ख़याल करता हूँ या उसकी क़बर का ध्यान करता हूँ तो उसको ख़बर होजाती है । उससे मेरी कोई बात छुपी नहीं रह सकती और मेरे ऊपर जो

हालात गुज़रते हैं जैसे बीमारी, तन्दुरुस्ती , खुश्हाली, बद्हाली , मरना जीना , दुख सुख उसको इन सब की हर वक़्त ख़बर रहती है, जो बात मेरे मुंह से निकलती है वह उसे सुन लेता है और मेरे दिल की बातों , कामनाओं तथा विचारों से अवगत रहता है । इन तमाम बातों से शिर्क साबित हो जाता है । यह अल्लाह के ज्ञान में शिर्क हैं , यानी अल्लाह तआला के ज्ञान के समान किसी अन्य के लिए ज्ञान साबित करना । निःसन्देह ऐसा अक़ीदा रखने से आदमी मुश्रिक् हो जाता है , चाहे यह अकीदा किसी बड़े से बड़े इन्सान या मुक़र्रब् से मुक़र्रब् फरिश्ते के बारे में , चाहे उनका यह इल्म (ज्ञान) ज़ाती समझा जाए या अल्लाह का प्रदान किया हुआ हर तरह से यह शिर्किया अक़ीदा है ।

२– तसर्रुफ में शिर्क करना

सारे जगत में इच्छानुसार हेर फेर तथा परिवर्तन करना , अधिकार जमाना , आदेश जारी करना , अपनी इच्छा से मारना और जीवित रखना , खुशहाली और तंगी, स्वास्थ्य और बीमारी, विजय और पराजय, उन्नति और पतन , मुरादें (आशायें) पूरी करना , सङ्कट टाल देना , कष्ट निवारण करना और कठिन समय आने पर सहायता पहुँचाना यह सब कुछ अल्लाह ही की महिमा (शान) है अल्लाह के अतिरिक्त किसी की ऐसी महिमा (शान) नहीं , चाहे वह कितना बड़ा इन्सान या फरिश्ता क्यों न हो । यदि कोई अल्लाह के अतिरिक्त किसी के लिए इस प्रकार की शक्ति साबित करे और उस से अपनी मुरादें माँगे और इसी मक़सद से उसके नाम की मन्नत माने या कुरबानी करे और सङ्कट में उसी को पुकारे कि वह उसकी बलायें टाल दे तो ऐसा व्यक्ति मुश्रिक् है और इस को अल्लाह के अधिकार में शिर्क करना कहते हैं । यानी अल्लाह के समान शक्ति तथा अधिकार किसी अन्य में मान लेना शिर्क है । चाहे उनका यह

अधिकार (शक्ति) ज़ाती माना जाए या अल्लाह का दिया हुआ हर तरह से यह शिर्किया अक़ीदा है ।

३ – इबादत (उपासना) में शिर्क करना

अल्लाह तआला ने कुछे काम अपने लिए मख़्सूस कर दिएहैं जिनको इबादत (उपासना) कहते हैं , जैसे सजदा , रुकूअ , हाथ बाँध कर खड़े होना , अल्लाह के नाम पर दान करना , उसके नाम का रोज़ा (सौम) रखना और उसके पवित्र घर काबा की ज़ियारत (दर्शन) के लिए दूर दूर से यात्रा करके आना और ऐसा रुप धारण करके आना कि लोग पहचान जायें कि ये काबा की ज़ियारत के लिए जा रहे हैं । रास्ते में अल्लाह ही का नाम पुकारना , फुजूल बातों (प्रलाप) और शिकार से बचना, पूरी सावधनी से जाकर उसके घर का तवाफ (परिक्रमा) करना , काबा को क़िब्ला मानकर उसकी तरफ मुंह करके सजदा करना , उसकी तरफ कुरबानी के जानवर ले जाना , वहाँ मन्नतें मानना , काबा पर ग़िलाफ चढ़ाना , उसके पास खड़े होकर दुआयें माँगना , दीन और दुनिया की भलाइयाँ मांगना , हजरे अस्वद् को चूमना, उसके चारों तरफ रोशनी की व्यवस्था करना , उसमें ख़ादिम (सेवक) बनकर रहना जैसे झाड़ू देना , हाजियों को पानी पिलाना , वुजू और गुस्ल (स्नान) के लिए पानी की व्यवस्था करना , ज़म्ज़म् का पानी तबर्रुक् (पवित्र और बरकत वाला) समझ कर पीना , शरीर पर डालना, पेट भर कर पीना, आपस में बांटना, अपने रिश्तेदारों और अज़ीज़ों के लिए ले जाना , उसके आस पास के पेड़ों को न काटना, वहाँ शिकार न करना, घास न उखाड़ना, जानवर न चराना, यह सब काम अल्लाह तआला ने अपनी इबादत के लिए अपने बन्दों को बताये हैं । फिर यदि कोई व्यक्ति किसी नबी को या वली को या भूत-परेत को, या जिन्नात-परी को, या किसी सच्ची या झूठी क़ब्र को या किसी के थान या चिल्ले को या किसी के मकान व निशान को या किसी के

तबर्रुक् व ताबूत को सजदा करे या रुकूअ् करे या उसके लिए अथवा उसके नाम पर रोज़ा रखे या हाथ बाँधकर खड़ा होजाए या चढ़ावा चढ़ाये या उनके नाम का झण्डा लगाएया व ापसी के समय उलटे पाँव चले या क़बर (समाधि) को चूमे या क़बरों या दूसरे स्थानों (थानों , ख़ान्काहों , दरबारों) के दर्शन के लिए दूर दूर से सफर करके जाये या वहाँ चिराग़ जलाये और रोशनी का इन्तिज़ाम करे या ग़िलाफ चढ़ाये या क़बर पर चादर चढ़ाये या मूर्छल् झले या शामियाना ताने या उनकी चौखट का बोसा ले या वहाँ हाथ बाँध कर दुआयें माँगे या मुरादें माँगे या वहाँ मुजावर बनकर सेवा करे या उसके आस पास के जङ्गलों का अदब करे । इस तरह का कोई भी काम करे तो उसने खुल्लम् खुल्ला शिर्क किया , इसको (अल्लाह की) इबादत (उपासना) मे शिर्क करना कहते हैं । यानी अल्लाह के समान किसी का सम्मान करना , चाहे यह समझे कि ये लोग स्वयं ही इस सम्मान के योग्य हैं अथवा यह समझे कि इन का इस प्रकार का सम्मान करने से अल्लाह तआला प्रसन्न होता है तथा इन की सम्मान की बरकत से बलाएँ टल जाती हैं । हर प्रकार से यह शिर्क है ।

४– रोज़मर्रा (दैनिक) कामों में शिर्क

अल्लाह तआला नें अपने बन्दों को यह अदब सिखाया है कि वह दुनियावी कामों में अल्लाह को याद रखें और उसका आदर सम्मान करते रहें ताकि ईमान भी संवर जाये और कामों में बरकत (कल्याण) भी हो जैसे मुसीबत के समय अल्लाह की नज़र (मन्नत) मान लेना और सङ्कट में केवल उसी को पुकारना और काम शुरू करते समय बरकत के लिए उसी का नाम लेना और जब औलाद पैदा हो तो इस नेमत के शुक्रिया में उसके नाम पर जानवर ज़बह् करना तथा औलाद का नाम अब्दुल्लाह , अब्दुर्रहमान , इलाही बख़्श , अल्लाह दिया , अमतुल्लाह , और अल्लाह दी रखना । खेती

के पैदावार में से थोड़ा बहुत उस के नाम का निकालना , फलों में से कुछ फल उस के नाम का लिकालना , जानवरों में से कुछ जानवर अल्लाह के नाम घोषित करना और उसके नाम के जो जानवर बैतुल्लाह को ले जाये जायें उनका आदर करना अर्थात न उन पर लादना , न सवार होना । खाने पीने और पहनने ओढ़ने में अल्लाह के हुक्म पर चलना , यानी जिन चीज़ों के प्रयोग करने का आदेश है केवल उन्हीं चीज़ों को प्रयोग करना और जिन चीज़ों को प्रयोग करने से मना किया गया है उन को प्रयोग न करना । दुनिया में मंहगाई और सस्तापन, स्वास्थ्य और रोग , जीत और हार , इज़्ज़त और जिल्लत, तरक़्क़ी और गिरावट और दुःख और सुख जो कुछ भी आदमी को पेश आता है सब को अल्लाह के अधिकार में समझना । हर काम का इरादा करते समय इन्शाअल्लाह कहना जैसे यूँ कहना कि इन्शाअल्लाह हम फलाँ काम करेंगे । अल्लाह तआला के नाम को ऐसे आदर के साथ लेना कि जिस से उसकी ताज़ीम प्रकट (ज़ाहिर) हो और अपनी गुलामी का इज़हार होता हो जैसे यूँ कहना हमारा रब् , हमारा मालिक , हमारा ख़ालिक़् , हमारा मअ्बूद आदि।

यदि किसी वक्त क़सम् खाने की ज़रुरत पड़ जाये तो उसी के नाम की क़सम खाना । ये तमाम बातें और इस जैसी अन्य बातें अल्लाह तआला नें अपनी ताज़ीम (आदर सम्मान) के लिए मुक़र्रर की हैं । फिर जो कोई इस प्रकार का आदर-सम्मान ग़ैरूल्लाह के लिए करे करे तो इस से शिर्क साबित हो जाता है । जैसे कि काम रुका हुआ हो या बिगड़् रहा हो उसको चालू करने या सँवारने के लिए कोई व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की नज़र माने । औलाद का नाम अब्दुन्नबी , इमाम बख़्श , पीर बख़्श रखे । खेत और बाग़ की पैदावार में उनका हिस्सा निकाले , खेती बाड़ी , बाग़ आदि से जो कुछ फल् या ग़ल्ला प्राप्त हो तो उस में से पहले उनके नाम का हिस्सा अलग कर दिया जाए फिर अपने काम में लाया

जाए। पशुओं (जानवरों) में उन के नाम के जानवर ख़ास करे और फिर उन जानवरों का आदर सम्मान करे , पानी या चारे से उन्हें न हटाये , लकड़ी से पत्थर से उन्हें न मारे । खाने , पीने पहनने में रस्म व रिवाज (रीतियों) का ध्यान रखा जाए जैसे यह कहे कि फलाँ फलाँ लोग फलाँ फलाँ खाना न खाएँ , फलाँ फलाँ कपड़ा न पहनें , बीबी[1] की सह्नक् (बड़ा पियाला) मर्द न खाएँ , लौंडी न खाए और जिस औरत ने दूसरा विवाह किया हो वह न खाए , शाह अब्दुल हक् का तोशा हुक़्क़ा पीने वाला न खाये । दुनिया की भलाई बुराई को उन्हीं से जोड़ा जाए जैसे यह कहे कि फलाँ आदमी उनकी लानत् की पकड़ में है, पागल होगया है ।, फलाँ मुहताज है उन्हीं का धुतकारा हुआ तो है, और देखो फलाने को उन्हों ने प्रदान किया तो वह धनवान बन गया और प्रतिष्ठा तथा माल व दौलत उसके पाँव चूम रहे हैं । फलाँ तारे की वजह से अकाल आया । फलाँ काम इस लिए नहीं पूरा हुआ क्योंकि उसे फलाने दिन या फलाने समय में प्रारम्भ किया गया था । या यह कहे कि अल्लाह और रसूल चाहेगा तो मैं आऊँगा, या पीर चाहेगा तो यह बात बन जायेगी, या बात चीत में दाता , बेपरवा ,(ग़रीब नवाज़, ग़ौस , मुश्किल कुशा , दस्तगीर) मालिकुल् मुल्क , शाहन्शाह जैसे शब्द इस्तेमाल किए जायें।

---

[1] **बीबी** से मुराद हजरत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हैं । उन के नाम की नियाज़ "बीबी" की सह्नक् कहलाती थी "सह्नक्" अर्थात मिट्टी का बड़ा पियाला । कहा जाता है कि यह नियाज़ जहाँगीर बादशाह के जमाने से शुरु हुई । बादशाह ने नूरजहाँ से विवाह किया और वह बादशाह की चहेती बन गई और उस का आदर सम्मान बहुत अधिक होने लगा तो बादशाह की दूसरी पत्नियों ने आपस में मिलकर यह रीति और रस्म निकाली तथा शर्त यह रखी कि इस नियाज़ में वही औरतें शरीक हो सकती हैं जिन्हों ने दूसरा निकाह न किया हो , इस चीज़ को वे पवित्रता और पाकदामनी का कमाल जानती थीं । इस रस्म का उद्देश्य केवल नूरजहाँ की तौहीन और उसको रुसवा करना था । धीरे धीरे यह रस्म पूरे मुल्क में फैल गई और शाह इस्माईल (रहिमहुल्लाह) के ज़माने में घर घर इस का रिवाज हो गया था और इस में कई शर्तें बढ़ा दी गई थीं ।

क़सम खाने की जरुरत पड़ जाये तो नबी की या वली की या इमाम व पीर की या उन की क़बरों की या अपनी जान की क़सम खाये । इन तमाम बातों से शिर्क पैदा होता है, और इसे स्वभाव (आदत तथा दैनिक काम) में शिर्क करना कहते हैं । यानी सामान्य काम-काज में जैसा आदर एवं सम्मान अल्लाह के लिए होना चाहिए वैसे ही दूसरों का आदर व सम्मान करना (यह चीज़ शिर्क है) । शिर्क की इन चारों क़िसमों का कुरआन और ह़दीस में स्पष्ट रुप से बयान आया है इस लिए आने वाले अध्यायों में हम ने इन को तफसील के साथ बयान कर दिए हैं ।

तीसरा अध्याय

शिर्क की बुराई और तौह़ीद की खूबियाँ

शिर्क माफ नहीं हो सकता

अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿ اِنَّ اللّٰهَ لاَ يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِه وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلاً بَعِيْداً ﴾

अर्थ : ((निःसन्देह अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किए जाने को क्षमा नहीं करेगा और इस के अतिरिक्त (गुनाह) जिसके लिए चाहेगा क्षमा कर देगा और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया तो वह सीधे मार्ग से बहुत दूर भटक कर चला गया।)) (सूरः निसाः ११६)

यानी अल्लाह की राह से भटकना यह भी है कि आदमी ह़लाल (वैध) और ह़राम (वर्जित) में अन्तर न करे , चोरी करे, बीवी बच्चों का हक़् न अदा करे और माँ बाप की नाफरमरनी पर तुला रहे। लेकिन जो शिर्क की दल्दल् में फंस गया वह रास्ते से अधिक भटक गया, क्योंकि वह ऐसे पाप में ग्रस्त हो गया जिसको अल्लाह तआला बिना तौबा कभी नहीं क्षमा करेगा और दूसरे गुनाहों को शायद अल्लाह तआला बिना तौबा माफ भी करदे। इस आयत से यह ज्ञात हुआ कि शिर्क को क्षमा नहीं किया जायेगा उसकी सज़ा अवश्य मिल कर रहेगी। अगर उसका शिर्क अन्तिम दर्जे का है जिस से आदमी काफिर हो जाता है तो उस की सज़ा हमेशा के लिए नरक (जहन्नम्) है, न उस से निकाला जाएगा और न उस में कभी आराम और सुख-चैन पाएगा और जो शिर्क कम दर्जे के हैं उनकी जो सज़ा अल्लाह के यहाँ निश्चित है वह ज़रूर मिलेगी। और शिर्क के अतिरिक्त अन्य गुनाहों की अल्लाह तआला के यहाँ जो सजायें निश्चित हैं वे अल्लाह की इच्छा पर निर्भर हैं चाहे सज़ा दे और चाहे क्षमा करदे।

एक उदाहरण

यह भी मालूम हुआ कि शिर्क से बड़ा कोई गुनाह नहीं । इस को इस मिसाल से समझो। मिसाल के तौर पर बादशाह के यहाँ प्रजा के लिए हर प्रकार के जुर्म के दण्ड निश्चित हैं जैसे चोरी, डकैती , पहरा देते देते सो जाना , दरबार में देर से पहुँचना , लड़ाई के मैदान से भाग जाना और सरकार के पैसे पहुँचाने में कोताही करना आदि । इन सब जुर्मों की सजायें निश्चित हैं परन्तु दण्ड देना बादशाह की इच्छा पर निर्भर है चाहे तो दण्ड दे और चाहे तो क्षमा कर दे । लेकिन कुछ अपराध ऐसे होते हैं जिन से विद्रोह प्रकट होता है जैसे किसी अमीर को या वज़ीर को या चौधरी को या ज़मीनदार को या रईस को या भंगी को या चमार को बादशाह की मौजूदगी में बादशाह बना दिया जाए, तो इस प्रकार का काम बग़ावत है। या इन में से किसी के लिए ताज़ (मुकुट) या तख़्ते शाही (सिंहासन) बनाया जाये या उसे ज़िल्ले सुब्हानी कहा जाये या इन में से किसी का सम्मान और आदर बादशाह की तरह की जाये या इन में से किसी के लिए एक जश्न (उत्सव) का दिन ठहराया जाये और बादशाह की तरह नज़राना या उपहार (सौगात) पेश किया जाए । तो यह अपराध सारे अपराधों से बड़ा है और इस अपराध की सज़ा अवश्य मिलनी चाहिये । जो बादशाह इस प्रकार के अपराधों की सज़ाओं से ग़फलत दिखाता है उसका राज्य कमज़ोर होता है। बुद्धिमान लोग ऐसे बादशाह को अयोग्य (नाकारा) कहते हैं । लोगो ! उस मालिकुल् मुल्क ग़ैरत्मन्द बादशाह (अल्लाह) से डर जाओ जो बहुत ही शक्तिशाली है । उसकी शक्ति की कोई सीमा नहीं और वह प्रथम श्रेणी का ग़ैरत् वाला है । भला वह मुशरिकों को क्यों दण्ड न देगा और बिना दण्ड दिए क्योंकर छोड़ देगा ? अल्लाह तआला तमाम मुसलमानों पर दया करे और उन्हें शिर्क जैसी भयङ्कर आफत् से बचा ले । आमीन

शिर्क सब से बड़ा अत्याचार है

अल्लाह तआला फरमाते हैं

﴿ وَإِذْ قَالَ لُقْمَـٰنُ لِٱبْنِهِۦ وَهُوَ يَعِظُهُۥ يَـٰبُنَىَّ لَا تُشْرِكْ بِٱللَّهِ ۖ إِنَّ ٱلشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ﴿١٣﴾ ﴾ (لقمان 013)

अर्थ : ((जब लुक़मान (अलैहिस्सलाम) ने नसीह़त करते समय अपने बेटे से कहा बेटा अल्लाह के साथ शिर्क न करना, निःसन्देह शिर्क बहुत बड़ा अत्याचार है ।))

अर्थात अल्लाह तआला ने लुक़्मान अलैहिस्सलाम को बुद्धि (समझ-बूझ) प्रदान की थी । उन्हों ने अपनी बुद्धि से मालूम किया कि किसी का हक़् किसी अन्य को दे देना बहुत बड़ा अन्याय और अत्याचार है, फिर जिस ने अल्लाह का हक़् अल्लाह की मख़्लूक़ में से किसी को दे दिया तो उस ने बड़े से बड़े का हक़् लेकर हीन से हीन प्राणी को दे दिया क्योंकि अल्लाह सब से बड़ा है और अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मखलूक़ ग़ुलाम की हैसियत रखती है, जैसे कोई बादशाह का ताज (मुकुट) एक चमार के सर पर रखदे भला इस से बढ़कर अन्याय क्या हो सकता है ? यक़ीन मानो कि हर व्यक्ति चाहे वह बड़े से बड़ा इन्सान हो या सब से क़रीबी़ फरिश्ता उसकी हैसियत् अल्लाह की शान (महिमा) के आगे एक चमार से भी हीन है । मालूम हुआ कि जिस तरह शरीअत् ने शिर्क को महा पाप बताया है इसी प्रकार बुद्धि भी शिर्क को महा पाप मानती है । सच्ची बात यही है कि शिर्क सब दोषों से बड़ा दोष है क्योंकि इन्सान में सब से बड़ा दोष यही है कि वह अपने बड़ों की बेअद ्बी करे । फिर अल्लाह से बढ़ कर बड़ा कौन हो सकता है और शिर्क उसकी की शान में (बहुत बड़ी) बेअ्दबी है ।

तौहीद ही मुक्ति का रास्ता है

अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿ وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيۡهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعۡبُدُونِ ٢٥ ﴾ (الأنبياء 025)

अर्थ : ((आप से पहले हम ने जो रसूल भी भेजा हम ने उसको यही वह्य की कि मेरे अतिरिक्त कोई इबादत का योग्य नहीं अत: मेरी ही इबादत करो।))

यानी सभी रसूल अल्लाह के पास से यही आदेश लेकर आये कि केवल अल्लाह ही को माना जाए और उसके सिवा किसी को न माना जाए। मालूम हुआ कि तौहीद का आदेश और शिर्क से मनाही सभी शरीअतों का एक मुत्तफक़ा (सर्वसम्मत) मसूअला है। इस लिए केवल यही मुक्ति (नजात) का मार्ग है बाक़ी सभी राहें ग़लत् हैं।

अल्लाह तआला शिर्क से अप्रसन्न तथा बेपरवाह है

عَنْ أَبِی هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی ((اَنَا أَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ مَنْ عَمِلَ عَمَلاً أَشْرَكَ فِيْهِ مَعِیَ غَيْرِیْ تَرَكْتُهُ وَشِرْكَهُ واَنَا مِنْهُ بَرِیٌّ)) (مسلم)

अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: अल्लाह तआला ने फरमाया: ((मैं शरीकों में सब से अधिक शिर्क से बेपरवाह हूँ जिस ने कोई ऐसा काम किया जिस में उस ने मेरे साथ किसी अन्य को शरीक किया तो मैं उसको और उसके

शरीक को छोड़ देता हूँ और उस से बेज़ार (अलग-थलग) हो जाता हूँ))। [1]

यानी जिस प्रकार लोग अपनी सामान्य और साझे की चीजें आपस में बाँट लेते हैं मैं उस तरह नहीं करता क्योंकि मैं बेपरवाह हूँ जिस ने मेरे लिए कोई काम किया और उस में किसी अन्य को भी शरीक कर लिया तो मैं अपना हिस्सा भी नहीं लेता बल्कि पूरा काम दूसरे ही के लिए छोड़ देता हूँ और उस से अलग हो जाता हूँ।

इस ह़दीस से यह मालूम हुआ कि जो आदमी अल्लाह के लिए कोई काम करे और वही काम किसी अन्य के लिए भी करे तो उस ने शिर्क किया और यह भी मालूम हुआ कि शिर्क करने वालों की उपासना जो अल्लाह के लिए की जाए वह भी अल्लाह के यहाँ मक़्बूल (स्वीकृत) नहीं है बल्कि अल्लाह तआला उस से बेताल्लुक़ है।

अज़ल (अनादिकाल) में तौह़ीद का इक़्रार

अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿ وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنۢ بَنِىٓ ءَادَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۖ قَالُوا۟ بَلَىٰ ۛ شَهِدْنَآ ۛ أَن تَقُولُوا۟ يَوْمَ ٱلْقِيَـٰمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَـٰذَا غَـٰفِلِينَ ﴿١٧٢﴾ أَوْ تَقُولُوٓا۟ إِنَّمَآ

[1] कुछ हदीसों में इस तरह के भी शब्द हैं ((मैं उस से से अप्रसन्न हूँ , जिस के लिए उस ने यह काम किया है वही उस को उसका बदला दे ।))

أَشْرَكَ ءَابَآؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنۢ بَعْدِهِمْ ۖ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا

فَعَلَ ٱلْمُبْطِلُونَ ﴿١٧٣﴾ (الأعراف 172-173)

अर्थ : “ और (उस समय को याद करो) जब तेरे रब ने आदम की औलाद की पीठ से उनकी औलाद को निकाला और उन से यह वचन लिया (यानी उन से पूछा) क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ ? उन्हों ने कहा क्यों नहीं हम गवाह हैं (कि तू हमारा रब है) यह वचन हमने इस लिए लिया ताकि क़यामत के दिन तुम कहीं यह न कहने लगो कि हम इस बात से ग़ाफिल (अनभिज्ञ) थे या यह न कहने लगो कि हम से पहले हमारे बाप दादा ने शिर्क किया था और हम तो उनकी औलाद थे (जो) उन के बाद (पैदा हुए) तो क्या जो काम बातिल परस्त करते रहे उस के बदले तू हमें नष्ट करता है।”

أَخْرَجَ أَحْمَدُ عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ فِيْ تَفْسِيْرِ قَوْلِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ﴿ وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِىْ آدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ ﴾ قَالَ جَمَعَهُمْ فَجَعَلَهُمْ أَزْوَاجاً(اَرْوَاحاً) ثُمَّ صَوَّرَهُمْ فَاسْتَنْطَقَهُمْ فَتَكَلَّمُوْا ثُمَّ أَخَذَ عَلَيْهِمُ الْعَهْدَ وَالْمِيْثَاقَ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى اَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوْا بَلَى قَالَ فَإِنِّىْ أُشْهِدُ عَلَيْكُم السَّمَاوَاتِ السَّبْعَ وَالاَرْضِيْنَ السَّبْعَ وَأُشْهِدُ عَلَيْكُمْ أَبَاكُمْ آدَمَ أَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَمْ نَعْلَمْ بِهٰذَا اِعْلَمُوْا أَنَّهُ لا إِلٰهَ غَيْرِىْ وَلاَ رَبَّ غَيْرِىْ وَلاَ تُشْرِكُوْا بِىْ شَيْئاً إِنِّىْ سَاُرْسِلُ إِلَيْكُمْ رُسُلِىْ يُذَكِّرُوْنَ عَهْدِىْ

وَمِيْثَاقِیْ وَأُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ كُتُبِیْ قَالُوْا شَهِدْنَا بِاَنَّكَ رَبُّنَا وَإِلٰهُنَا لاَرَبَّ لَنَا غَيْرُكَ وَلاَ إِ لٰهَ لَنَا غَيْرُكَ.

उबै बिन कअब (ﷺ) ने इस आयत {وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِیْ آدَمَ} (जब आप के रब ने आदम की औलाद से वचन लिया था) की तफ्सीर में फरमाया कि अल्लाह तआला ने आदम की औलाद को इकट्ठा किया फिर उन्हें जोड़ा बनाया, फिर उनके रुप बनाए , फिर उनको बोलने की शक्ति प्रदान की तो वह बोलने लगे फिर उन से प्रतिज्ञा एवं वचन लिया और उन पर स्वयं उन्हीं को गवाह बनाकर फरमाया ((क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ ? उन्हों ने उत्तर दिया निःसन्देह आप हमारे रब हैं । फिर अल्लाह तआला ने फरमायाः मैं

---

[1] فَأَقَرُّوْا بِذٰلِكَ وَرَفَعَ عَلَيْهِمْ آدَمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ فَرَأَى الْغَنِیَّ وَالْفَقِيْرَ وَحَسَنَ الصُّوْرَةِ وَدُوْنَ ذٰلِكَ فَقَالَ رَبِّ لَوْلاَ سَوَّيْتَ بَيْنَ عِبَادِكَ ؟ قَالَ ((إِنِّیْ أَحْبَبْتُ أَنْ أُشْكَرَ)) وَرَأَى الْأَنْبِيَآءَ فِيْهِمْ مِثْلَ سُرُجٍ عَلَيْهِمُ النُّوْرُ وَخُصُّوْا بِمِيْثَاقٍ آخَرَ فِی الرِّسَا لَةِ وَالنُّبُوَّةِ وَهُوَ قَوْلُهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى { وَ إِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّيْنَ مِيْثَاقَهُمْ } إِلَى قَوْلِهِ تَعَالَى {عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ } { وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّيْنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِن نُّوْحٍ وَ إِبْرَاهِيْمَ وَمُوْسَى وَ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ }

अतः उन्हों ने इस बात (तौहीद) का इक़रार किया और उन पर अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को बुलन्द किया तो वह अपनी सम्पूर्ण औलाद को अपनी आँखों से देख रहे थे । उन्हों ने देखा कि उन में धनवान भी हैं और निर्धन भी , सुन्दर भी हैं और कुरुप भी तो सवाल किया ((ऐ हमारे रब तूने इन सब को एक समान क्यों नहीं बनाया ?)) अल्लाह तआला ने फरमाया ((मैं पसन्द करता हूँ कि मेरा शुक्र किया जाए)) हजरत आदम अलैहिस्सलाम ने देखा कि उन लोगों में अम्बियाए किराम भी हैं वह चिरागों की तरह प्रकाशमान हैं और उन के चेहरों पर नूर है । अम्बियाए किराम से अल्लाह तआला ने रिसालत व नुबूव्वत् (ईश्दूतत्तव) के विषय में भी वचन लिया इस से मुराद वह प्रतिज्ञा है जिस का बयान कुरआन में यूँ आया है । ((और वह समय भी था जब हमने सभी पैगम्बरों से वचन लिया आप से (अर्थात हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से) और नूह से और मूसा से और मरयम के बेटे ईसा से))।

तुम्हारे ऊपर सातों आसमानों और सातों ज़मीनों को गवाह बनाता हूँ और तुम्हारे बाप आदम को भी, ताकि तुम क़यामत के दिन कहीं यह न कहने लगो कि हम इस बात से बेख़बर थे , यक़ीन मानो कि मेरे सिवा कोई दूसरा मअ़बूद (पूजनीय) नहीं और न मेरे सिवा कोई रब है , मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न करना , मैं तुम्हारे पास अपने रसूल भेजता रहूँगा जो तुम्हें मेरा यह वचन और मेरी प्रतिज्ञा याद दिलाते रहेंगे और तुम पर अपनी किताबें भी उतारुँगा । सब ने उत्तर दिया कि हम तुझे वचन दे चुके हैं कि केवल आप ही हमारे रब और मअ्बूद (पूजनीय) हैं । आप के सिवा न कोई हमारा रब है और न आप के सिवा कोई हमारा मअ्बूद है ।
(मुस्नद अह्मद ह़दीस न०=२१५५२ पेज न०=१५६१)

शिर्क प्रमाण नहीं बन सकता

हजरत उबै बिन कअब ने ऊपर लिखी हुई आयत की तफसीर (व्याख्या) में फरमाया कि अल्लाह पाक ने आदम की तमाम औलाद को एक जगह इकट्ठा किया फिर उनके जोड़े लगाए, जैसे पैगम्बरों को , औलिया को , शहीदों को , नेक लोगों को फरमाँबरदारों को , नाफरमानों को और सब को अलग् अलग् किया । इसी तरह यहूदियों को , ईसाइयों को , मुशरिकों को , काफिरों को और हर एक धर्म वाले को अलग् अलग् किया फिर जिसको जो सूरत (रुप) दुनिया में आने के बाद देनी थी उसी सूरत में उसे वहाँ प्रकट किया। किसी को खूबसूरत किसी को बद्सूरत , किसी को आँखों वाला किसी को अन्धा , किसी को बोलने वाला, किसी को गूँगा और किसी को लङ्ङड़ा । फिर उन सब को उस समय बोलने की क्षमता प्रदान की और उन सब से प्रश्न किया ((क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सब ने यह वचन दिया कि तू हमारा रब है, फिर उन से यह प्रतिज्ञा ली कि मेरे सिवा अन्य को हाकिम और मालिक न समझना और मेरे सिवा किसी को अपना मअ्बूद न मानना । उन सब ने

इसका (अल्लाह तआला की वह्‌दानियत का) वचन दिया । अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम , सातों आसमानों और सातों जमीनों को गवाह बनाया और फरमाया कि तुम्हारे इस वचन और प्रतिज्ञा को याद दिलाने के लिए हमारे पैगम्बर आयेंगे और अपने साथ आसमानी किताबें भी लायेंगे । इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अलग अलग अनादि काल (आलमे अरवाह) में तौहीद का इक़रार और शिर्क से इन्‌कार कर आया है । इस लिए शिर्क की बातों में किसी को प्रमाण नहीं बनाना चाहिए , न पीर और फक़ीर को , न शैख को , न बाप दादा को , न बादशाह को , न मोलवी को और न बुजुर्ग को ।

भूल का बहाना स्वीकार नहीं होगा

अगर कोई व्यक्ति यह सोचे कि संसार में आकर हमें वह वचन और प्रतिज्ञा याद नहीं रहा अब अगर हम शिर्क करें तो हमारी पकड़ न होगी क्योंकि भूल में पकड़ नहीं, तो इसका उत्तर यह है कि मनुष्य को बहुत सी बातें याद नहीं रहतीं परन्तु मोतबर (विश्वास पात्र) लोगों के याद दिलाने से विश्वास कर लेता है । जैसे किसी को अपना जन्म दिन याद नहीं फिर लोगों से सुनकर विश्वास से कहता है कि मेरी जन्म तारीख़ फलाँ सन, फलाँ दिन , फलाँ समय है। लोगों से सुनकर ही माँ बाप को पहचानता है किसी और को माँ नहीं समझता। यदि कोई अपनी माँ का हक़् अदा न करे किसी अन्य को अपनी माँ बताये तो दुनिया उस पर थुकेगी, और यदि वह यह उत्तर दे कि भले लोगो मुझे तो अपना पैदा होना याद नहीं कि मैं इसको अपनी माँ समझूँ, तुम लोग अकारण मुझे बुरा समझ रहे हो । तो लोग उसे अन्तिम दर्जे का बेवकूफ और बड़ा ही बेअदब समझेंगे । मालूम हुआ कि जब आम लोगों के कहने से इन्‌सान को बहुत सी बातों का यक़ीन हो जाता है तो फिर पैगम्बरों की तो शान ही बड़ी है उनके बताने से किस तरह यक़ीन नहीं आ सकता ?

रसूलों और आसमानी किताबों की मूल शिक्षा

मालूम हुआ कि तौहीद को अपनाने और शिर्क से बचने के लिए अनादिकाल (आलमे अरवाह) में सब को अलग अलग सचेत कर दिया गया है । सारे पैगम्बर उसी वचन को याद दिलाने और उसी की नवीनीकरण के लिए भेजे गये थे । एक लाख चौबीस हजार पैगम्बरों का शुभ सन्देश तथा उपदेश और आसमानी किताबों की शिक्षा इसी एक बिन्दु पर केन्द्रित है कि ख़बरदार ! तौहीद में कोई ख़लल् (गड़बड़ी) न आने दो और शिर्क के पास भी न फटको । अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को अपना हाकिम , शासक और अधिकारी न समझो, न ग़ैरूल्लाह को मालिक मानो कि उस से अपनी मुरादें मांगो और उसके पास मुरादें लेकर आओ।

नीचे लिखी हुई हदीस को पढ़ने के बाद तो किसी हालत में भी शिर्क की गुन्जाईश बाक़ी नहीं रहती:

((عَنْ مُعَاذِبْنِ جَبَلٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ لِیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ

لاَ تُشْرِكْ بِاللّٰهِ شَيْئاً وَإِنْ قُتِلْتَ وَ حُرِّقْتَ)) (أحمد)

हज़रत मुआज बिन जबल (रज़ि) से रिवायत है कि मुझ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ((अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न कर चाहे तुझे मार डाला जाए या जला दिया जाए । (मुसनद अहमद)

यानी अल्लाह के सिवा किसी अन्य को अपना मअ्बूद (पूज्य) न बना और इस बात की परवाह न कर कि कोई जिन्न या शैतान तुझे सताएगा । जिस तरह मुसलमानों को ज़ाहिरी (प्रत्यक्ष) मुसीबतों तथा बलाओं पर सब्र करना चाहिये इसी तरह बातिनी (गुप्त) तक्लीफों (जिन्न , भूत आदि के कष्ट पहुँचाने) पर भी सब्र करना चाहिए । उन से डर कर और भयभीत होकर अपने दीन तथा ईमान को नहीं बिगाड़ना चाहिए । बल्कि यह अक़ीदा और विश्वास

रखना चाहिए कि वास्तव में हर चीज़ चाहे तक्लीफ हो या आराम अल्लाह ही के अधिकार में है । अल्लाह तआला कभी कभी ईमान वालों की आज़माइश् करता है । मोमिन को उसके ईमान अनुसार परीक्षा में डाला जाता है । कभी बुरों के हाथों से नेकों को तक्लीफें पहुँचाई जाती हैं ताकि पक्के सच्चे मोमिनों और मुनाफिकों (द्वय वादियों) में अन्तर हो जाए । अतः जिस तरह ज़ाहिर में कभी नेक लोगों को बुरे लोगों से और मुसलमानों को काफिरों से अल्लाह के इरादे और इच्छा से तक्लीफें पहुँच जाती हैं और वह सब्र ही से काम लेते हैं , तक्लीफों से घबराकर ईमान नहीं बिगाड़ते । उसी प्रकार कभी कभी नेक लोगों को जिन्नों और शैतानों से अल्लाह की इच्छा और इरादे से तक्लीफ पहुँच जाती है तो इस पर भी सब्र से काम लेना चाहिए और तक्लीफ के डर से उन्हें हरगिज़ (कदापि) नहीं मानना चाहिए ।

मालूम हुआ कि यदि कोई व्यक्ति शिर्क से नफ़रत (घृणा) करते हुए दूसरों को मानना छोड़ दे और उनकी नज़्र व नियाज़ की बुराई करे और ग़लत रीतियों (रस्मों) को मिटाये फिर इस राह में उसके धन् माल या जान को कुछ हानि पहुँच जाए या कोई शैतान उसे किसी पीर और शहीद के नाम से सताने लगे तो वह यह समझ ले कि अल्लाह पाक मेरे ईमान की परीक्षा ले रहा है । इस लिए उसे हंसी खुशी सह लेना चाहिए और अपने ईमान पर (मज्बूती के साथ) जमा रहना चाहिए । याद रखो जिस तरह अल्लाह पाक ज़ालिमों को ढील देकर फिर उन्हें पकड़ता है और मज़्लूमों (जिन पर अत्याचार किया गया हो) को उन के हाथ से छुटकारा दिलाता है उसी प्रकार ज़ालिम जिन्नों को भी समय आने पर पकड़ेगा और तौहीद परस्तों को उन के ज़ुल्म से बचायेगा ।

عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ أَىُّ الذَّنْبِ أَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ؟ قَالَ ((اَنْ تَدْعُوَ لِلّٰهِ نِداً وَهُوَ خَلَقَكَ)) (متفق عليه

अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने प्रश्न किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ सब से बड़ा गुनाह कौन सा है ? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि: ((तू किसी को अल्लाह के समान समझकर पुकारे हालाँकि अल्लाह ही ने तुझे पैदा किया है ।)) (बुख़ारी तथा मुस्लिम)

यानी जिस प्रकार अल्लाह को (उसके ज्ञान और शक्ति की हैसियत से) हाज़िर व नाज़िर समझा जाता है और हर प्रकार का तसर्रुफ् (प्रभुत्व और अधिकार) उसी के हाथ में बताया जाता है, इसी कारण हर सङ्कट में उसे पुकारा जाता है । उसी प्रकार अल्लाह के सिवा किसी अन्य के अन्दर यही ईश्वरीय गुण (यानी ज्ञान, शक्ति, अधिकार) मान कर पुकारना सब से बड़ा गुनाह है । इस लिए कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी में भी आवश्यकता पूरी करने और हर जगह हाज़िर व नाजिर रहने की शक्ति नहीं है । दूसरे यह कि जब हमारा पैदा करने वाला अल्लाह है तो हमें अपने तमाम सङ्कट वाले समय में उसी को पुकारना चाहिए किसी अन्य से हमारा क्या वास्ता ? जैसे कोई किसी बादशाह का गुलाम हो गया तो वह अपनी हर ज़रुरत अपने बादशाह ही के पास ले जायेगा उसे दूसरे बादशाहों से क्या वास्ता ? किसी भंगी, चमार का तो ज़िक्र ही क्या है, और यहाँ तो कोई दूसरा मौजूद ही नहीं जो अल्लाह के मुक़ाबिले का हो फिर किसी अन्य के पास ज़रूरत को ले जाना मूर्खता नहीं तो और क्या है ।

तौहीद और मग़फिरत (क्षमा)

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ قَالَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ ((يَا ابْنَ آدَمَ إِنَّكَ لَوْ لَقِيْتَنِيْ بِقُرَابِ الْأَرْضِ خَطَايَا ثُمَّ لَقِيْتَنِيْ لاَ تُشْرِكُ بِيْ شَيْئاً لَأَتَيْتُكَ بِقُرَابِهَا مَغْفِرَةً)) (رواه الترمذى)

अर्थ : हजरत अनस् (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला का फरमान है ((ऐ आदम के पुत्र यदि तू दुनिया भर के गुनाह साथ लेकर मुझ से मिले किन्तु मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराया हो तो मैं दुनिया भर की बख़्शिश् (क्षमा) के साथ तुझ से मिलूँगा।)) (त्रिमिज़ी , अह्म्द दारमी)

यानी दुनिया में बड़े बड़े गुनहगार लोग गुज़रे हैं जिन में फिरऔन और हामान आदि थे। और शैतान भी इस दुनिया में है, इन तमाम गुनहगारों से दुनिया में जितने भी गुनाह हुए और क़ियामत तक होंगे अगर मान लिया जाए कि वह सारे गुनाह एक आदमी कर गुज़रे, लेकिन वह शिर्क से पाक हो तो जितने भी उसके गुनाह हैं उतना ही अल्लाह की रहमत औस क्षमा (माफी) उस पर उतरे गी। मालूम हुआ कि तौह़ीद की बरकत से सारे गुनाह क्षमा कर दिए जाते हैं।[1] जिस प्रकार शिर्क के कारण सारी नेकियाँ नष्ट हो जाती हैं।

वास्तविक बात भी यही है कि जब मनुष्य शिर्क से बिल्कुल् पवित्र और स्वच्छ होगा और उसका यह अक़ीदा होगा कि अल्लाह के सिवा कोई मालिक नहीं , उसकी पकड़ से भाग कर नहीं बच

---

[1] हदीस का उद्देश्य शिर्क का भयङ्कर बुराई स्पष्ट करना है। इस से यह नहीं समझना चाहिए कि शिर्क से बचने के पश्चात गुनाह करने से कोई हरज नहीं। गुनाह तो गुनाह ही है और इसका क्षमा होना अल्लाह की इच्छा , क्षमायाचना , प्रायश्चित्त पर निर्भर है। यहाँ शिर्क जैसे महापाप और अन्य पापों के बीच अन्तर करना मक़्सूद है। यदि कोई आदमी शिर्क की हालत में मर गया और सच्चे दिल से तौबा नहीं किया तो ऐसा आदमी सदैव के लिए नरक में जाएगा। नरक से कभी नहीं निकाला जाएगा क्योंकि अल्लाह तआला ने स्वर्ग (जन्नत) को मुश्रिक् के लिए हराम कर दिया है। इस के विरुद्ध वह आदमी कि जिसने शिर्क नहीं किया या शिर्क को छोड़कर सच्चे दिल् से तौबा कर लिया और तौह़ीद को दृढ पूर्वक थाम लिया परन्तु इस के अतिरिक्त कुछ अन्य गुनाह भी किए हैं तो अब ये अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है वह चाहेगा तो क्षमा करके जन्नत् में दाखिल करेगा या कुछ सजा देकर अन्त में सदैव के लिए जन्नत में दाखिल करदेगा।

सकता , अल्लाह तआला के नाफरमानों (पापियों) को कोई पनाह (शरण) देने वाला नहीं , उसके आगे सब बेबस (असमर्थ) हैं , उसके आदेश को कोई टाल नहीं सकता , उसके सामने किसी की सहायता काम नहीं आ सकती और कोई किसी की सिफारिश् (अनुशंसा) उस की अनुमति के बिना न कर सकेगा । इन धारणाओं (अक़ाईद) के बाद उस से जितने भी गुनाह होंगे मानव होने के कारण होंगे या भूल चूक कर, फिर इन गुनाहों के बोझ में वह दबा जा रहा होगा और गुनाहों से सख्त बेज़ार होगा , लज्जा के कारण सिर न उठा सकेगा, निःसन्देह ऐसे व्यक्ति पर अल्लाह की दया और कृपा उतरती है । जैसे जैसे यह गुनाह बढ़ते जायेंगे वैसे वैसे उसको अधिक पच्छतावा होगा, और जूँ जूँ यह कैफियत बढ़े गी अल्लाह की रहमत और दया बढ़ती जाये गी।

यह बात याद रखो कि जो तौहीद में पक्का है उसका पाप भी वह काम करता है जो दूसरों की इबादत नहीं करती। एक पापी मोवह्हि़द्, शिर्क करने वाले परहेज़गार से हजार दर्जा बेहतर है, जैसे एक दोषी प्रजा , खुशामदी विद्रोही से हजार दर्जा बेहतर है क्योंकि पहला अपने दोष पर लज्जित है और दूसरा अभिमानी (घमंडी) है ।

चौथा अध्याय

अल्लाह तआला के ज्ञान में शिर्क करने का खण्डन

अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ ۞ وَعِندَهُۥ مَفَاتِحُ ٱلۡغَيۡبِ لَا يَعۡلَمُهَآ إِلَّا هُوَۚ وَيَعۡلَمُ مَا فِي ٱلۡبَرِّ وَٱلۡبَحۡرِۚ وَمَا تَسۡقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعۡلَمُهَا وَلَا حَبَّةٖ فِي ظُلُمَٰتِ ٱلۡأَرۡضِ وَلَا رَطۡبٖ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَٰبٖ مُّبِينٖ ٥٩ ﴾ (الأنعام 059)

अर्थ : अल्लाह ही के पास ग़ैब (परोक्ष) की कुन्जियाँ हैं केवल वही उनको जानता है और जो कुछ जल और स्थल में है उसे भी जानता है । जो भी पत्ता गिरता है उसे भी जानता है । जमीन के (नीचे या ऊपर) अंधेरों में कोई दाना ऐसा नहीं और कोई सूखी या गीली चीज़ ऐसी नहीं जो लौहे महफ़ूज़ में लिखी हुई न हो । (सूरा अल्अनआम : ५९)

यानी अल्लाह पाक ने मनुष्य को ज़ाहिरी (प्रत्यक्ष तथा स्पष्ट) चीजें मालूम करने के लिए कुछ साधन प्रदान किए हैं जैसे आँख देखने के लिए , कान सुनने के लिए , नाक सूँघने के लिए , ज़बान चखने के लिए , हाथ टटोलने के लिए , और बुद्धि सोचने समझने के लिए प्रदान की है । फिर ये चीज़ें मनुष्य के अधिकार में दे दी है ताकि अपनी इच्छा अनुसार इन से काम ले सके , जब देखने को मन चाहा तो आँख खोल दी , न चाहा तो बन्द करली । इसी पर प्रत्येक अङ्गों को क़यास (अनुमान) कर लीजिए ।

और अल्लाह तआला ने मनुष्य को ज़ाहिरी चीज़ों के मालूम करने की कुन्जियाँ दे दी हैं जैसे कुन्जी वाले ही के अधिकार में ताले को खोलना या न खोलना है उसी तरह जाहिरी चीज़ों का मालूम

करना मनुष्य के अधिकार में है जब चाहे मालूम करे और जब चाहे न करे ।

ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान केवल अल्लाह को है

इसके पिरीत ग़ैब का मालूम करना मनुष्य के अधिकार में नहीं है। ग़ैब की कुन्जियाँ अल्लाह तआला ने अपने पास रखी हैं । किसी बड़े से बड़े इन्सान या, निकटतम् फरिश्ते को भी ग़ैब के मालूम करने की शक्ति अल्लाह ने नहीं प्रदान की है कि जब चाहें अपनी इच्छा से ग़ैब की बात मालूम करलें और जब चाहें न करें । बल्कि अल्लाह तआला अपनी इच्छा से कभी किसी को ग़ैब की जितनी बात चाहता है बता देता है , परन्तु यह ग़ैब की बात बता देना केवल अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है किसी की इच्छा पर नहीं । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अनेकों बार ऐसा अवसर पड़ा कि आप को किसी बात के जानने की इच्छा हुई परन्तु वह बात आप को मालूम न हो सकी, फिर जब अल्लाह का इरादा हुआ तो ऐक क्षण में बता दी । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में मुनाफिक़ों ने हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर तोहमत् लगाया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस से बड़ा दुःख हुआ , आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कई दिनों तक बहुत छान बीन की परन्तु कोई वास्तविक बात न मालूम हो सकी । फिर जब अल्लाह तआला की इच्छा हुई तो वह्य (ईश्वाणी) भेज कर बता दिया कि वे मुनाफिक़् झूठे हैं और आईशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा पाकदामन् (पवित्र) हैं । अतः एक मुसलमान मोवह्हिद् (एकेशवरवादी) का यह अक़ीदा होना आवश्यक है कि ग़ैब के ख़ज़ानों की कुन्जियाँ अल्लाह तआला ने अपने पास ही रखी हैं और उसने वह कुन्जियाँ किसी के हाथ में नहीं दी हैं और न ही उन ग़ैब के ख़ज़ानों का किसी को ख़ज़ानची बनाया है । वह स्वयं अपने हाथ

से ताला खोलकर उस में से जितना जिसको चाहे प्रदान करदे कोई उसका हाथ नहीं पकड़ सकता ।

इल्मे ग़ैब का दावा करने वाला झूठा है

उपरोक्त आयत से मालूम हुआ कि जो व्यक्ति यह दावा करे कि मैं ऐसा इल्म जानता हूँ जिस के माध्यम से ग़ैब की बातें मालूम कर लेता हूँ और भविष्य की बातें बता सकता हूँ तो ऐसा व्यक्ति बड़ा झूठा है और उलूहियत् (खुदाई) का दावा करता है । यदि कोई व्यक्ति किसी नबी या वली या जिन्न या फरिश्ते या इमाम या बुजुर्ग या पीर या शहीद या नजूमी (ज्योतिषी) या रम्माल या जफ्फार या फाल खोलने वाला या पन्डित या भूत परेत या परियों को ऐसा जाने और उस के बारे में इस किस्म का विश्वास रखे तो वह मुशरिक् हो जाता है और उपरोक्त आयत का इनकार करने वाला भी ।

एक सन्देह का निवारण

यदि कभी किसी समय संयोग से किसी नजूमी (ज्योतिषी) आदि की बात ठीक भी निकल जाए तो इस से उन की ग़ैबदानी (परोक्ष ज्ञान) साबित नहीं होती क्योंकि उन की अधिकतर बातें ग़लत ही होती हैं । मालूम हुआ कि इल्मे ग़ैब उन के अधिकार में नहीं । वास्तविक बात भी यही है कि उन की अटकल् बाज़ी कभी कभी ठीक निकल जाती है और अधिकतम ग़लत होती हैं । कहानत, कश्फ और कुर्आन से फाल लेने का भी यही हाल है, परन्तु पैग़म्बरों पर जो ईश्वरीय आदेश (वह्य) अवतरित होती है वह कभी ग़लत नहीं होती और वह उन के अधिकार में नहीं बल्कि अल्लाह पाक जब चाहता है जो कुछ चाहता है अपनी इच्छानुसार बता देता है उन की अपनी इच्छा से वह्य अवतरित नहीं होती । अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿ قُل لَّا يَعْلَمُ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ٱلْغَيْبَ إِلَّا ٱللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾ ﴾ (النمل 065)

अर्थ ((हे नबी आप कह दें कि जितने प्राणी आसमान और ज़मीन में हैं ग़ैब नहीं जानते केवल अल्लाह ही उसे जानता है । बल्कि वे तो यह भी नहीं जानते कि वे कब उठाये जायेंगे । (सूरा नमल ६५)

अर्थात ग़ैब का जानना किसी के बस की बात नहीं है चाहे वह बड़े से बड़ा इनसान या फरिश्ता ही क्यों न हो । इसका प्रमाण यह है कि दुनिया जानती है कि क़ियामत (महा प्रलय) आएगी परन्तु यह कोई नहीं जानता कि वह कब आएगी । यदि हर चीज़ के विषय में जानकारी प्राप्त कर लेना उन के अधिकार में होता तो क़ियामत के आने की तारीख़ भी मालूम कर लेते ।

ग़ैब की बातें

अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ عِندَهُۥ عِلْمُ ٱلسَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ ٱلْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي ٱلْأَرْحَامِ ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌۢ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌۢ ﴿٣٤﴾ ﴾ (لقمان 034)

अर्थ : ((निःसन्देह अल्लाह ही के पास क़ियामत की ख़बर है , वही बारिश् बरसाता है और जो कुछ मादा के पेट में है वही जानता है और यह कोई नहीं जानता कि वह कल क्या कमाएगा ? और यह कोई नहीं जानता कि वह किस जगह मरेगा । बेशक अल्लाह सर्व ज्ञानी और बहुत अधिक ख़बर रखने वाला है । (सूरा लुक़मान ३४)

अर्थात ग़ैब की बातों की ख़बर केवल अल्लाह ही को है उस के सिवा कोई ग़ैबदान (परोक्ष ज्ञानी) नहीं । क़ियामत की ख़बर और उसका आना लोगों में बहुत प्रसिद्ध है और यक़ीनी है किन्तु उस के आने की निश्चित तारीख़ किसी को नहीं मालूम । फिर अन्य चीज़ो के विषय में क्या ख़बर हो सकती है जैसे जीत हार, तन्दुरुस्ती, बीमारी तथा इस प्रकार की अन्य बातों का किसी को जानकारी नहीं । ये बातें न तो क़ियामत की तरह प्रसिद्ध हैं और न यक़ीनी हैं इसी तरह बारिश होने की किसी को ख़बर नहीं कि कब होगी हालाँकि बारिश होने का मौसम (ऋतु) भी निश्चित है और प्राय: (अक्सर) उसी मौसम में बारिश होती भी है और अधिकांश लोगों को वर्षा की इच्छा भी होती है । यदि उसके निश्चित समय को जानने का कोई साधन होता तो कोई न कोई अवश्य उसकी जानकारी प्राप्त कर लेता । फिर जो चीज़ें ऐसी हैं कि न उन का कोई मौसम नियुक्त है और न तमाम लोगों की इच्छा उस से संबन्धित है जैसे किसी व्यक्ति की मृत्यु और जीवन या सन्तान का होना अथवा न होना या धनवान तथा निर्धन होना या विजय अथवा प्राजय होना तो इन चीजों की भला किसी को क्या ख़बर हो सकती है ? इसी प्रकार जो मादा के पेट में है उसको भी कोई नहीं जान सकता[1] कि एक है या एक से अधिक , नर है या मादा , पूर्ण है या अपूर्ण , खूबसूरत है या बदसूरत, जब इन बातों को कोई नहीं मालूम कर सकता । हालांकि हकीम लोग इन तमाम बातों के कारण बताते हैं लेकिन विशेष रूप से किसी का हाल मालूम नहीं, तो फिर अन्य चीज़ें जो मनुष्य के अन्दर छुपी हुई हैं जैसे विचार , इच्छा ,

---

[1] नयी चिकित्सा विज्ञान भी बच्चे के नर या मादा होने का पता उस समय लगा सकती है जब फरिश्ता अल्लाह के आदेश से रूह फूँक कर उसके लिंग से अवज्ञत हो चुका होता है और उसका मामला प्रोक्ष से प्रत्यक्ष हो चुका होता है।

इरादे , तथा विश्वास (ईमान) एवं निफाक़ इन को क्योंकर मालूम कर सकता है ? और इसी प्रकार जब कोई स्वयं यह नहीं जानता कि कल वह क्या करेगा तो दूसरों का हाल कैसे जान सकता है और मनुष्य जब अपने मरने की जगह नहीं जानता तो फिर मरने का दिन या समय कैसे जान सकता है । बहरहाल अल्लाह के अतिरिक्त भविष्य की कोई भी बात कोई मनुष्य अपनी इच्छा से नहीं जान सकता । मालूम हुआ कि ग़ैबदानी का दावा करने वाले सब झूठे हैं । कश्फ़ , कहानत , रमल , नुजूम , जफर , फालें सब झूठ , छल और शैतानी जाल हैं । मुसलमानों को इन के जाल में कभी नहीं फँसना चाहिए । अगर कोई व्यक्ति ग़ैब जानने का दावा न करे और ग़ैब की बात मालूम करने के अधिकार का भी दावा न करे और यह दावा करे कि अल्लाह तआला ने जो बात मुझे बताई है वह मेरे अधिकार में न थी कि जब चाहता मालूम कर लेता, तो इस में दोनों सम्भावनायें हैं, हो सकता है कि वह सच्चा हो और यह भी सम्भव है कि वह झूठा हो।

अल्लाह के सिवा किसी को न पुकारो

अल्लाह तआला ने सूरा अह्क़ाफ में फरमाया

﴿ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُواْ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَن لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُۥٓ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَـٰمَةِ وَهُمْ عَن دُعَآئِهِمْ غَـٰفِلُونَ ۝٥ ﴾ (الأحقاف 005)

अर्थ : ((उस से अधिक गुमराह (पथ भ्रष्ट) कौन होगा जो अल्लाह के अतिरिक्त ऐसे लोगों को पुकारता है जो क़यामत तक भी उस की बात का जवाब न दे सकें बल्कि वे उसकी पुकार ही से बे ख़बर हैं ।)) (सूरा अल्अह्क़ाफ: ५)

यानी शिर्क करने वाले अन्तिम दर्जे के मूर्ख और बुद्धू हैं कि अल्लाह जैसे क़ादिर (सर्वशक्तिमान) एवं सर्वज्ञानी को छोड़ कर

दूसरों को पुकारते हैं जो न तो उन की पुकार को सुनते हैं और न किसी आवश्यक्ता की पूर्ति की उन में क्षमता है, यदि क़ियामत तक वे उन्हें पुकारते रहें तो वह कुछ नहीं कर सकते । इस आयत से ज्ञात हुआ कि जो लोग बुजुर्गों और नेक लोगों को दूर से पुकारते हैं और उन्हें पुकार कर यह कहते हैं कि या हजरत आप दुआ करदें कि अल्लाह तआला हमारी आवश्यकता पूरी कर दे यह भी शिर्क है अगरचे लोग इस कारण इसको मुशिरक न समझते हों की ज़रूरत पूरी करने की दुआ तो अल्लाह ही से की गई है, क्योंकि इसमें शिर्क ग़ायब् (अनुपस्थित) व्यक्ति को पुकारने के कारण आया है कि उनके बारे में यह अक़ीदा रखा गया है कि वह दूर से और क़रीब से बराबर सुनते हैं, हालाँकि यह केवल अल्लाह की शान है और अल्लाह तआला ने इस आयत में फरमाया है कि अल्लाह के अतिरिक्त जो भी प्राणी हैं वे पुकारने वालों की पुकार से ग़ाफिल् हैं । पुकारने वाले की पुकार को सुनते ही नहीं चाहे वह क़यामत तक चींखता रहे।

लाभ तथा हानि का मालिक **केवल** अल्लाह है

अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿ قُل لَّآ أَمۡلِكُ لِنَفۡسِي نَفۡعٗا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَآءَ ٱللَّهُۚ وَلَوۡ كُنتُ أَعۡلَمُ ٱلۡغَيۡبَ لَٱسۡتَكۡثَرۡتُ مِنَ ٱلۡخَيۡرِ وَمَا مَسَّنِيَ ٱلسُّوٓءُۚ إِنۡ أَنَا۠ إِلَّا نَذِيرٞ وَبَشِيرٞ لِّقَوۡمٖ يُؤۡمِنُونَ ١٨٨ ﴾ (الأعراف 188)

अर्थ : ((हे नबी आप कह दीजिए मुझे अपने लिए लाभ या हानि का कोई अधिकार नहीं परन्तु अल्लाह जो कुछ चाहे और यदि मैं ग़ैब जानता होता तो बहुत सारी भलाईयाँ इकट्ठा कर लेता (अर्थात अपनी सुरक्षा का सामान पहले से कर लेता) और मुझे कोई

तकलीफ न पहुँचती । मैं तो केवल ईमान वालों को डराने वाला और खुशख़बरी सुनाने वाला हूँ । (अल-आराफ़:१८८)

यानी हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारे अम्बिया के सरदार हैं । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा बड़े बड़े मोजिज़े (चमत्कार) अल्लाह की दया तथा कृपा से प्रकट हुए और लोगों ने आप से धर्म की बातें सीखीं । लोगों को आप के पथ पर चलने से महानता मिली । अल्लाह तआला ने आप से फरमाया कि आप लोगों के सामने अपना हाल साफ साफ बयान कर दें कि मुझे न तो कुछ शक्ति प्राप्त है और न ही मैं ग़ैबदान (परोक्ष ज्ञानी) हूँ । मेरी क्षमता और अधिकार का हाल यह है कि मैं अपनी जान तक के लिए लाभ या हानि का मालिक नहीं हूँ तो दूसरों को भला क्या लाभ एवं हानि पहुँचा सकूँगा । यदि ग़ैब का जानना मेरे अपने अधिकार में होता तो हर काम का परिणाम पहले मालूम कर लेता, यदि हानिकारक होता तो उस में कभी हाथ न डालता । ग़ैबदानी केवल अल्लाह की शान (महिमा) है और मैं तो केवल पैगम्बर हूँ और पैगम्बर का काम केवल इतना होता है कि वह बुरे कामों के परिणाम से सूचित कर दे और नेक कामों पर शुभ सूचना सुना दे और यह उपदेश भी उन्हीं के लिए लाभदायक होती है जिन के हृदय में यक़ीन (विश्वास) हो और हृदय में विश्वास डालना मेरा काम नहीं यह केवल अल्लाह ही के अधिकार में है ।

अम्बिया का मुख्य काम

मालूम हुआ कि अम्बिया तथा अवलिया में बड़ाई तथा महानता यही है कि वे अल्लाह का मार्ग बताते हैं , जिन अच्छे और बुरे कामों को जानते हैं लोगों को उनकी जानकारी देते हैं। अल्लाह तआला ने उनकी बातों और उपदेश में तासीर (प्रभाव) रखी है और बहुत से लोग उनकी उपदेश से सीधे मार्ग पर आ जाते हैं । यह कोई बड़ाई नहीं कि उनको जगत में अधिकार चलाने की कोई क्षमता दी गई हो

कि जिसको चाहें मार डालें , या लड़का लड़की दे दें या सङ्कट दूर कर दें या मुरादें (आशाएँ) पूरी कर दें या विजय एवं पराजय दे दें या धनवान या निर्धन कर दें या किसी को बादशाह बना दें या किसी को फक़ीर बना दें या किसी को अमीर या वज़ीर बना दें या किसी के हृदय में ईमान डाल दें या किसी का ईमान छीन लें या किसी रोगी को स्वस्थ बना दें अथवा किसी की स्वास्थ्य छीन लें । यह केवल अल्लाह ही की शान (महिमा) है और अल्लाह के अतिरिक्त हर छोटा बड़ा यह काम करने से असमर्थ है और असमर्थ होने में सब बराबर हैं ।

अम्बिया ग़ैबदान (परोक्ष ज्ञानी) नहीं

इसी तरह यह कोई बड़ाई नहीं कि अल्लाह तआला उन्हें ग़ैब की कुन्जियाँ प्रदान कर दे कि वे जब चाहें किसी के हृदय की बातें मालूम कर लें या जिस ग़ैबी बात को चाहें मालूम कर लें कि फलाँ के यहाँ सन्तान होगी या नहीं, व्यापार में लाभ होगा या नहीं । लड़ाई में विजय होगी या पराजय । इन बातों से सब छोटे बड़े एक समान बेख़बर हैं । फिर जिस प्रकार कोई बात अक़्ल से या किसी क़रीने और अन्दाज़े से कह दी जाती है और वह उसी प्रकार हो जाती है जिस प्रकार कही गई थी, उसी तरह यह बड़े लोग भी जो बात अक़्ल और क़रीना से कह देते हैं कभी वह ठीक हो जाती है और कभी ग़लत हो जाती है, लेकिन वह्य या इल्हाम की बात ग़लत नहीं होती मगर वह्य अपने बस में नहीं होती।

इल्मे गैब के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ के फरमान

أَخْـرَجَ الْبُخَـارِىُّ عَـنِ الرَّبِيْـعِ بِنْـتِ مُعَـوِّذِ بْـنِ عَفْـرَاءَ قَالَـتْ جَـاءَ
النَّبِـىُّ ﷺ فَدَخَلَ حِيْنَ بُنِـىَ عَلَـىَّ فَجَلَسَ عَلَـى فِرَاشِـىْ كَمَجْلِسِكَ

مِنِّىْ فَجَعَلَتْ جُوَيْرِيَاتٌ لَنَا يَضْرِبْنَ بِالدُّفِّ وَيَنْدُبْنَ مَنْ قُتِلَ مِنْ آبَائِىْ يَوْمَ بَدْرٍ إِذْ قَالَتْ إِحْدَاهُنَّ وَفِيْنَا نَبِىٌّ يَعْلَمُ مَا فِىْ غَدٍ فَقَالَ ﷺ : دَعِىْ هَذَا وَقُوْلِىْ بِالَّذِىْ كُنْتِ تَقُوْلِيْنَ))

{ صحيح بخارى؛كتاب النكاح ؛ باب ضرب الدف فى النكاح والوليمة؛ حديث رقم छञ्जद्ध }

अर्थ :- इमाम बुख़ारी (रहिमहुल्लाह) ने रबी बिन्ते मोअव्विज़ बिन अफ्रा[1] द्वारा यह ह़दीस नक़ल की है कि रबी फरमाती हैं कि जिस समय हमारी (रबी की) शादी हुई तो रुख़्सती के समय रसूलुल्लाह ﷺ मेरे घर आये और मेरे बिस्तर पर मेरे पास इतने निकट बैठे जिस तरह तुम बैठे हो। फिर हमारी कुछ बच्चियां डफली बजा बजा कर बद्र नामी युद्ध में मारे गए शहीदों की प्रशंसा में गीत गाने लगीं । एक ने अपनी गीत में यह भी कह दिया कि ((हमारे बीच एक ऐसा नबी है जो भविष्य की बात भी जानता है)) जब आप ने यह सुना तो फरमाया यह कहना छोड़ दे और जो पहले कह रही थी वही कहती रह ।)) (बुखारी)

यानी रबी मदीना की अनसार समुदाय की एक नारी का नाम था उनकी शादी तथा रुख़सती के अवसर पर रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ लाये थे फिर उनके पास बैठे इतने में बच्चियां कुछ गीत गाने लगीं उन में से किसी नें यह भी कह दिया कि हमारा नबी कल

[1] अफरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा श्रीमान औफ , मोअव्वज़ और मुआज रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम् की माँ का नाम है । हजरत अफरा (रजि) के ६ बेटे थे जो सब के सब बद्र नामी युद्ध में शरीक हुए । उन में से दो बद्र के युद्ध में शहीद हो गए थे । मोआज और मोअव्वज ने मिलकर अबू जहल को मारा था

की बात भी जानता है, रसूलुल्लाह ﷺ ने उसे मना किया और फरमाया कि यह बात मत कह ।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि किसी बड़े से बड़े मनुष्य के बारे में यह अक़ीदा नहीं रखना चाहिए कि वह ग़ैबदान है । शायर (कवि) लोग अल्लाह के रसूल ﷺ की प्रशंसा में जमीन व आसमान के कुलाबे मिलाते हैं और कह देते हैं कि मुबालग़ा के तौर पर ऐसा कहा गया यह ग़लत है, इस लिए कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इस प्रकार की कविता अपनी प्रशंसा में बच्चियों को भी पढ़ने न दिया, फिर ऐसा क्योंकर हो सकता है कि कोई बुद्धिमान शायर इस प्रकार की कविता कहे या सुने ।

हजरत आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का कथन

عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ مَنْ أَخْبَرَكَ أَنَّ مُحَمَّداً ﷺ يَعْلَمُ الْخَمْسَ الَّتِىْ قَالَ اللّٰهُ تَعَالَى﴿ إِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾فَقَدْ أَعْظَمَ الْفَرِيَّةَ . (رواه الترمذى مطولا؛ كتاب التفسير؛ تفسيرسورة النجم ؛ حديث رقمघद्दढण)

अर्थ : - हजरत आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने फरमाया जिस ने तुम्हें ख़बर दी कि मुहम्मद ﷺ उन पाँच बातों को जानते थे जिन की अल्लाह तआला ने इस आयत {إِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ} में खबर दी है तो उस ने बड़ा गम्भीर बुहतान बाँधा । (बुखारी)

यानी : वह पाँच बातें जो सूरा लुक़्मान के अन्त में हैं । उनकी व्याख्या इस अध्याय के प्रारम्भ में गुज़र चुकी है कि सम्पूर्ण ग़ैब की बातें इन्हीं पाँच चीज़ों में सम्मिलित हैं । अतः जो व्यक्ति यह कहे कि रसूलुल्लाह ﷺ ग़ैब की बातें जानते थे तो उस ने बड़ा भारी बुहतान बांधा ।

ग़ैब तो अल्लाह के सिवा कोई जानता ही नहीं

عَنْ أُمِّ الْعَلَآءِ الاَنْصَارِيَّةِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ ((وَاللّٰهِ لاَ أَدْرِىْ وَأَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ مَا يُفْعَلُ بِىْ وَلاَ بِكُمْ))

(صحيح بخارى ؛كتاب التعبير ؛ باب العين الجارية فى المنام حديث رقم (ठण्ज्ञड

अर्थ : उम्मे अला (**रज़ियल्लाहु अन्हा**) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया ((अल्लाह की क़सम मुझे मालूम नहीं हालाँकि मैं अल्लाह का रसूल हूँ कि मेरे साथ क्या मामिला होगा और तुम्हारे साथ क्या होगा ?)) (बुखारी)

यानी : अल्लाह तआला अपने बन्दों से दुनिया में या क़ब्र में या आख़िरत में जो मामिला करेगा उसका ह़ाल किसी को भी मालूम नहीं न नबी को न वली को । न अपना हाल मालूम न दूसरों का हाल मालूम । और यदि वह्य के द्वारा किसी को यह मालूम होजाए कि फलाने का परिणाम अच्छा है तो वह एक संक्षिप्त ज्ञान है उस से अधिक मालूम करना उन के बस से बाहर है ।

पाँचवाँ अध्याय

अल्लाह के अधिकारों में शिर्क करने का खण्डन

{इस अध्याय में उन आयतों तथा ह़दीसों का बयान है जिन से अल्लाह के अधिकार में शिर्क करने का खण्डन होता है। }

अल्लाह तआला ने सूरा मूमिनून में फरमाया :

﴿ قُلْ مَنۢ بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَىْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾ ﴾

(المؤمنون 088-089)

अर्थ ((हे नबी आप लोगों से प्रश्न करें कि कौन ऐसा है जिस के हाथ में हर चीज़ का अधिकार है ? और वह शरण भी देता है और उस के विरुद्ध कोई शरण नहीं दे सकता। यदि तुम जानते हो तो बताओ ? इस के उत्तर में वे (मक्का के मुशरिकीन) यही कहेंगे कि सब कुछ अधिकार अल्लाह ही के लिए है। आप कह दीजिए फिर कहाँ सनके जा रहे हो ?)) (सूरा मूमिनून ८८–८९)

यानी : जिस मुश्‌रिक् से भी पूछा जाए कि ऐसी शान (महिमा) किसकी है कि जिस के अधिकार में हर चीज़ है जो चाहे करे, कोई उसका हाथ पकड़ने वाला न हो और कोई उसकी बात को टाल न सके तो वह यही उत्तर देंगे कि ऐसी शान तो केवल अल्लाह ही की है। तो फिर दूसरों से मुरादें माँगना पागल्पन् हुआ।

इस आयत से यह ज्ञात हुआ कि रसूलुल्लाह ﷺ के समय में काफिर भी इस बात को मानते थे कि अल्लाह के बराबर और उसका प्रतिद्वन्दी कोई नहीं। परन्तु अपने बुतों (मूर्तियों) को अल्लाह के दरबार तक पहुँचाने के लिए अपना वकील ,शिफारसी और माध्यम समझकर पूजते थे और उनसे माँगते थे इसी कारण वे मुश्‌रिक् हुए। इस लिए आज भी यदि कोई व्यक्ति इस संसार में

किसी प्राणी के लिए ईश्वरीय अधिकार साबित करे और उसे अपना वकील समझ कर उसकी उपासना करे तो मुशरिक होजाए गा, चाहे उसे अल्लाह के बराबर न समझता हो और उसके अन्दर अल्लाह के समान शक्ति न साबित करता हो ।

लाभ तथा हानि का मालिक केवल अल्लाह है

﴿ قُلْ إِنِّى لَآ أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلْ إِنِّى لَن يُجِيرَنِى مِنَ ٱللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِن دُونِهِۦ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ ﴾ (الجن 021-022)

अर्थ : ((हे नबी आप कह दीजिए कि नि:सन्देह तुम्हारे लिए किसी लाभ या हानि पहुँचाने का मुझे अधिकार नहीं है । आप कह दें कि मुझे अल्लाह से कोई कदापि बचा नहीं सकता और उसके अतिरिक्त मैं कहीं शरण नहीं पा सकता । (सूरा जिन्न: २१—२२)

यानी (: यह रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ से एक विज्ञापन है और अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ को आदेश दिया कि वह लोगों को सुना दें कि) मैं तुम्हारे लाभ तथा हानि पर कुछ भी अधिकार नहीं रखता और मेरे अनुयायी (उम्मती) होने के कारण कहीं तुम लोग अभिमानी बनकर यह विचार करके सीमा से आगे मत बढ़ना कि हमारा पाया मज्बूत है , हमारा वकील प्रबल है और हमारा सिफारिशी बड़ा प्रिय है । हम जो चाहें करें वह हमें अल्लाह के अज़ाब (यातना) से बचा लेगा । क्योंकि मैं तो स्वयं डरता हूँ और अल्लाह के अतिरिक्त कहीं कोई पनाहगाह नहीं जानता तो फिर दूसरों को क्या बचा सकूँगा ?

मालूम हुआ कि जो लोग पीरों पर भरोसा करके अल्लाह को भूल जाते हैं और अल्लाह के आदेशों का पालन नहीं करते हैं ऐसे लोग नि:सन्देह पथ भ्रष्ट और गुमराह हैं । इस लिए कि सारे रसूलों और नबियों के सरदार अल्लाह के रसूल ﷺ रात दिन अल्लाह से

डरते और भयभीत रहते थे तो भला किसी अन्य का कहना ही क्या है ?

अल्लाह के अतिरिक्त कोई दूसरा रोज़ी देने वाला नहीं

अल्लाह तआला सूरा नह़ल में फरमाते हैं :

﴿ وَيَعۡبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَمۡلِكُ لَهُمۡ رِزۡقٗا مِّنَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ شَيۡـٔٗا وَلَا يَسۡتَطِيعُونَ ﴿٧٣﴾ ﴾ (النحل 073)

अर्थ : ((और ये लोग अल्लाह को छोड़ कर ऐसों की उपासना करते हैं जो आसमान व ज़मीन से उनके लिए रोजी़ पहुँचाने में कुछ भी अधिकार नहीं रखते हैं और न ही उनके अन्दर रोज़ी पहुँचाने की शक्ति है ।)) (सूरा नह़ल ६३)

यानी ये मुशरिक अल्लाह के समान कुछ ऐसे लोगों का सम्मान करते हैं जो एकदम बेबस हैं । रोज़ी पहुँचाने में उनका कोई दख़ल (हस्तक्षेप) नहीं । न आसमान से पानी बरसा सकें और न ज़मीन से कुछ उगा सकें उनको किसी भी प्रकार की शक्ति नहीं ।

साधारण वर्ग के कुछ लोग जो यह कहते हैं कि बुज़ुर्गो को संसार में तसर्रुफ् (परिवर्तन) का अधिकार और शक्ति तो प्राप्त है किन्तु अल्लाह तआला ने भाग्य में जो लिख दिया है उस पर वे सन्तुष्ट हैं उसके आदर से ये दम नहीं मारते , वर्ना यदि वे चाहें तो एक क्षण में संसार को उलट पलट दें । तो इस प्रकार की सारी बातें ग़लत हैं बल्कि वास्तव में न किसी काम में उनका हस्तक्षेप है और न ही इस प्रकार के तसर्रुफ् की शक्ति और क्षमता है ।

केवल अल्लाह को पुकारो

अल्लाह तआला ने सूरा यूनुस् में फरमाया :

﴿ وَلَا تَدۡعُ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَۖ فَإِن فَعَلۡتَ فَإِنَّكَ إِذٗا مِّنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ١٠٦ ﴾ (يونس 106)

अर्थ : ((और अल्लाह को छोड़ कर ऐसे को मत पुकार जो तुझको न लाभ पहुँचा सके और न हानि , फिर यदि तूने ऐसा किया तो निःसन्देह तू ज़ालिमों (अत्याचारों) में से हो जाएगा ।)) (सूरा यूनुस १०६)

यानी : सर्व शक्तिमान अल्लाह के होते हुए ऐसे असमर्थ लोगों को पुकारना जो किसी भी प्रकार का लाभ या हानि नहीं पहुँचा सकते वास्तव में सरासर जुल्म (अत्याचार) है । क्योंकि सब से महान हस्ती का पद हीन और असमर्थ लोगों को दिया जा रहा है । सूरा सबा में अल्लाह तआला फरमाते हैं ।

﴿ قُلِ ٱدۡعُواْ ٱلَّذِينَ زَعَمۡتُم مِّن دُونِ ٱللَّهِۖ لَا يَمۡلِكُونَ مِثۡقَالَ ذَرَّةٖ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِي ٱلۡأَرۡضِ وَمَا لَهُمۡ فِيهِمَا مِن شِرۡكٖ وَمَا لَهُۥ مِنۡهُم مِّن ظَهِيرٖ ٢٢ وَلَا تَنفَعُ ٱلشَّفَٰعَةُ عِندَهُۥٓ إِلَّا لِمَنۡ أَذِنَ لَهُۥۚ حَتَّىٰٓ إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمۡ قَالُواْ مَاذَا قَالَ رَبُّكُمۡۖ قَالُواْ ٱلۡحَقَّۖ وَهُوَ ٱلۡعَلِيُّ ٱلۡكَبِيرُ ٢٣ ﴾ (سبأ 022-023)

अर्थ : ((आप फरमा दीजिए कि उन्हें पुकार कर देखो तो सही , जिनको तुमने अल्लाह के अतिरिक्त पूजनीय बना रखा है । वे तो आसमानों और जमीन में एक कण तथा पाई भर अधिकार नहीं रखते और न ही उन दोनों में उनकी कोई साझेदारी है और न तो उन में से कोई अल्लाह का सहयोगी है । और उस के पास किसी की सिफारिश काम नहीं आएगी परन्तु जिस को वह अनुमति दे दे ।

यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाती है तो वे पूछते हैं कि तुम्हारे रब ने क्या फरमाया ? तो वे उत्तर देते हैं कि सत्य ही फरमाया है और वही सब से महान तथा सर्वोच्च है ।

अल्लाह तआला की आज्ञा के बिना कोई सिफारिश करने के लिए मुँह नहीं खोल सकता ।

यानी सङ्कट के समय किसी से मुराद माँगना और जिस से मुराद माँगी है उसका मुराद को पूरी कर देना कई प्रकार है । जिस से मुराद माँगी है वह स्वयं मालिक हो या उसका साझीदार हो या उसका मालिक पर दबाव (प्रभाव) हो, जैसे बादशाह बड़े बड़े वज़ीरों या अमीरों का कहना मान लेता है क्योंकि वे सरकार और राज्य के सदस्य होते हैं उनके अप्रसन्न होने से राज्य का क़ानून-व्यवस्था बिगडता है । या वह मालिक से सिफारिश करे और मालिक को उसकी सिफारिश माननी ही पड़ती है , चाहे दिल से माने या न माने, जैसे राजकुमारी या रानी से बादशाह को मोह़ब्बत होती है और उनके प्रेम के कारण उनकी सिफारिश रद्द नहीं की जाती। अब विचार कीजिए कि मुशरिक अल्लाह तआला को छोड़कर जिन बुज़ुर्गों को पुकारते हैं और उन से मुरादें माँगते हैं न तो वे संसार में मच्छर के एक पर के मालिक हैं और न ही रत्ती भर उनका साझा है और न ही अल्लाह के राज्य के सदस्य हैं और न अल्लाह तआला के सहयोगी हैं कि उन से दब कर अल्लाह तआला उनकी बात मान ले और न बिना अल्लाह की अनुमति के वह सिफारिश के लिए मुँह खोल सकते हैं कि न चाहते हुए भी उस से कुछ दिला दें । बल्कि उसके दरबार में उनका तो यह ह़ाल है कि उसके आदेश के सामने सब के होश उड़ जाते हैं और बदहवास और भयभीत होजाते हैं। सम्मान और भय के कारण दुबारा पूछने की हिम्मत नहीं होती । बल्कि आपस में एक दूसरे से पूछते हैं कि रब ने क्या आदेश दिया?

और उस बात की जाँच कर लेने के बाद उसे मानना और स्वीकारना ही पड़ता है, वहाँ बात पलटी जाये या कोई वकालत और सहयोग का साहस करे बहुत दूर की बात है।

शफाअत् (सिफारिश) की क़िस्में

यहाँ एक बात बहुत ही महत्वपूर्ण है उसको याद रखा जाए कि अवाम अम्बिया और अवलिया की सिफारिश पर गर्व करते हैं और शफाअत् का ग़लत अर्थ समझ् कर अल्लाह को भूल गए हैं । दरअसल शफाअत कहते हैं सिफारिश को । दुनिया में सिफारिश के कई प्रकार हैं ।

जैसे बादशाह की दृष्टि में चोर की चोरी साबित हो जाए और कोई वज़ीर या अमीर उसकी सिफारिश करके सज़ा से बचा ले । बादशाह तो राज्य के क़ानून के अनुसार दण्ड ही देना चाहता था परन्तु वज़ीर से दब कर उसे छोड़ देता है । क्योंकि वज़ीर राज्य का सदस्य है और उसके कारण राज्य में दिन रात उन्नति हो रही है, बादशाह यह विचार करके कि इस वज़ीर को अप्रसन्न नहीं करना चाहिए वर्ना राज्य में गड़बड़ी उत्पन्न हो जाएगी और गुस्से को पी जाना ही उचित है , चोर को क्षमा कर देता है । इस प्रकार की सिफारिश को शफाअते वजाहत कहा जाता है । यानी वज़ीर के पद और सम्मान के कारण उसकी बात मानी गई ।

शफाअते वजाहत् सम्भव नहीं

अल्लाह के दरबार में शफ़अते वजाहत कभी भी नहीं हो सकती, जो व्यक्ति अल्लाह के सिवा किसी को इस प्रकार का सिफारिशी समझे तो वह निश्चित रूप से मुश्रिक् और बड़ा मूर्ख है । उसने इलाह (माबूद) का अर्थ समझा ही नहीं और शहन्शाह (बादशाहों के बादशाह) के पद और महानता को पहचाना ही नहीं । उस शहन्शाह

की तो यह शान है कि यदि चाहे तो “कुन्” (हो जा) शब्द से करोड़ों नबी , वली , जिन्न , फरिश्ते , जिब्रईल और हज़रत मुहम्मद ﷺ के बराबर एक क्षण में पैदा करदे और एक क्षण में सम्पूर्ण जगत अर्श से फर्श तक उलट पलट कर रख दे तथा एक अन्य जगत उस स्थान पर बना दे । उसके तो इरादे ही से हर चीज़ पैदा हो जाती है , उसे पदार्थ और सामग्री की आवश्यकता नहीं । यदि हजरत आदम से लेकर क़ियामत तक के तमाम मनुष्य और जिन्न सब के सब जिब्रील तथा पैग़म्बर के समान बन जायें तो अल्लाह के राज्य में इनके कारण कोई शोभा न बढ़ेगी और यदि सारे लोग शैतान व दज्जाल बन जायें तो उसके राज्य की शोभा कुछ भी न घटेगी । वह अल्लाह प्रत्येक अवस्था में तमाम बड़ों का बड़ा और तमाम बादशाहों का बादशाह है । न कोई उसका कुछ बिगाड़ सके और न बना सके ।

शफाअते मोह़ब्बत् भी सम्भव नहीं

दूसरे प्रकार की सिफारिश यह है कि राजकुमारों , राजकुमारियों रानियों या बादशाह का कोई प्रिय खड़ा होजाए और चोर को सज़ा न देने दे और बादशाह उसके प्रेम के कारण उसे नाराज़ न करना चाहे और उस चोर को क्षमा कर दे । इस को शफाअते मोह़ब्बत् कहा जाता है । बादशाह ने उसके प्रेम से विवश हो कर यह सोच कर कि महबूब की नाराज़गी से स्वयं मुझे दुख होगा महबूब की बात मान ली। इस प्रकार की सिफारिश भी अल्लाह के दरबार में सम्भव नहीं । यदि कोई किसी नबी या वली को इस प्रकार का सिफारिश करने वाला समझे तो वह भी पक्का मुश्रिक् और मूर्ख है । वह शहन्शाह अपने बन्दों को कितना ही प्रदान करे, किसी को ह़बीब, किसी को ख़लील, किसी को कलीम, और किसी को रूहुल्लाह, और किसी को रसूले करीम , मकीन , रूहुल्कुद्स और रसूले अमीन, जैसे सम्मान वाले अलक़ाब प्रदान करे । परन्तु मालिक तो मालिक है

और गुलाम, गुलाम ही है । हर एक का अपना पद और स्थान है जिस से वह आगे नहीं बढ़ सकता । गुलाम जिस तरह उसकी दया एवं कृपा से प्रभावित होकर प्रसन्नता से झूमता है , इसी तरह उसके भय से भी उसका पित्ता पानी हो जाता है ।

आज्ञा मिलने के पश्चात सिफारिश

तीसरे प्रकार की सिफारिश यह है कि चोर की चोरी तो साबित हो गई किन्तु वह पेशावर चोर नहीं है और चोरी को अपना धन्धा नहीं बनाया है बल्कि दुर्भाग्य से यह अपराध कर बैठा इस लिए उस पर लज्जित भी है । लज्जा के कारण पानी पानी है , शर्म से सर झुका हुआ है, दिन रात दण्ड का भय उसे खाए जा रहा है , बादशाह के बनाए हुए नियमों को सर आँखों पर रखता है और स्वयं अपने आप को अपराधी तथा दण्डनीय समझता है और बादशाह से भाग कर किसी वज़ीर या अमीर का शरण नहीं ढूँढता है तथा उसके मुक़ाबले में किसी का सहयोग नहीं चाहता और रात दिन बादशाह का मुँह तक रहा है कि बादशाह महोदय के यहाँ से इस अपराधी के सम्बन्ध में क्या आदेश जारी किया जाता है ? तो उसकी यह दुर्दशा देख कर बादशाह के दिल में उस पर दया आ जाता है और उस के इस अपराध को क्षमा कर देना चाहता है । लेकिन क़ानून का सम्मान बाक़ी रखना चाहता है कि कहीं लोगों के दिलों में क़ानून का सम्मान घट न जाए । अब कोई वज़ीर या अमीर बादशाह का इशारा पाकर सिफारिश के लिए खड़ा हो जाता है और बादशाह उस वज़ीर का सम्मान बढ़ाने के लिए जाहिर में उसकी सिफारिश के नाम पर उस चोर का अपराध माफ कर देता है । वज़ीर ने चोर की सिफारिश इस लिए नहीं की कि वह उसका सम्बन्धी , रिश्तेदार या मित्र है या उस को सहयोग देने का उस ने जिम्मा ले लिया था । बल्कि केवल बादशाह का इशारा पाकर सिफारिश के लिए खड़ा हुआ है । क्योंकि वह तो बादशाह का वज़ीर

है न कि चोरों का सहयोगी । इस प्रकार की सिफारिश को शफाअत बिल्-इज्न् कहा जाता है यानी अनुमति मिलने के पश्चात सिफारिश करना । अल्लाह के दरबार में इस प्रकार की सिफारिश होगी और कुरआन तथा हदीस में जिस नबी या वली की शफाअत का बयान आया है वह यही शफाअत् है ।

सीधा मार्ग

प्रत्येक मनुष्य पर अनिवार्य है कि वह अल्लाह ही को पुकारे , उसी से हर वक़्त डरता रहे , उसी के आगे अपने पापों का इक़्रार करते हुए माफी मांगता रहे , उसी को अपना मालिक और सहयोगी समझे । अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को ठिकाना देने वाला न समझे और कभी किसी की सहायता एवं सहयोग पर भरोसा न करे। क्योंकि हमारा रब बड़ा ही माफ करने वाला और बहुत मेहरबान है। वह अपने फज़ूल-व-करम से सब बिगड़े काम बना देगा ,अपनी मेहरबानी से सारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और जिस को चाहेगा अपनी इच्छा से आप का सिफारिश करने वाला बना देगा । जिस तरह आप अपनी हर आवश्यकता उसी को सौंपते हो उसी तरह यह आवश्यकता भी उसी को सौंप दो कि वह जिस को चाहे आप का सिफारिशकर्ता बना कर खड़ा कर दे । किसी की सहायता , सहयोग तथा समर्थन पर कभी भी भरोसा न करो । बल्कि उसी को अपनी सहायता के लिए पुकारो , हक़ीक़ी मालिक को कभी न भूलो। उसके बनाए हुए क़ानूनों का सम्मान करो और उस के ओग रीतियों, परम्पराओं को ठुकरादो । धार्मिक नियमों को छोड़कर रीतियों , परम्पराओं को अपना लेना बड़ा भङ्कयर अपराध है , सारे नबी , वली इस से घिन करते हैं , वे कभी भी ऐसे लोगों के सिफारिशकर्ता नहीं बनते जो रस्म व रिवाज , रीतियों को न छोड़ें और धार्मिक कानून तथा इस्लामी नियमों को नष्ट भ्रष्ट करें , बल्कि वे उलटे

उनके दुश्मनु बन जाते हैं और उन से नाराज़ हो जाते हैं॥ क्योंकि उनकी महानता यही थी कि वे अल्लाह की प्रसन्नता पर बीवी , बच्चों , मुरीदों , शागिर्दों , नौकर चाकर और यार दोस्तों की प्रसन्नता को कुर्बान कर देते थे। और जब ये लोग अल्लाह की प्रसन्नता के खिलाफ कोई काम करते थे तो ये उन के दुशमन बन जाते थे । तो भला अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को पुकारने वालों में क्या गुण है कि बड़े बड़े लोग उन के सहयोगी बनकर अल्लाह तआला की इच्छा के खिलाफ उन की तरफ से झगड़ें ? ऐसा कभी भी नहीं होगा बल्कि वे तो उन के दुश्मन हैं । अल्लाह के लिए दोस्ती और अल्लाह ही के लिए दुश्मनी इन की शान है । अगर किसी के बारे में अल्लाह की यही इच्छा है कि वह जहन्नम ही का ईंधन बने तो यह उसको और दो-चार धक्का दे कर जहन्नम में गिराने को तैयार हैं। वे तो अल्लाह की इच्छा के अधीन हैं । जिस तरफ उसकी इच्छा होगी उसी तरफ झुकेंगे ।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ : كُنْتُ خَلْفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ يَوْمًا فَقَالَ يَا غُلَامُ! اِحْفَظِ اللّٰهَ يَحْفَظْكَ؛ اِحْفَظِ اللّٰهَ تَجِدْهُ تُجَاهَكَ ؛ وَإِذَا سَأَلْتَ فَاسْأَلِ اللّٰهَ ؛ وَإِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللّٰهِ ؛ وَاعْلَمْ أَنَّ الْأُمَّةَ لَوِاجْتَمَعَتْ عَلَى أَنْ يَّنْفَعُوْكَ بِشَىْءٍ لَمْ يَنْفَعُوْكَ إِلاَّ بِشَىْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللّٰهُ لَكَ ؛ وَلَوِاجْتَمَعُوْا عَلَى أَنْ يَّضُرُّوْكَ بِشَىْءٍ لَمْ يَضُرُّوْكَ إِلاَّ بِشَىْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللّٰهُ عَلَيْكَ ؛ رُفِعَتِ الْأَقْلَامُ وَجَفَّتِ الصُّحُفُ .

(سنن ترمذى ؛ أبواب صفة القيامة ؛ حديث رقم ह्छह्ञ)

अर्थ : - हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) ने कहा कि एक दिन मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे (सवारी पर) था , आप ﷺ ने फरमाया

कि " ऐ बच्चे अल्लाह को याद रख , अल्लाह तुझे याद रखेगा । अल्लाह को याद रख , उसको अपने सामने पाएगा । और जब तू सवाल करे तो अल्लाह ही से सवाल कर , और जब सहायता माँगे तो अल्लाह ही से माँग और यक़ीन करले कि यदि तमाम लोग मिलकर तुझे कुछ लाभ पहुँचाने पर एकत्रित हो जाएँ तो उतना ही लाभ पहुँचा सकेंगे जो अल्लाह ने तेरे लिए लिख दिया है । और यदि सब मिलकर हानि पहुँचाने पर एकत्रित हो जाएँ तो उतना ही हानि पहुँचा सकेंगे जो तेरे लिए अल्लाह ने लिख दिया है । कलम उठा लिए गए और किताबें सूख गईं । (त्रिमिज़ी हदीस न० २५२१)

यानी :अल्लाह तआला हक़ीक़ी शहन्शाह है । वह दुनिया के बादशाहों की तरह अभिमानी नहीं कि कोई प्रजा कितना ही झक् मारे , लेकिन घमन्ड के मारे उसकी ओर ध्यान ही नहीं करते । यही कारण है कि प्रजा बादशाह के अतिरिक्त अन्य वज़ीरों , अमीरों का माध्यम ढूँढते हैं ताकि इन्हीं के माध्यम से उनकी फर्याद स्वीकार हो जाए । किन्तु अल्लाह की यह शान नहीं , वह तो बड़ा ही मेहरबान है , उस तक पहुँचने के लिए किसी की वकालत की जरुरत नहीं , कि अल्लाह तआला को उसका ख़याल आए । बल्कि वह तो प्रत्येक का ख़याल रखता है । सब को याद रखता है , चाहे कोई सिफारिश करे या न करे । वह पवित्र तथा सर्व श्रेष्ठ है और उसका दरबार दुनिया के बादशाहों के समान नहीं है कि प्रजा वहाँ पहुँच ही न सकें और उसके अमीर एवं वज़ीर ही प्रजा पर शासन करें और प्रजा को इनका आदेश अवश्य मानना पड़े और इन्हीं को वकील तथा सिफारिशकर्ता बनाना पड़े । अल्लाह तआला ऐसा नहीं है बल्कि वह अपने बन्दों से बहुत निकट है , एक मामूली से मामूली आदमी भी यदि अपने हृदय से उसकी ओर ध्यान करे तो उसी स्थान पर उसी क्षण उसे अपने सामने पाएगा । अल्लाह के दरबार में अपनी ग़फ्ल्ततथा लापरवाही के पर्दा के अतिरिक्त और कोई पर्दा नहीं ।

अल्लाह सब से निकट है

यदि कोई अल्लाह से दूर है तो केवल अपनी ग़फ़्ल्तके कारण दूर है , वर्ना अल्लाह सब से निकट है । फिर जो कोई किसी नबी या वली को इस लिए पुकारता है कि वे उसको अल्लाह तआला से निकट कर दें , तो यह नहीं समझता कि नबी , वली तो फिर भी उस से दूर हैं , अल्लाह तआला तो उस से बहुत निकट है । इस की मिसाल यूँ समझो कि बादशाह का एक ग़ुलाम है जो बादशाह के निकट अकेला हो और बादशाह उसकी दरख़ास्त सुनने के लिए ध्यान पूर्वक तैयार हो , फिर भी वह ग़ुलाम किसी वज़ीर या अमीर को आवाज़ देकर पुकारे और उस से कहे कि तू मेरी तरफ से मेरी दरख़ास्त बादशाह तक पहुँचा दे , तो ऐसे ग़ुलाम के बारे में आप का क्या विचार है ? स्पष्ट है कि यह ग़ुलाम या तो अन्धा है या दीवाना । रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि हर व्यक्ति अल्लाह ही से माँगे और सङ्कट में उसी से सहायता चाहे और यह विश्वास करले कि भाग्य का लिखा कभी नहीं मिट सकता । अगर सारे जगत के सभी छोटे बड़े मिलकर किसी को कोई लाभ या हानि पहुँचाना चाहें तो उससे अधिक नहीं हो सकता जितना अल्लाह ने लिखा है । भाग्य से बाहर कोई कार्य नहीं हो सकता ।

मालूम हुआ कि भाग्य को बदलने की किसी में शक्ति नहीं । जिस के भाग्य में सन्तान नहीं उसे कौन सन्तान दे और जिस की आयु पूरी हो चुकी है तो उसकी आयु कौन बढ़ा सकता । फिर यह कहना कि अल्लाह ने अपने वलियों को तक़दीर बदल देने की शक्ति प्रदान की है , ग़लत है । बात केवल यह है कि अल्लाह तआला कभी अपने हर बन्दे की दुआ क़बूल फरमाता है और अम्बिया , अवलिया की अधिकतम दुआएँ कबूल फरमाता है । दुआ की तौफीक़ भी वही देता है , और क़बूल भी वही करता है , दुआ करना और उसके पश्चात मुरादों का पूरा हो जाना दोनों बातें तक़दीर में लिखी हुई

हैं, दुनिया का कोई काम तक़दीर से बाहर नहीं । किसी में तक़दीर बदलने की शक्ति नहीं चाहे वह छोटा हो या बड़ा , नबी हो या वली, हाँ अल्लाह से दुआ माँगे बस उसे इतनी ही ताक़त है । फिर उस मालिक ही को यह अधिकार है चाहे तो अपनी कृपा से उसे स्वीकार करले और चाहे तो अपनी हिकमत के आधार पर स्वीकार न करे ।

केवल अल्लाह पर भरोसा करो

عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رضي الله عنه قال : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : إِنَّ مِنْ قَلْبِ ابْنِ آدَمَ بِكُلِّ وَادٍ شُعْبَةٌ ؛ فَمَنِ اتَّبَعَ قَلْبُهُ الشُّعَبَ كُلَّهَا ؛ لَمْ يُبَالِ اللّٰهُ بِاَىِّ وَادٍ أَهْلَكَهُ ؛ وَمَنْ تَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ كَفَاهُ التَّشَعُّبَ .

(سنن ابن ماجة ؛ كتاب الزهد ؛ باب اليقين والتوكل حديث رقم ढ्ज्ञटट وهذاالحديث ضعيف)

अर्थ : - अम्र बिन आस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि ((मनुष्य के हृदय के लिए प्रत्येक मैदान में एक मार्ग है । फिर जिस ने अपने हृदय को तमाम राहों के पीछे लगा दिया तो अल्लाह तआला इसकी परवाह न करेगा कि उसे किस मैदान में तबाह व बरबाद कर दे और जो व्यक्ति सभी राहों को छोड़कर केवल अल्लाह पर भरोसा करेगा अल्लाह तआला उसके लिए तमाम मैदानों की ओर भटकने से बचा लेगा और ऐसे व्यक्ति का निरीक्षक बन जाएगा । (इबने माजा) (नोटः= यह हदीस जईफ है । देखिए शैख़ अल्बानी (रहिमहुल्लाह) की किताब ज़ईफ इब्ने माजा)

यानी जब आदमी को किसी वस्तु की चाहत या ज़रूरत होती है या किसी कष्ट एवं सङ्कट में पड़ जाता है तो उसका ध्यान तथा मन चारों तरफ दौड़ता है कि फलाँ नबी को या फलाँ वली को या

फलाँ इमाम को या फलाँ पीर को या फलाँ बाबा को या फलाँ शहीद को या फलाँ परी को पुकारना चाहिए। या फलाँ ज्योतिषी से या फलाँ रम्माल से या फलाँ काहिन (भविष्यवक्ता) से या जफ्फार से पूछा जाए। या फलाँ मोलवी से फाल खुलवाई जाए। इस प्रकार जो मनुष्य प्रत्येक ख्याल के पीछे पड़ा रहता है तो अल्लाह तआला उस से अपनी मान्यता तथा कृपा एवं दया की दृष्टि फेर लेता है और उसको अपने मुख़लिस् (सच्चे) और प्रिय बन्दों में शुमार नहीं करता और ऐसा व्यक्ति अल्लाह के मार्गदर्शन की राहों से दूर हो जाता है और इसी प्रकार अपने उन्हीं विचारों के पीछे दौड़ते दौड़ते बरबाद हो जाता है। कोई दहरिया (नास्तिक) बन जाता है , कोई मुल्हिद् (धर्म भ्रष्ट) कोई गुम्राह (पथभ्रष्ट) कोई मुश्रिक् और कोई शरीअत् का इनकार करने वाला हो जाता है। लेकिन जो व्यक्ति केवल अल्लाह पर भरोसा करता है किसी विचार के पीछे नहीं दौड़ता तो अल्लाह तआला ऐसे व्यक्ति को अपने मक्बूल (प्रिय) बन्दों में शामिल कर लेता है और ऐसे व्यक्ति पर अपनी हिदायत (मार्ग दर्शन) की राहें खोल देता है तथा उसके दिल को ऐसी शान्ति एवं सुख प्रदान करता है कि जो ख्यालात के पीछे दौड़ने वालों को कभी नहीं मिल सकता। जिसके भाग्य में जो कुछ लिखा है वह उसे मिलकर रहेगा , मगर विचारों के पीछे पड़ने वाला मुफ्त में परेशान रहता है और अल्लाह पर भरोसा करने वालों को आराम मिल जाता है।

عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : لِيَسْئَلْ أَحَدُكُمْ رَبَّهُ حَاجَتَهُ كُلَّهَا حَتَّى يَسْأَلَهُ الْمِلْحَ وَحَتَّى يَسْأَلَهُ شِسْعَ نَعْلَهُ إِذَا انْقَطَعَ .

(سنن ترمذی ؛ أبواب الدعوات ؛)

अर्थ : ((हजरत अनस् (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि ((प्रत्येक मुसलमान को अपने रब से अपनी सारी

जरुरतें माँगनी चाहिए । यहाँ तक कि नमक भी उसी से माँगे और जूते का फीता जब टूट जाए तो वह भी उसी से माँगे))। (त्रिमिजी)

अल्लाह तआला को दुनिया के बादशाहों के समान न समझो कि बड़े बड़े काम तो वे स्वयं करते हैं और छोटे छोटे कार्य नौकरों चाकरों जैसे अन्य लोगों को सौंप देते हैं इस कारण लोगों को छोटे छोटे कामों में इन्हीं से अनुरोध करना पड़ता है । अल्लाह के यहाँ ऐसा कुछ नहीं है बल्कि वह सर्वशक्तिमान तो पलक झपकने में अनगिन्त छोटे बड़ें काम ठीक कर देता है, उस के राज्य में कोई भागीदार और साझी नहीं । इस लिए छोटी से छोटी चीज़ भी उसी से मांगनी चाहिए क्योंकि उस के अतिरिक्त कोई और न छोटी चीज़ दे सकताहै और न बड़ी।

रिशतेदारी काम नहीं आ सकती

عَنْ أَبِى هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ : لَمَّا نَزَلَتْ ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْأَقْرَبِيْنَ﴾ دَعَا النَّبِىُّ ﷺ قَرَابَتَهُ فَعَمَّ وَخَصَّ فَقَالَ : يَا بَنِىْ كَعْبِ ابْنِ لُؤَىٍّ أَنْقِذُوْا أَنْفُسَكُمْ مِّنَ النَّارِ فَإِنِّىْ لاَ أَمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا ؛ أَوْ قَالَ فَإِنِّىْ لاَ أُغْنِىْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئاً ؛ وَيَا بَنِىْ مُرَّةَ بْنِ كَعْبٍ أَنْقِذُوْا أَنْفُسَكُمْ مِّنَ النَّارِ ؛ فَإِنِّى لاَ أُغْنِى عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا ؛ وَيَا بَنِىْ عَبْدِ شَمْسٍ أَنْقِذُوْا أَنْفُسَكُمْ مِّنَ النَّارِ ؛ فَإِنِّى لاَ أُغْنِىْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئاً ؛ وَيَا بَنِىْ عَبْدِ مَنَافٍ أَنْقِذُوْا أَنْفُسَكُمْ مِّنَ النَّارِ ؛ فَإِنِّىْ لاَ أُغْنِىْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا ؛ وَيَا بَنِىْ هَاشِمٍ أَنْقِذُوْا أَنْفُسَكُمْ مِّنَ النَّارِ ؛ فَإِنِّى لاَ أُغْنِىْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئاً ؛ وَيَا بَنِىْ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ أَنْقِذُوْا أَنْفُسَكُمْ مِّنَ النَّارِ ؛ فَإِنِّىْ لاَ أُغْنِىْ عَنْكُمْ مِّنَ

اللّٰهِ شَيْئًا ؛ وَيَا فَاطِمَةُ أَنْقِذِىْ نَفْسَكِ مِنَ النَّارِ ؛ سَلِيْنِى مَا شِئْتِ مِنْ مَّالِىْ فَإِنِّىْ لاَ أُغْنِى عَنْكِ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا . (صحيح بخارى ؛كتاب التفسير ؛ حديث رقم ४७७१وصحيح مسلم ؛ كتاب الايمان ؛ حديث رقم ५०४)

अर्थ : ((हजरत अबुहुरैरा (ﷺ) ने फरमाया जब आयत {وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الاَقْرَبِيْنَ} -अपने क़रीबी रिश्तादारों को डराओ) उतरी तो रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने रिश्तेदारों को बुलाकर फरमाया कि “ ऐ कअब् बिन लुवै की औलाद ! अपनी जानों को जहन्नम की आग से बचाओ , मैं अल्लाह के अज़ाब से तुम्हारे कुछ काम न आ सकूँगा । ऐ मुर्रा बिन कअब् की औलाद ! अपनी जानों को आग से बचाओ , मैं अल्लाह के अज़ाब से तुम्हारे कुछ काम न आ सकूँगा । ऐ अब्दे शम्स की औलाद ! अपनी जानों को आग से बचाओ , मैं अल्लाह के अज़ाब से तुम्हारे कुछ काम न आ सकूँगा । ऐ अब्दे मनाफ की औलाद ! अपनी जानों को जहन्नम की आग से बचाओ , मैं अल्लाह के अज़ाब से तुम्हारे कुछ काम न आ सकूँगा । ऐ हाशिम् की औलाद ! अपनी जानों को जहन्नम की आग से बचाओ , मैं अल्लाह के अज़ाब से तुम्हारे कुछ काम न आ सकूँगा । ऐ अब्दुल् मुत्तलिब ! की औलाद अपनी जानों को आग से बचाओ , मैं अल्लाह के अज़ाब से तुम्हारे कुछ काम न आ सकूँगा । ऐ फातिमा (रजि) अपनी जान को जहन्नम के अज़ाब से बचा ले , तेरी जो इच्छा हो मुझ से मेरा माल लेले , क्योंकि मैं अल्लाह के अज़ाब से तुम्हारे कुछ काम नहीं आऊँगा । (बुखारी)

यानी जो लोग किसी बुजुर्ग (सदाचारी, विनीत) के रिश्तेदार होते हैं , उन्हें बुजुर्गों की सहायता का भरोसा होता है और इसी कारण वे अभिमानी बनकर निडर हो जाते हैं । इसी लिए अल्लाह तआला ने अपने प्रिय पैग़म्बर से फरमाया कि वह अपने रिश्तेदारों को सचेत कर दें । आप ﷺ ने प्रत्येक को ,यहाँ तक कि अपनी लाडली पुत्री फातिमा को भी साफ साफ बता दिया कि रिश्तेदारी का

निभाना केवल उसी चीज़ में सम्भव है जो इन्सान के अपने अधिकार में है । मेरे अधिकार में मेरा माल है , मैं इस के देने में कन्जूसी नहीं करता । परन्तु अल्लाह तआला के यहाँ का मामिला मेरे अधिकार से बाहर है वहाँ किसी की भी सहायता नहीं कर सकता और किसी का भी वकील नहीं बन सकता । प्रत्येक आदमी प्रलय (क़ियामत) के दिन के लिए अपनी अपनी तैयारी कर ले और जहन्नम से बचने का आज ही विचार कर ले । मालूम हुआ कि किसी बुजुर्ग की रिश्तेदारी अल्लाह तआला के यहाँ काम आने वाली नहीं । जब तक इन्सान स्वयं नेक अमल न करे बेड़ा पार होना कठिन है ।

छठवाँ अध्याय

उपासना (इबादत) में शिर्क हराम (निषेध) है

उपासना (इबादत) का अर्थ

उपासना (**इबादत**) उन तमाम कामों को कहा जाता है जिनको अल्लाह तआला ने अपनी आदर तथा सम्मान के लिए नियुक्त फरमाकर बन्दों को सिखाए हैं। यहाँ हमें यह बताना है कि अल्लाह तआला ने अपनी ताज़ीम (आदर तथा सम्मान) के लिए कौन कौन से काम बताए हैं ? ताकि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए वह काम न किए जाएँ और शिर्क से बचा जाए।

उपासना (इबादत) केवल अल्लाह ही के लिए है

अल्लाह तआला ने फरमाया है:

﴿ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦٓ إِنِّى لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾ أَن لَّا تَعْبُدُوٓا۟ إِلَّا ٱللَّهَ ۖ إِنِّىٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾ ﴾ (هود 025-026)

अर्थ : ((और निःसन्देह हम ने नूह अलैहिस्सलाम को उन की क़ौम की तरफ भेजा ताकि वह इस बात की घोषणा करदें कि मैं तुम को इस बात से साफ साफ डराता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की उपासना (**इबादत**) न करो , मुझे तुम पर प्रलय के दिन के दुखदायी यातना का डर है।)) (सूरा हूद २५,२६)

यानी : मुसलमानों और काफिरों के बीच झगड़ा तथा सङ्घर्ष हजरत नूह अलैहिस्सलाम के समय से आरम्भ हुआ है और आज तक चला आ रहा है। अल्लाह के नेक बन्दे उसी समय से यही प्रचार प्रसार करते आऐ हैं कि अल्लाह के आदर तथा सम्मान की तरह किसी अन्य का सम्मान नहीं होना चाहिए तथा जो काम

उसके सम्मान के लिए नियुक्त हैं उन्हें अन्य लोगों के लिए न कीजिए ।

सज्दा केवल अल्लाहके लिए जायज (वैध) है

अल्लाह तआला सूरा फुस्सिलत् में फरमाते हैं ।

﴿ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٧﴾ ﴾ (فصلت 037)

अर्थः ((मत सजदा करो सूर्य को और न चाँद को बल्कि अल्लाह को सजदा करो जिस ने उन को पैदा किया है यदि तुम उसी के बन्दे बनना चाहते हो ।)) (सूरा फुस्सिलत ३७)

इस आयत से मालूम हुआ कि इस्लाम धर्म में यही आदेश है कि सजदा केवल अल्लाह को करना चाहिए । किसी अन्य मख़्लूक़ (सृष्टि) को सजदा न किया जाए । चाहे वह चाँद सूर्य हों या नबी वली हों या जिन्न तथा फरिशते हों । अगर कोई कहे कि पहले धर्मों में मख़्लूक़ (प्राणी) को भी सजदा करना जाईज़ था । उदाहरण के लिए फरिश्तों ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को और हजरत याकूब अलैहिस्सलाम ने हजरत यूसुफ् अलैहिस्सलाम को सजदा किया था । इस लिए अगर हम भी किसी बुजुर्ग को उन के सम्मान के लिए सजदा करें तो क्या हरज है ? याद रखो इस से शिर्क साबित हो जाता है और ईमान का सत्यानास हो जाता है । हजरत आदम अलैहिस्सलाम के धर्म शास्त्र में बहनों से विवाह करना जाईज़ था । फिर इस तरह का प्रमाण देने वाले यदि इसे प्रमाण समझकर अगर अपनी बहनों से विवाह करलें तो क्या हरज है ? मगर इस्लाम धर्म में ऐसा करना ह़राम (वर्जित) है । क्योंकि बहनें सदैव के लिए ह़राम हैं जिन से शादी करना किसी भी सूरत में जाईज नहीं है ।

वास्तव में बात यह है कि बन्दे को अल्लाह का आदेश मानना चाहिए । अल्लाह के आदेश को बिना सङ्कोच के दिल व जान से स्वीकार कर लेना चाहिए और यह प्रमाण नहीं पेश करना चाहिए कि पहले लोगों के लिए तो यह आदेश नहीं था फिर हम पर क्यों लागू किया गया ? ऐसी बातों से आदमी काफिर (नास्तिक) हो जाता है । इस विषय को इस उदाहरण से समझो कि एक बादशाह के यहाँ एक मुद्दत तक एक नियम पर अमल होता रहा । फिर बादशाह ने किसी हिकमत के पेशे नजर उसे मन्सूख़ (समाप्त) करके उसकी जगह दूसरा नियम बना दिया । तो अब इस नए कानून पर अमल जरुरी है । अब अगर कोई यह कहने लगे कि हम तो पहले ही कानून को मानेंगे , नए कानून को नहीं मानते तो ऐसा कहने वाला विद्रोही होगा और विद्रोही की सजा जेलखाना है । इसी तरह अल्लाह के आदेशों का उलङ्घन करने वाले विद्रोहियों के लिए जहन्नम है ।

अल्लाह के सिवा किसी अन्य को पुकारना शिर्क है

अल्लाह तआला ने सूरा जिन्न में फरमाया ।

﴿ وَأَنَّ ٱلْمَسَٰجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا۟ مَعَ ٱللَّهِ أَحَدًا ﴿١٨﴾ وَأَنَّهُۥ لَمَّا قَامَ عَبْدُ ٱللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا۟ يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ قُلْ إِنَّمَآ أَدْعُوا۟ رَبِّى وَلَآ أُشْرِكُ بِهِۦٓ أَحَدًا ﴿٢٠﴾ ﴾ (الجن 018-020)

अर्थः ((और बेशक् मस्जिदें अल्लाह ही की हैं । अतः अल्लाह के साथ किसी अन्य को न पुकारो । और जब अल्लाह का बन्दा उसकी इबादत के लिए खड़ा हुआ तो क़रीब था कि वे भीड़ के भीड़ बन कर् उस पर झुक् पड़ें । आप फरमा दें कि मैं तो अपने रब ही को

पुकारता हूँ और उसके साथ किसी अन्य को शरीक नहीं बनाता ।)) (सूरा जिन्न १८,१९,२०)

यानी जब कोई अल्लाह का बन्दा पवित्र हृदय से अल्लाह तआला को पुकारता है और उस से प्रार्थना करता है तो मूर्ख लोग यह समझने लगते हैं कि यह तो बड़ा पहुँचा हुआ है , ग़ौस एवं कुतुब् है , यह जिस को चाहे दे दे और जिस से जो चाहे छीन ले । इसी आशा में उस के पास ठठ् के ठठ् एकत्रित होकर भीड़ लगा देते हैं कि यह मेरी बिगड़ी बना देगा । अब इस बन्दे का फर्ज (दायित्व) है कि सच्ची बात बयान कर दे कि " आड़े वक़्त् (सङ्कट में) अल्लाह तआला ही को पुकारना चाहिए । लाभ और हानि की आशा अल्लाह ही से करनी चाहिए । क्योंकि इस प्रकार का मामला अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से करना शिर्क है , मैं शिर्क तथा शिर्क करने वाले से अप्रसन्न हूँ । यदि कोई यह चाहे कि इस प्रकार का मामला मुझ से करे और मैं उस से प्रसन्न रहूँ यह कभी भी सम्भव नहीं । और देना लेना अल्लाह का काम है । वही देता है और वही लेता है मेरे हाथ में कुछ नहीं । वही मेरा और तुम्हारा रब है । इस लिए आओ हम सभी तमाम झूठे माबूदों को छोड़कर केवल एक अल्लाह को पुकारें जो सच्चा एवं अकेला पूजनीय है ।

इस आयत से मालूम हुआ कि हाथ बाँधकर खड़ा होना , उसको पुकारना तथा उसका नाम जपना उन कामों में से है जिन को अल्लाह तआला ने केवल अपने सम्मान के लिए विशेष कर रखा हैं , अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से ऐसा मामला करना शिर्क है।

अल्लाह के शआइर (कर्मकाण्ड) का सम्मान

अल्लाह तआला सूरा हज्ज में फरमाते हैं :

﴿ وَأَذِّن فِي ٱلنَّاسِ بِٱلۡحَجِّ يَأۡتُوكَ رِجَالٗا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٖ يَأۡتِينَ

مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿٢٧﴾ لِّيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي
أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّن بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۖ فَكُلُوا مِنْهَا
وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ
وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٩﴾ ﴾ (الحج 027-029)

अर्थ : ((आप लोगों में हज करने की घोषणा कर दें । लोग आप के पास पैदल चलकर तथा दुबले पतले ऊँटों पर सवार होकर दूर दूर से यात्रा करके चले आयेंगे । ताकि अपने लाभ की जगहों पर आ पहुँचें और कुरबानी के (निश्चित) दिनों में अल्लाह तआला ने चौपायों में से जो पशु उन्हें प्रदान किए हैं उन पर अल्लाह का नाम लें । (यानी कुरबानी करें) फिर उस में से स्वयं खाओ और बद्हाल फक़ीर को भी खिलाओ । फिर उन्हें चाहिए कि अपना मैल कुचैल साफ करें और अपनी मन्नतें पूरी करें तथा प्राचीन घर (काबा) का तवाफ (परिक्रमा) करें ।)) (सूरा हज्जः २७,२८, २९)

यानी : अल्लाह तआला ने कुछ जगहें अपने सम्मान के लिए निश्चित कर रखे हैं । जैसे काबा , अरफात , मुज़्दलिफा , मिना , सफा , मरवा , मक़ामे इब्राहीम , मस्जिदे ह़राम , पूरा मक्का बल्कि पूरा ह़रम् । लोगों के दिलों में इन स्थानों की ज़ियारत का ऐसा शौक़ पैदा कर दिया है कि लोग दुनिया के कोने कोने से सिमट् कर, चाहे सवार होकर चाहे पैदल बैतुल्लाह (काबा) की ज़ियारत के लिए दूर दूर से आएँ । यात्रा का कष्ट उठाकर इह़राम की दो चादरें पहन कर एक निश्चित रुप धारण करके वहाँ पहुँचें और अल्लाह तआला के नाम पर वहाँ पशुओं को बलिदान करें और हृदय में अल्लाह का जो सम्मान भरा हो वहाँ पहुँच कर अच्छी तरह प्रकट करें । काबा के द्वार के सामने रो रो कर बिलक् बिलक् कर दुआएँ माँगें । फिर

कोई बैतुल्लाह (काबा) का परदा थामकर रो रो कर अल्लाह से दुआएँ माँग रहा है , कोई ऐतिकाफ में बैठकर रात दिन अल्लाह की इबादत में व्यस्त है , कोई कुरआन की तिलावत् (पाठ) कर रहा है, कोई नवाफिल् में मश्गूल है , कोई काबा का तवाफ कर रहा है । इसी प्रकार हर आदमी विभिन्न प्रकार की इबादतों में व्यस्त रहता है । बहर हा़ल यह सब काम अल्लाह तआला के सम्मान में किए जाते हैं और अल्लाह उन से प्रसन्न होता है और उनको दुनिया तथा आख़िरत का लाभ होता है । अतः इस प्रकार के काम अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के सम्मान में नहीं करने चाहिए क्योंकि ये ह़राम तथा शिर्क हैं । किसी क़ब्र (समाधि) की ज़ियारत के लिए या किसी थान या चिल्ला या ख़ानक़ाह या दरबार या दरगाह पर दूर दराज़ से यात्रा का कष्ट उठाकर आना और मैले कुचैले होकर वहाँ पहुँचना, वहाँ जाकर जानवरों की कुरबानी करना , मन्नतें पूरी करना , किसी घर , क़ब्र , समाधि , दरबार , चिल्ले या थान का तवाफ करना , उस के आस पास के जङ्गल का अदब (आदर) करना (अर्थात वहाँ शिकार न करना , वहाँ के पेड़ों को न काटना , घास न उखाड़ना , और न काटना) तथा इस प्रकार के दूसरे अन्य काम करना और इन से दुनिया व आख़िरत की भलाइयों की आशा करना सब शिर्क है । इन से बचना आवश्यक है । क्योंकि शरीअत ने जिन स्थानों का सम्मान करने का आदेश दिया है उनके अतिरिक्त और स्थानों पर ऐसा करना और अपनी ओर से उसको दीन में सम्मिलित समझना बिद्अत है। इताअत और फरमांबरदारी का मामला अल्लाह ही से करना चाहिए, न कि मख़्लूक़ से।

ग़ैरुल्लाह के नाम की चीज़ हराम है

﴿قُل لَّآ أَجِدُ فِي مَآ أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَىٰ طَاعِمٍ يَطْعَمُهُۥٓ إِلَّآ أَن

يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَّسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنزِيرٍ فَإِنَّهُۥ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا

أُهِلَّ لِغَيْرِ ٱللَّهِ بِهِۦ ۚ فَمَنِ ٱضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ

رَّحِيمٌ ﴿١٤٥﴾ (الأنعام 145)

अर्थ ((आप फरमा दीजिए कि मैं इस वह्‌य में (कुरआन में) जो मुझ पर अवतरित हुई है , कोई चीज़ जिसे खाने वाला खाए , ह़राम नहीं पाता , किन्तु वह चीज़ जो मुरदार है या बहने वाला खून (रक्त) है या सूअर्‌ का गोश्त (माँस) है क्योंकि यह नापाक (अपवित्र) अथवा पाप की चीज़ है कि उसे अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के नाम पर प्रसिद्ध कर दिया गया है । और यदि कोई व्यक्ति मजबूर हो जाए , न तो नाफरमानी करे और न ह़द्‌ (सीमा) से बाहर निकले तो तुम्हारा रब बख़्शने वाला मेहरबान है ।)) (सूरा अल्‌अनआम १४५)

यानी जिस प्रकार सूअर्‌ , खून (रक्त) तथा मुरदार ह़राम एवं अपवित्र हैं इसी प्रकार वह जानवर भी अपवित्र तथा ह़राम हैं जो पाप का रूप धारण कर रहा हो जैसे कोई जानवर अल्लाह के नाम के अतिरिक्त किसी अन्य के नाम पर नियुक्त - नामज़द- कर दिया जाए तो यह जानवर भी ह़राम तथा अपवित्र है । उदाहरणार्थ यह कह दिया जाए कि यह सय्‌यद्‌ अह्‌म्‌दकबीर की गाय है , यह शैख़ सद्दू का बकरा है इत्यादि । इस आयत में इस बात का बयान नहीं कि वह जानवर तभी ह़राम होगा जब ज़ब्ह़ करते समय उस पर अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य का नाम लिया जाए , बल्कि केवल अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के नाम पर नामज़द करने से ही वह जानवर ह़राम तथा अपवित्र हो गया । यदि कोई भी जानवर हो मुर्ग़ी हो या बकरी , ऊँट हो या गाय किसी मख़्लूक़ (सृष्टि) के नाम का कर दिया जाए , चाहे वली के नाम हो या नबी के नाम ,

बाप दादा के नाम का हो या पीर अथवा शैख़ के नाम का हो या परी के नाम का वह एकदम ह़राम तथा अपवित्र है और नाम का करने वाला मुश्रिक् है ।

शासनाधिकार केवल अल्लाह के लिए है

अल्लाह तआला हजरत यूसुफ् अलैहिस्सलाम का वाकिआ बयान करते हुए फरमाते हैं कि उन्हों ने जेल के साथियों से फरमाया ।

﴿ يَٰصَٰحِبَيِ ٱلسِّجۡنِ ءَأَرۡبَابٞ مُّتَفَرِّقُونَ خَيۡرٌ أَمِ ٱللَّهُ ٱلۡوَٰحِدُ ٱلۡقَهَّارُ ﴿٣٩﴾ مَا تَعۡبُدُونَ مِن دُونِهِۦٓ إِلَّآ أَسۡمَآءٗ سَمَّيۡتُمُوهَآ أَنتُمۡ وَءَابَآؤُكُم مَّآ أَنزَلَ ٱللَّهُ بِهَا مِن سُلۡطَٰنٍۚ إِنِ ٱلۡحُكۡمُ إِلَّا لِلَّهِۚ أَمَرَ أَلَّا تَعۡبُدُوٓاْ إِلَّآ إِيَّاهُۚ ذَٰلِكَ ٱلدِّينُ ٱلۡقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكۡثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَعۡلَمُونَ ﴿٤٠﴾ ﴾ (يوسف 039-040)

अर्थ ((ऐ जेल के साथियो क्या अलग अलग अनेक रब अच्छे हैं या एक शक्तिशाली अल्लाह ? अल्लाह के अतिरिक्त जिन जिन की तुम पूजा करते हो वे केवल ऐसे नाम हैं जिनको तुमने और तुम्हारे बाप दादों ने रख लिए हैं , अल्लाह तआला ने उसका कोई प्रमाण नहीं उतारा है , केवल अल्लाह का आदेश चलेगा । उस ने तो यही आदेश दिया है कि केवल उसी की पूजा करो, यही ठोस धर्म है परन्तु अधिकतम लोग नहीं जानते हैं ।)) (सूरा यूसुफ् :३९ , ४०)

एक ग़ुलाम के लिए कई मालिकों का होना कष्टदायक है । यदि उस ग़ुलाम का केवल एक ही मालिक हो जो सर्व शक्तिमान हो तो क्या ही अच्छा है ! अतः मालिक एक ही है और वह केवल अल्लाह की ज़ात है जो मनुष्य की सारी मुरादें , कामनाएँ , आशाएँ पूरी

करता है और उसके सारे बिगड़े काम बना देता है। उस के सामने झूठे मालिकों की कोई हैसियत नहीं , बल्कि वे केवल तुच्छ भावनाएँ तथा विचार हैं , लोगों ने अपने मन से गढ़ लिया है कि वर्षा करना किसी अन्य के अधिकार में है , अनाज पैदा करना किसी और का काम है , सन्तान कोई और देता है ,स्वास्थ्य कोई और , फिर स्वयं ही उनके नाम रख लेते हैं कि फलाने काम के अधिकारी का नाम यह है और फलाने का यह , फिर स्वयं ही उनको उन कामों के अवसर पर पुकारते हैं। धीरे-धीरे एक समय बीत जाने के बाद वह रीति और परम्परा बन जाती है।

मनगढ़त नाम शिर्क हैं

हालांकि अल्लाह के सिवा कौन है और किसका यह नाम पाया जाता है और अगर किसी का यह नाम है तो उसका अल्लाह की इच्छा में कोई हस्तछेप नहीं। सब कामों के मुख़्तार का नाम अल्लाह है और जिस का नाम मुहम्मद या अली है उसको किसी बात का अधिकार नहीं। इस तरह के विचार रखने का अल्लाह ने आदेश नहीं दिया और मख़्लूक़ के आदेश का कोई भरोसा और एतबार नहीं, बल्कि अल्लाह पाक ने इस प्रकार के विचारों को रखने से रोक दिया है, फिर अल्लाह के सिवा वह कौन है जिस के कहने का इन बातों में एतबार किया जाये? असल दीन यही है कि अल्लाह के आदेश पर चला जाए और उसके आदेश के आगे हर आदेश को ठुकरा दिया जाए। परन्तु अधिकतम लोग इस राह से भटक गए और अपने पीरों , इमामों और बुजुगों की राह को अल्लाह की राह से उत्तम और बढ़कर समझते हैं।

मनगढ़न्त रीतियाँ (रसमें) शिर्क हैं

ऊपर गुज़री हुई आयत से मालूम हुआ कि किसी की राह व रसम् (रीति एवं परम्परा) को न मानना और केवल अल्लाह तआला ही

का कानून मानना उन चीजों में से है जिन को अल्लाह तआला ने अपने सम्मान के लिए विशिष्ट कर रखा है ।[1] अब अगर कोई यही मामिला किसी मख़्लूक़ से करेगा तो पक्का मुश्रिक् होगा । अल्लाह का आदेश बन्दों तक केवल रसूल ही के माध्यम से पहुँचना सम्भव है । यदि कोई किसी इमाम ,या मुज्तहिद्या ग़ौस एवं कुतुब् या मोलवी मुल्ला या पीर एवं मशाइख़् या बाप दादा या किसी बादशाह या वज़ीर या पादरी एवं पन्डित की बात को या उनकी रीतियों को अल्लाह तथा रसूल के फरमान से बढ़कर समझे और कुरआन एवं ह़दीस के मुक़ाबले में अपने पीर एवं गुरु , मशाइख् एवं इमामों की बातों को प्रमाण बनाए या नबी को यूँ समझे कि शरीअत् (धर्म शास्त्र) स्वयं उन्हीं के आदेश तथा उपदेश हैं अपनी इच्छा से जो मन में आता था कह देते थे और उस का मानना उनकी उम्मत पर अनिवार्य हो जाता था । तो ऐसे अक़ीदे और ऐसी बातों से शिर्क साबित हो जाता है । बल्कि अक़ीदा यह होना चाहिये कि असल हाकिम अल्लाह तआला है और नबी केवल लोगों को अल्लाह का आदेश बताने वाला होता है । अतः जो बात कुरआन एवं हदीस के मुताबिक़ (अनुकूल) हो उसे मान लिया जाए और जो बात कुरआन तथा हदीस के ख़िलाफ (प्रतिकूल) हो उसे ठुकरा दिया जाए ।

लोगों को अपनी ताज़ीम (आदर तथा सम्मान) के लिए सामने खड़ा रखना मना है ।

---

[1] अर्थ यह है कि अल्लाह के आदेश के अतिरिक्त किसी अन्य का आदेश प्रमाण नहीं बन सकता । जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के आदेश या उपदेश तथा राह व रसम् को प्रमाण समझे तो उस पर शिर्क साबित हो जाता है । यदि मृत्यु से पहले पहले उसने सच्ची तौबा न की तो वह सदैव के लिए नरक में जाएगा ।

((عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَّتَمَثَّلَ لَهُ الرِّجَالُ قِيَاماً فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ))

(سنن ترمذی ، أبواب الادب ، حديث رقم ढठटण)

अर्थ :– ((हजरत मुआविया (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ((जो व्यक्ति इस बात से प्रसन्न हो कि लोग उस के सामने चित्र की तरह खड़े रहैं तो ऐसा व्यक्ति अपना ठिकाना जहन्नम में बनाले।)) (त्रिमिजी)

यानी जो व्यक्ति यह चाहता हो कि लोग उस के सामने उसके आदर तथा सम्मान में चित्र की तरह हाथ बाँधकर खड़े रहैं , न हिलैं जुलैं , न इधर उधर देखें ओर न बोलें चालें बल्कि बुत् बने हुए खड़े रहैं तो ऐसा व्यक्ति जहन्नमी है । क्योंकि वह उलूहियत् (खुदाई) का दावा कर रहा है, इस आधार पर कि जो आदर तथा सम्मान के कार्य अल्लाह की ज़ात के लिए विशेष हैं वही अपने लिए चाहता है । नमाज़ में नमाज़ी हाथ बाँधकर चुप चाप इधर उधर देखे बग़ैर खड़े होते हैं और इस तरह खड़ा होना केवल अल्लाह की जात के लिए विशेष है । मालूम हुआ कि किसी के सामने आदर एवं सम्मान के उद्देश्य से खड़ा होना ना जाईज् तथा शिर्क है ।

बुतों (मूर्तियों) और थानों की पूजा शिर्क है ।

((عَنْ ثَوْبَانَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ :لاَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتَّى تَلْحَقَ قَبَائِلُ مِنْ أُمَّتِىْ بِالْمُشْرِكِيْنَ وَحَتَّى يَعْبُدُوْا الاَوْثَانَ)) (سنن ترمذی ، أبواب الفتن ، حديث رقم ढढढद्ध)

अर्थ:– ((हजरत सौबान (رضي الله عنه) कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया (क़ियामत उस समय तक नहीं आ

सकती जब तक कि मेरी उम्मत के क़बीले (समुदाय) मुश्रिकों से न जा मिलें और मूर्ति पूजा न करने लगें।))

बुत् (मूर्ति) दो तरह के होते हैं। (१) किसी के नाम की चित्र या या मूर्ति बनाकर उसको पूजा जाए इस को अरबी में सनम् (मूर्ति) कहा जाता है। (२) किसी थान या पेड़ या पत्थर या लकड़ी या काग़ज़् को किसी के नाम का नियुक्त करके पूजा जाए तो इसको अरबी में वसन् कहते हैं।

क़बर (समाधि) चिल्ला, क़बर का रूप, छड़ी, किसी के नाम की लाठी, ताज़िया, अलम्, शद्दा,[1] इमाम क़ासिम् एवं शैख अब्दुल्क़ादिर जीलानी की मेंहदी, इमाम का चबूतरा और उस्ताद, गुरु एवं पीरों के बैठने के स्थान ये सब वसन् में दाख़िल् (सम्मिलित) हैं। इसी प्रकार शहीद के नाम का ताक़्, निशान (चिन्ह) और तोप जिस पर बकरा चढ़ाया जाता है तथा इसी प्रकार वह स्थान जो रोगों के नाम से प्रसिद्ध हैं जैसे सीतला, मसानी, भवानी, काली, कालिका और ब्राही[2] आदि के नाम से कुछ स्थान प्रसिद्ध कर दिए गए हैं ये सब वसन् हैं। सनम् और वसन् दोनों की पूजा से शिर्क साबित हो जाता है। अल्लाह के नबी ﷺ ने सूचित किया है कि जो मुसलमान क़ियामत के क़रीब मुश्रिक् हो जायेंगे उनका शिर्क इसी प्रकार का होगा।

---

[1] वह झण्डा जो कर्बला के शहीदों की याद में ताजिया के साथ निकालते हैं।

[2] ये हिन्दुओं की विभिन्न देवियाँ हैं सीतला चेचक् की देवी है, चेचक निकलने पर इस बीमारी से मुक्ति के लिए इस देवी की पूजा की जाती है। **मसानी** : – हिन्दू धारणा अनुसार सीतला की सात बहनें थीं जिन में से एक का नाम मसानी था, उसे खसरा की देवी समझा जाता था। भवानी और कालिका भी हिन्दुओं की विभिन्न देवियाँ हैं। **ब्राही**:– हिन्दु आस्था अनुसार बीमारियों की एक देवी का नाम है जिस की पूजा की जाती है ताकि बीमारियाँ दूर हो जाएँ। सम्भव है कि किसी के दिल में यह प्रश्न उत्पन्न हो कि शाह शहीद ने हिन्दुओं की रीतियों का वर्णन क्यों किया ? उत्तर यह है कि ये रीतियाँ हिन्दुओं का अनुसरण करते हुए अनेक स्थानों पर मुसलमानों ने भी ग्रहण कर लिया था।

अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए बलिदान करना अल्लाह की लानत् (अभिशाप) का कारण है

عن ابي الطُّفَيْلِ أَنَّ عَلِيًّارَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ أَخْرَجَ صَحِيْفَةً فِيْهَا : لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ ذَبَحَ لِغَيْرِ اللّٰهِ)) (صحيح مسلم، كتاب الاضاحى ، حديث رقم 1978)

हजरत अबुत्तुफैल् (ﷺ) से रिवायत है कि हजरत अली (ﷺ) ने एक किताब निकाली जिस में यह हदीस थी कि ((जिस ने अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए जानवर ज़ब्ह़ (बलिदान) किया तो ऐसे व्यक्ति पर अल्लाह की लानत् (अभिशाप) है ।)) (मुस्लिम)

यानी जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के नाम पर जानवर ज़ब्ह़ करे वह मल्ऊन् है । हजरत अली (ﷺ) ने एक कापी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् की कई ह़दीसें लिख रखी थीं उन में यह ह़दीस भी थी । मालूम हुआ कि जानवर अल्लाह ही का नाम लेकर ज़ब्ह़ करने से ह़लाल होता है । अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के नाम पर जानवर ज़ब्ह़ करना शिर्क है और जानवर भी ह़राम हो जाता है । इसी प्रकार वह जानवर भी ह़राम होता है जो अल्लाह के सिवा किसी अन्य के नाम पर कर दिया गया हो चाहे उस पर ज़ब्ह़ के समय अल्लाह का ही नाम लिया गया हो ।

क़ियामत् के क़रीब की निशानियाँ

((عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: لاَ يَذْهَبُ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ حَتّٰى تُعْبَدَ اللاَّتُ وَالْعُزّٰى ، فَقُلْتُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ إِنْ كُنْتُ لَأَظُنُّ حِيْنَ أَنْزَلَ اللّٰهُ ﴿هُوَ الَّذِيْ أَرْسَلَ رَسُوْلَهُ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ

الْمُشْرِكُوْنَ ﴾أَنَّ ذٰلِكَ تَامٌّ ، قَالَ إِنَّهُ سَيَكُوْنُ مِنْ ذٰلِكَ مَا شَاءَ اللّٰهُ ، ثُمَّ يَبْعَثُ اللّٰهُ رِيْحًا طَيِّبَةً فَتُوَفِّيْ كُلَّ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ مِنْ إِيْمَانٍ ، فَيَبْقَى مَنْ لاَ خَيْرَ فِيْهِ فَيَرْجِعُوْنَ اِلَى دِيْنِ آبَائِهِمْ))

(صحيح مسلم ، كتاب الفتن ، حديث رقم ٢٩٠٧)

अर्थ :– ((हजरत आइशा (रजि) ने फरमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना आप ﷺ फरमा रहे थे कि :((दिन रात समाप्त न होंगे (अर्थात क़ियामत उस समय तक न आएगी) जब तक कि लात एवं उज़्ज़ा की पूजा पुनः न शुरु हो जाए । मैं ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल ! जब अल्लाह तआला ने यह आयत " अल्लाह ने अपना रसूल मार्गदर्शन एवं सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि इस्लाम धर्म को तमाम धर्मों पर ग़ालिब करदे चाहे बहुदेव वादियों को बुरा ही क्यों न लगे)) उतारी थी तो मुझे पक्का विशवास यही था कि प्रलय के दिन तक दीन ऊँचा रहेगा । यह सुनकर आप ﷺ ने फरमाया कि जब तक अल्लाह तआला चाहे गा दीन ऊँचा रहेगा फिर अल्लाह तआला एक पवित्र एवं स्वच्छ हवा (पवन) भेजेगा वह हर उस आदमी की जान निकाल लेगी जिस के दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा । फिर केवल बुरे लोग रह जाएँगे और अपने बाप दादा के दीन की ओर लोट जाएँगे । (मुस्लिम)

यानी हजरत आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने सूरा तौबा वाली इस आयत से यह समझा था कि दीने इस्लाम क़यामत तक ऊँचा रहेगा । आप ﷺ ने फरमया कि ऊँचा उस समय तक रहेगा जब तक अल्लाह को मन्जूर होगा फिर अल्लाह पाक एक पाकीज़ा हवा चलायेगा जिस से सब नेक लोग , जिन के दिलों में थोड़ा सा भी ईमान होगा मर जायेंगे और केवल बेदीन (अधर्मी) बाक़ी रह जायेंगे । कुरआन व सुन्नत की पैरवी नहीं करेंगे बल्कि बाप दादों की

रीतियों की ओर लपकेंगे । फिर जो मुश्रिकों का मार्ग अपनाएगा अवश्य मुशरिक् हो जाएगा । मालूम हुआ कि आख़िरी ज़माने में पुराना शिर्क भी फैल जाएगा । आज मुसलमानों के दरमियान नया तथा पुराना हर क़िस्म का शिर्क मौजूद है । आप ﷺ की पेशीनगोई (भविष्यवाणी) सामने आ चुकी है । मुसलमान नबी , वली , इमाम , शहीद के साथ शिर्क का व्यवहार कर रहे हैं । इसी प्रकार पुराना शिर्क भी फैल रहा है । बहुत सारे मुसलमान काफिरों तथा मुश्रिकों की रीतियों पर चल रहे हैं जैसे पण्डित से तक़दीर का हाल पूछना , फाल खोलवाना , बुरी फाल लेना , फलाँ समय को बेहतर और फलाँ को मन्हूस समझना , सीतला और मसानी को पूजना , हनुमान , नोना चमारी[1] और कलुवा पीर को पुकारना । होली , दीवाली , नौ रोज़ और महरजान[2] के त्यौहारों को मनाना , चाँद का बुर्ज अक़रब् में दाख़िल होने को मन्हूस समझना आदि । ये सारी रीतियाँ हिन्दुओं और मुशरिकों की हैं जो मुसलमानों में फैली हुई हैं । मालूम हुआ कि मुसलमानों में शिर्क का द्वार इस कारण खुलेगा कि वे क़ुरआन एवं ह़दीस को छोड़कर बाप दादा की बनाई हुई रीतियों को अपनाएँगे ।

थान पूजा तुच्छ लोगों का काम है

((عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ يَخْرُجُ الدَّجَّالُ فِىْ أُمَّتِي فَيَمْكُثُ أَرْبَعِيْنَ (لاَ اَدْرِي : اَرْبَعِيْنَ يَوْمًا أَوْ اَرْبَعِيْنَ شَهْرًا أَوْ اَرْبَعِيْنَ عَامًا) فَيَبْعَثُ اللّٰهُ عِيْسَى بْنَ مَرْيَمَ

---

[1] लोना या नोना चमारी (चमाइन्)बङ्गाल की प्रसिद्ध जादूगर्नी थी ।
[2] नौ रोज और महरजान पारसियों की ईदों के नाम हैं ।

كَأَنَّهُ عُرْوَةُ بْنُ مَسْعُوْدٍ فَيَطْلُبُهُ فَيُهْلِكُهُ ،ثُمَّ يَمْكُثُ النَّاسُ سَبْعَ سِنِيْنَ ، لَيْسَ بَيْنَ اثْنَيْنِ عَدَاوَةٌ ، ثُمَّ يُرْسِلُ اللّٰهُ رِيْحًا بَارِدَةً مِنْ قِبَلِ الشَّامِ فَلاَ يَبقَى عَلَى وَجْهِ الاَرْضِ أَحَدٌ فِى قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ خَيْرٍ أَوْ إِيْمَانٍ إِلاَّ قَبَضَتْهُ حَتَّى لَوْ أَنَّ اَحَدَكُمْ دَخَلَ فِىْ كَبِدِ جَبَلٍ لَدَخَلَتْهُ عَلَيْهِ حَتَّى تَقْبِضَهُ ، قَالَ سَمِعْتُهَا مِنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ قَالَ: فَيَبْقَى شِرَارُ النَّاسِ فِى خِفَّةِ الطَّيرِ وَأَحْلاَمِ السِّبَاعِ ، لاَيَعْرِفُونَ مَعْرُوْفًا وَلاَ يُنْكِرُوْنَ مُنْكَرًا ، فَيَتَمَثَّلَ لَهُمُ الشَّيطَانُ فَيَقُوْلُ :أَلاَ تَسْتَجِيْبُوْنَ ؟ فَيَقُولُونَ فَمَا تَأْمُرُنَا ؟ فَيَأْمُرُهُمْ بِعِبَادَةِ الْاَوْثَانِ ، وَهُمْ فِىْ ذَلِكَ دَارٌ رِزْقُهُمْ حَسَنٌ عَيْشُهُمْ)) (صحيح مسلم ، كتاب الفتن ، حديث رقم ٢٩٤٠)

अर्थ :– ((हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया (मेरी उम्मत में दज्जाल जाहिर होगा और चालीस (दिन,महीने या साल) ठहरेगा , फिर अल्लाह तआला उरवा बिन् मस्ऊद (रजि) के रूप में हजरत ईसा अलैहिस्सलाम को भेजेगा । आप उसको तलाश करके मार डालेंगे । फिर सात साल तक लोग ऐसी आराम व चैन की जिन्दगी गुजारेंगे कि किसी दो आदमियों के दरमियान कोई दुश्मनी नहीं होगी । फिर अल्लाह तआला शाम देश की ओर से शीतल पवन भेजेगा और इस धर्ती पर उस समय जिस के दिल में एक राई के दाने के बराबर (अर्थात एक कण के समान) भी कोई भलाई या ईमान होगा तो उसको वह हवा अल्लाह के आदेश से मार डालेगी । यहाँ तक कि तुम में से कोई व्यक्ति यदि किसी पहाड़ के गुफा में घुस जाएगा तो वह हवा उसके पीछे घुसकर उसे मार डालेगी)) हजरत अब्दुल्लाह (رضي الله عنه)

फरमाते हैं कि यह बात मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से स्वयं सुनी है । फिर आप ﷺ ने फरमाया कि (नेक लोगों की मृत्यु के पश्चात) केवल बुरे लोग जो मूर्खता में परिन्दों की तरह और दरिन्दों की तरह फाड़ खाने वाले[1] रह जाएँगे न अच्छी बात को अच्छा समझेंगे और न बुरी बात को बुरा । फिर मनुष्य के भेष में शैतान उन के पास आकर कहेगा तुम मेरी बात क्यों नहीं मानते ? वे पूछेंगे आप हमें क्या आदेश देते हैं ?अतः वह उन्हें थानों , मूर्तियों की पूजा का आदेश देगा और वे उन्हीं कामों में मगन् होंगे और उन्हें अधिक रोज़ी विस्तार रुप से मिल रही होगी और ज़िन्दगी आराम से गुज़र रही होगी ।)) (मुस्लिम)

यानी आख़िरी ज़माने में ईमानदार लोग ख़त्म हो जाएँगे केवल बेईमान और मूर्ख लोग रह जाएँगे जो दूसरों का माल हड़प् करेंगे और बेहया व बेशरम् बन कर घूमेंगे , भलाई एवं बुराई में कुछ भी अन्तर न समझेंगे । फिर शैतान एक बुज़ुर्ग आदमी की शकल में आकर उन्हें समझाएगा कि देखो बेदीनी बड़ी बुरी बात है , दीनदार बनो । अतः उसके कहने सुनने समझाने बुझाने से उनके अन्दर दीन का शौक़ पैदा होगा । परन्तु क़ुरआन एवं ह़दीस पर नहीं चलेंगे बल्कि अपनी बुद्धि से दीनी बातें तराशेंगे और शिर्क में गिरफ्तार हो जाएँगे । किन्तु इस अवस्था में उनकी रोज़ी में बहुत अधिक वृद्धि होगी और ज़िन्दगी बड़े सुख चैन तथा आराम से गुज़र रही होगी । वह समझेंगे कि हमारी राह दुरुस्त है , अल्लाह तआला हम से प्रसन्न है इसी कारण हमारी ह़ालत् संवर गई है यह सोचकर और अधिक शिर्क में डूबेंगे । इस लिए मुसलमानों को अल्लाह से डरना चाहिए कि वह कभी ढील देकर भी पकड़ता है । अधिकांश ऐसा

---

[1] अर्थात लोग उदण्डता और अपराध फैलाने तथा बेहयाई बद्कारी करने में परिन्दों की तरह तेज़ रफ्तार जब कि अत्याचार एवं रक्तपात में हिंसक पशुओं की तरह निडर होंगे ।

होता है कि इन्सान शिर्क में ग्रस्त होता है और अल्लाह के अतिरिक्त अन्य से मुरादें माँगता है फिर भी अल्लाह तआला उसकी परीक्षा के लिए उसकी मुरादें पूरी कर देता है । परन्तु वह इन्सान यह सोचता है कि मैं सच्ची राह पर हूँ वर्ना मुरादें पूरी न होतीं । अतः मुरादों के मिलने तथा न मिलने को आधार मत बनाओ । और अल्लाह के सच्चे दीन अर्थात तौहीद को मत छोड़ो ।

इस हदीस से मालूम हुआ कि इनसान कितना ही ढीट बन जाए, कितने ही गुनाहों में डूब जाए, सिर से पैर तक बेहया बन जाए, पराया धन लील जाने में लज्जा न आए, बुराई और भलाई में अन्तर न करे मगर फिर भी शिर्क करने से और ग़ैरूल्लाह को मानने से बेहतर है, क्योंकि शैतान वह बातें छुड़ाकर ये बातें सिखाता है।

बुतों का तवाफ

((عَنْ أَبِی هُرَیْرَةَ ﵁ قَالَ :قَالَ رسولُ اللّٰهِ ﷺ لاتَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَضْطَرِبَ أَلْيَاتُ نِسَاءِ دَوْسٍ حَوْلَ ذِی الْخَلَصَةِ)) (صحیح بخاری ،برقم ठज्ञज्ञट وصحیح مسلم برقم द्दढण्ट)

अर्थ :– ((हज़रत अबू हुरैरा (﵁) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि क़ियामत उस वक्त तक नहीं आएगी जब तक कि जुल्ख़लसा बुत् (मूर्ति) के चारों तरफ दौस समुदाय की औरतों के चूतड़ न हिलने लगें))। (अर्थात जुल्ख़लसा नामक मूर्ति की परिक्रमा करेंगी) (बुखारी तथा मुस्लिम)

अरब में एक क़ौम थी जिस को दौस कहा जाता था । शिर्क तथा कुफ्र के ज़माने में उनका एक बुत् था जिसको जुल्ख़लसा कहा जाता था । रसूलुल्लाह ﷺ के जीवन काल ही में उस को तोड़ दिया गया था । आप ﷺ ने भविष्यवाणी की कि जब क़ियामत् क़रीब होगी तो लोग उस बुत् को फिर मानने लगेंगे और दौस की

महिलायें उसकी परिक्रमा करेंगी जिस के कारण उन के चूतड़ हिलेंगे। मालूम हुआ कि बैतुल्लाह (काबा) के अतिरिक्त किसी अन्य घर का तवाफ करना शिर्क और काफिरों तथा मुशरिकों की रीति एवं परम्परा है।

सातवाँ अध्याय

रस्म व रिवाज में शिर्क करना हराम है

इस अध्याय में उन आयतों तथा हदीसों का बयान है जिन से यह साबित होता है कि जिस तरह इन्सान दुनियावी कामों में विभिन्न प्रकार से अल्लाह तआला का आदर एवं सम्मान करता है ऐसा मामला अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के साथ न किया जाए।

शैतान की चाल

﴿ إِن يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦٓ إِلَّآ إِنَٰثًا وَإِن يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَٰنًا مَّرِيدًا ﴿١١٧﴾ لَّعَنَهُ ٱللَّهُ ۘ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ﴿١١٨﴾ وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَءَامُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ ءَاذَانَ ٱلْأَنْعَٰمِ وَلَءَامُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ ٱللَّهِ ۚ وَمَن يَتَّخِذِ ٱلشَّيْطَٰنَ وَلِيًّا مِّن دُونِ ٱللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِينًا ﴿١١٩﴾ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ ٱلشَّيْطَٰنُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾ ﴾ (النساء 117-120)

अर्थः-((ये मुश्रिक् अल्लाह को छोड़कर औरतों को पुकारते हैं और वास्तव में ये केवल सरकश् शैतान को ही पुकारते हैं। जिस पर अल्लाह ने लानत की है और उस ने यह कह रखा है कि तेरे बन्दों में से एक निश्चित भाग मैं ले कर रहूँगा। (अर्थात उन्हें अपना ताबेदार बना लूँगा) और मैं उन्हें पथभ्रष्ट करता रहूँगा और उन्हें तुच्छ भावनाओं में डाल दूँगा। और उन्हें मैं आदेश दूँगा तो

वह जानवरों के कान काट डालेंगे और मैं उन्हें आदेश दूँगा तो अल्लाह के बनाए हुए रुप को बदल डालेंगे । और जो अल्लाह को छोड़कर शैतान को मित्र बनाएगा वह अत्यन्त घाटे में पड़ गया । शैतान उन को (झूठा) वचन देता है और सब्ज़ बाग़ दिखाता है और वास्तव में शैतान उन से वादा करके केवल धोखा दे रहा है ।)) (सूरा निसाः ११७ से १२०)

यानी जो लोग अल्लाह के अतिरिक्त अन्य लोगों को पुकारते हैं वे अपने विचार में नारियों को पुकारते हैं । कोई तो हजरत बीबी को , कोई बीबी आसिया को , कोई बीबी उतावली को , कोई लाल परी को , कोई सियाह परी को , कोई सीतला को , कोई मसानी को और कोई काली को पूजता है।। यह सब केवल खयालात हैं वर्ना इनकी ह़क़ीक़त कुछ भी नहीं । न कोई नारी न कोई नर केवल खाम-खयाली और शैतानी वसूवसा है जिस को पूज्य ठहरा लिया गया है । और यह जो कभी कभी बोलता है और कभी कोई तमाशा भी दिखा देता है वह शैतान है ।

वास्तव में मुश्रिकों की समुचित उपासनाएँ शैतान के लिए हो रही हैं । ये अपने विचार अनुसार नज़्र व नियाज़ तथा भेंट उपहार नारियों को देते हैं परन्तु वास्तव में उसे शैतान उचक लेता है । उन्हें इन बातों से न धार्मिक लाभ मिलता है और न दुनियावी , क्योंकि शैतान तो अल्लाह के दरबार से भगाया हुआ है इस कारण उस से दीनी लाभ तो होने से रहा । फिर यह तो मानव का शत्रु है उन का कब भला चाहेगा ? बल्कि यह तो अल्लाह के सामने कह चुका है कि मैं तेरे बहुत से बन्दों को अपना बन्दा बना लूँगा । उन को ऐसा पथभ्रष्ट करुँगा और उन की अक़्लें ऐसी मारुँगा कि अपने ही विचारों , भावनाओं को मानने लगेंगे और मेरे नाम के जानवर नियुक्त करेंगे जिन पर मेरे लिए भेंट चढ़ाने का निशान (चिन्ह) होगा। जैसे उस का कान चीर डालेंगे या काट डालेंगे या उसके गले में पट्टा डालेंगे । माथे पर मेंहदी लगा देंगे , मुँह पर सेहरा बाँधेंगे ,

मुँह के अन्दर पैसा रख देंगे । मतलब यह कि किसी भी जानवर पर इस बात का कोई भी चिन्ह लगा दीजिए कि यह फलाने की भेंट है तो इसी में सम्मिलित है । शैतान यह भी कह आया है कि मेरे प्रभाव से लोग अल्लाह तआला की बनाई हुई शक्ल एवं रुप को बिगाड़ डालेंगे । कोई किसी के नाम की चोटी रख लेगा , कोई किसी के नाम पर नाक या कान छेदवा लेगा , कोई दाढ़ी मुँडवाएगा , कोई भवें और पलकें साफ करके फक़ीरी जताएगा । ये सब शैतानी बातें हैं और इस्लाम के विरुद्ध हैं । अतः जिस ने अल्लाह जैसे कृपालु तथा दयालु को छोड़कर शैतान जैसे दुश्मन की राह पकड़ी तो उस ने स्पष्ट धोखा खाया । क्यों कि पहली बात तो यह है कि शैतान हमारा दुश्मन है और दूसरी बात यह है कि उस में वसवसा डालने के अतिरिक्त कोई शक्ति नहीं । कुछ झूठे वचन देकर और सब्ज़ बाग़ दिखा कर आदमी को बहला देता है कि फलाने को मानेंगे तो यह होगा और फलाने को मानोगे तो यूँ होगा और लम्बी लम्बी कामनाएँ पैदा करता है कि यदि इतने पैसे हों तो ऐसा बाग़ तैयार हो जाएगा , एक सुन्दर भवन बन जाएगा । परन्तु ये तो हाथ नहीं लगते और ये कामनाएँ पूरी भी नहीं होतीं इस लिए आदमी घबरा कर अल्लाह तआला को भूलकर अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की तरफ दौड़ने लगता है और होता वही है जो अल्लाह ने भाग्य में लिख दिया है । किसी के मानने या न मानने से कुछ नहीं होता । बल्कि यह सब केवल शैतानी भ्रम और उसकी मक्कारी , छल फरेब एवं धोखा बाज़ी है । इन बातों का परिणाम यह होता है कि आदमी शिर्क में ग्रस्त होकर जहन्नमी बन जाता है, और शैतानी जाल में इस बुरी तरह से फंस जाता है कि लाख हाथ पाँव मारे मगर छुटकारा नही मिलता ।

सन्तान के विषय में शिर्क की रस्में (रीतियाँ)

अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿ هُوَ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَٰحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۖ فَلَمَّا تَغَشَّىٰهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِۦ ۖ فَلَمَّآ أَثْقَلَت دَّعَوَا ٱللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ ءَاتَيْتَنَا صَٰلِحًا لَّنَكُونَنَّ مِنَ ٱلشَّٰكِرِينَ ﴿١٨٩﴾ فَلَمَّآ ءَاتَىٰهُمَا صَٰلِحًا جَعَلَا لَهُۥ شُرَكَآءَ فِيمَآ ءَاتَىٰهُمَا ۚ فَتَعَٰلَى ٱللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٩٠﴾ ﴾ (الأعراف 189-190)

अर्थः– ((उस ने तुम को एक जान से पैदा किया और उस से उस की बीवी पैदा की , ताकि उस से चैन पाए । फिर जब उस ने उस से सम्भोग कर लिया तो उसको गर्भ रह गया । वह उसे उठाये चलती फिरती रही , फिर जब भारी हो गई तो दोनों ने अपने रब को पुकारा कि यदि तू हमें नेक सन्तान देगा तो हम तेरे शुक्र गुज़ार होंगे । फिर जब अल्लाह ने उन को नेक बच्चा दिया तो उस बच्चे में अल्लाह का शरीक बनाने लगे । उन के शिर्क से अल्लाह ऊंचा और महान है ।)) (सूरा अल्आराफ १८९–१९०)

यानी शुरु में भी अल्लाह ही ने मनुष्य को पैदा किया था तथा उसी ने पत्नी भी प्रदान की और पति पत्नी में प्रेम दिया । परन्तु मनुष्य का ह़ाल यह है कि जब जब सन्तान की आशा हुई तो दोनों पति एवं पत्नी मिलकर अल्लाह से प्रार्थना करने लगे कि यदि तन्दुरुस्त और नेक बच्चा तू हमें प्रदान कर दे तो हम तेरा बहुत ही उपकार मानेंगे और तेरे शुक्र गुज़ार होंगे । परन्तु जब अल्लाह ने इच्छानुसार बच्चा प्रदान कर दिया तो अल्लाह को छोड़कर अन्य लोगों को मानने लगे और उन के लिए भेंट उपहार देने लगे । कोई बच्चा को किसी की क़बर (समाधि) पर ले गया, कोई किसी के थान पर , किसी ने किसी के नाम की चोटी रख ली , किसी ने बद्धी

पहना दी, किसी ने बेड़ी[1] डाल दी, किसी ने किसी का फक़ीर बना दिया और नाम भी रखे तो शिर्क वाले जैसे नबी बख़्श , अली बख़्श , इमाम बख़्श , पीर बख़्श ,सीतला बख़्श , गङ्गा दास , कोई जमुना दास आदि । अल्लाह तो इन नियाज़ों से बेपरवाह है मगर इन नादानों का ईमान जाता रहा।

खेती बाड़ी में भी शिर्क हो सकता है

﴿ وَجَعَلُواْ لِلَّهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ ٱلْحَرْثِ وَٱلْأَنْعَٰمِ نَصِيبًا فَقَالُواْ هَٰذَا لِلَّهِ بِزَعْمِهِمْ وَهَٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۖ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى ٱللَّهِ ۖ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَىٰ شُرَكَآئِهِمْ ۗ سَآءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴾ (الأنعام 136)

अर्थ :– ((और ये मुशरिक लोग उन चीज़ों में से जो अल्लाह ने पैदा की हैं , अर्थात खेती और जानवरों में से अल्लाह के लिए एक भाग लगा चुके हैं । और अपने विचार से कहते हैं कि यह तो अल्लाह का है और ये हमारे शरीकों का । फिर जो उन के शरीकों का है वह अल्लाह को नहीं पहुंचता और जो अल्लाह का है वह उन के शरीकों को मिल जाता है । ये जो अपने मन मानी निर्णय कर रहे हैं बहुत ही बुरा है । (अल्अनआम १३६)

यानी तमाम अनाज , ग़ल्ले और जानवर अल्लाह ही ने पैदा किए हैं फिर मुश्रिक् लोग जिस तरह उन में से अल्लाह तआला

---

[1] मन्नत का डोरा या ज़ंजीर, जब मन्नत का समय पूरा होजाता है तो नज़्र व नियाज़ के पश्चात बेड़ी उतारते हैं, उसे ''बेड़ी बढ़ाना'' कहते हैं।

की नियाज़ निकालते हैं वैसे ही अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के लिए भी नियाज़ निकालते हैं। जब कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की नियाज़ में जो आदर तथा सम्मान करते हैं वह अल्लाह की नियाज़ में नहीं बजा लाते।

चौपायों में भी शिर्क हो सकता है।

﴿ وَقَالُوا۟ هَٰذِهِۦٓ أَنْعَٰمٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَآ إِلَّا مَن نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَٰمٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَٰمٌ لَّا يَذْكُرُونَ ٱسْمَ ٱللَّهِ عَلَيْهَا ٱفْتِرَآءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيهِم بِمَا كَانُوا۟ يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾ ﴾ (الأنعام 138)

अर्थ ((और वह अपने मन मानी कहते हैं कि यह जानवर और खेती अछूती है , इसे कोई न खाए सिवाए उस के जिसे हम चाहें। कुछ जानवरों की सवारी मना है और कुछ जानवरों पर अल्लाह का नाम नहीं लेते। ये सब अल्लाह पर झूठ बांधते हैं, शीघ्र ही अल्लाह तआला उनको उनके झूठ बांधने की सज़ा देगा।)) (अल्अन्आम: १३८)

यानी लोग केवल अपने विचार एवं मन से कह देते हैं कि फलाँ चीज़ अछूती है, उसको केवल फलाँ आदमी खा सकता है और फलाँ नहीं खा सकता। कुछ जानवरों पर लादते नहीं और सवारी भी नहीं करते कि यह फलाँ की नियाज़ का जानवर है, इस का आदर एवं सम्मान करना चाहिए। और कुछ जानवरों को अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के नाम पर नियुक्त कर देते हैं कि इन कामों से अल्लाह प्रसन्न होगा और मुरादें पूरी कर देगा। परन्तु उन के ये विचार और काम झूठे हैं जिन की वे अवश्य सज़ा पाएँगे।

और अल्लाह तआला ने फरमया है:

﴿ مَا جَعَلَ ٱللَّهُ مِنۢ بَحِيرَةٍ وَلَا سَآئِبَةٍ وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ ۙ وَلَٰكِنَّ

ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ يَفْتَرُونَ عَلَى ٱللَّهِ ٱلْكَذِبَ وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٣﴾ ﴾

(المائدة 103)

अर्थ ((अल्लाह ने न बह़ीरा को न साइबा को न वसीला को और न ह़ामी को जाईज़् किया है, परन्तु काफिर झूठी बातें अल्लाह के ज़िम्मा लगाते हैं और अधिकतम बुद्धिहीन हैं ।))

जो जानवर किसी के नाम का कर देते तो उस का कान चीर देते थे, उस को बह़ीरा कहते थे । साँड को साइबा कहा जाता था । जिस जानवर के बारे में यह मन्नत मानी जाती कि यदि उस को नर बच्चा पैदा हुआ तो उस को नियाज़ में दे दिया जाएगा । फिर उस के नर और मादा दोनों बच्चे पैदा होते तो नर को भी नियाज़ में न देते । ,उन दोनो बच्चों को वसीला कहा जाता था । और जिस जानवर से दस बच्चे पैदा हो जाते थे उस पर सवार होना और लादना छोड़ देते थे । उस को ह़ामी कहा जाता था । अल्लाह तआला ने फरमाया कि ये सब बातें अल्लाह की तरफ से नहीं बल्कि मन गढ़न्त हैं । मालूम हुआ कि किसी जानवर को किसी के नाम का ठहरा देना और उस पर चिन्ह लगा देना और यह निश्चित कर देना कि फलाँ की नियाज़ गाय, फलाँ की बकरी और फलाँ की मुर्ग़ी ही होती है । ये सब जाहिलाना रीतियाँ हैं और इस्लाम धर्म के विरुद्ध हैं ।

ह़लाल एवं ह़राम में अल्लाह पर झूट गढ़ना

अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿ وَلَا تَقُولُواْ لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ ٱلْكَذِبَ هَٰذَا حَلَٰلٌ وَهَٰذَا

حَرَامٌ لِّتَفْتَرُواْ عَلَى ٱللَّهِ ٱلْكَذِبَ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى ٱللَّهِ ٱلْكَذِبَ لَا

يُفۡلِحُونَ ﴿١١٦﴾ (النحل 116)

अर्थ ((किसी चीज़ को अपनी ज़बान से झूठ मूठ न कह दिया करो कि यह ह़लाल है और यह ह़राम है ताकि अल्लाह पर बुहतान बाँधो। और अच्छी तरह समझ लो कि अल्लाह तआला पर बुहतान बाज़ी करने वाले सफलता प्राप्त नहीं कर सकते ।)) (अन्नहल:११६)

यानी अपनी तरफ से किसी भी चीज़ को ह़लाल एवं ह़राम न बनाओ , यह केवल अल्लाह ही की शान (महिमा) है । और इस तरह मन मानी कह देने से अल्लाह तआला पर झूठ बाँधना है । यह सोचना कि यदि फलाँ काम इस प्रकार किया जाएगा तो ठीक हो जाएगा , वर्ना उस में गड़बड़ हो जाएगी , ग़लत है । क्योंकि अल्लाह तआला पर झूठ बांध कर मनुष्य सफलता नहीं प्राप्त कर सकता । मालूम हुआ कि यह अक़ीदा कि मुह़र्रम् में पान न खाया जाए , लाल कपड़े न पहने जाएँ , हज़रत बीबी की सह्नक् मर्द न खाएँ । उन की नियाज़ में फलाँ फलाँ तरकारियों का होना जरुरी है। मिस्सी भी हो , ह़िना भी हो । इस को लौंडी , पहले पति की मृत्यु या तलाक़ के बाद दूसरा निकाह कर लेनी वाली महिला , नीच क़ौम और बद्कार न खाए । शाह अब्दुल्ह़क् साहब का नियाज़ ह़लुवा ही है , उस को सावधानी से बनाओ , और हुक़्क़ा पीने वाले को न खिलाओ । शाह मदार की नियाज़ मालीदा ही है । बू अली क़लन्दर की नियाज़ सिवैंयाँ और अस्ह़ाबे कहफ् की नियाज़ गोश्त रोटी है । शादी के अवसर पर फलाँ फलाँ , मौत एवं ग़मी के अवसर पर फलाँ फलाँ रस्मों को करना जरुरी है । शौहर की मौत के बाद न शादी करो , न शादी में बैठो , न अचार डालो । फलाँ आदमी नीला कपड़ा और फलाँ लाल कपड़ा न पहने । ये सब बातें शिर्क हैं । मुशरिक् अल्लाह की शान में हस्तक्षेप करते हैं और अपनी अलग शरीअत गढ़ रहे हैं ।

तारों में तासीर (प्रभाव) मानना शिर्क है ।

((عَنْ زَيْدِ بنِ خالدٍ الجهني رضي الله عنه قال : صَلَّي بِنَا رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ صَلاَةَ الصُّبْحِ بالحُدَيبِيَّةِ عَلَي إِثْرِ سماءٍ كانت من الَّيلِ ، فَلَمَّا انصَرَفَ أَقبلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ : هَلْ تَدْرُونَ ماذَا قَالَ ربُّكُمْ؟ قالوا : الله ورسوله أعلم ، قَالَ : قالَ : أَصْبَحَ مِنْ عِبادِي مُؤمِنٌ بِيْ وَكَافرٌ، فأما من قال: مُطِرْنَا بِفَضْلِ اللّٰهِ ورحمتِهِ، فذلك مؤمن بي وكافر بالكواكب،وَ أَمَّا مَنْ قَالَ : مُطِرْنَا بنوء كذا وكذا ، فذالك كافرٌ بِيْ وَ مُؤمِنٌ بالكواكب))

(صحيح بخاري ، كتاب الاذان ، حديث رقم ड्ढट وصحيح مسلم كتاب الايمان حديث رقم ज्ञद्दछ)

अर्थ :– ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (رضي الله عنه) से रिवायत है कि एक दिन हुदैबिया में रात की वर्षा के बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने हम को फज्र की नमाज़ पढ़ाई । नमाज़ के बाद आप ﷺ ने हमारी तरफ मुख करके फरमाया:((क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे रब ने क्या कहा ?)) सहाबा ने उत्तर दिया अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं । आप ﷺने फरमाया कि अल्लाह ने यह कहा कि ((मेरे बन्दों ने इस अवस्था में सुबह की कि कुछ तो उन में से मोमिन थे और कुछ काफिर थे । जिस ने कहा कि अल्लाह की कृपा तथा उस की दया से वर्षा हुई है वह मुझ पर ईमान लाया और तारों (नक्षत्रों)का इनकार किया और जिस ने कहा कि फलाँ फलाँ तारे (नक्षत्र) के प्रभाव से बारिश हुई उस ने मेरा इनकार किया और तारों पर ईमान लाया)) (बुखारी तथा मुस्लिम)

यानी जो व्यक्ति जगत में मख़लूक़ के प्रभाव (तासीर) को मानता है , अल्लाह तआला उसे अपने मुन्किरों तथा नाफरमानों में गिन लेता है । क्योंकि वह सितारों का पुजारी है । और जो यह कहता है कि संसार का सारा कारख़ाना अल्लाह के आदेश से चल रहा है वह उस का प्रिय तथा फरमाँबरदार बन्दा है सितारों का पुजारी नहीं । मालूम हूआ कि नेक एवं बुरे समय को मानने , अच्छी बुरी तारीख़ों के या दिन के पूछने और नुजूमी (भविष्यवक्ता) की बात पर विश्वास करने से शिर्क का द्वार खुलता है । क्योंकि इन सब का सम्बन्ध नक्षत्र और तारों से है और नक्षत्र तथा तारों का मानना सितारा-परस्तों का काम है ।

ज्योतिषी, जादूगर और काहिन काफिर हैं

((عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضى الله عنهما قال قال رسول الله صلي الله عليه وسلم : مَنِ اقْتَبَسَ بَابًا مِنْ عِلمِ النجومِ لِغَيْرِ مَا ذَكَرَ اللهُ فَقَدِ اقْتَبَسَ شُعْبَةً مِّنَ السِّحْرِ ، الْمُنَجِّمُ كَاهِنٌ ، والكاهِنُ ساحرٌ والساحرُ كافرٌ)) (مشكاة المصابيح ، كتاب الطب والرقي ، باب الكهانة حديث رقم ४टण्४)

हजरत इबने अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया जिस ने ज्योतिष विद्या सीखा उस के अतिरिक्त जो अल्लाह ने बयान किया है तो उस ने जादू का एक भाग सीखा । ज्योतिषी काहिन है और काहिन जादूगर है और जादूगर काफिर है ।

यानी कुरआन में तारों का उद्देश्य बयान किया गया है कि इन से अल्लाह तआला की कुदरत , शक्ति तथा हिक्मत मालूम होती है, और तारों से आकाश की शोभा है , और इन से शैतानों को मार मार कर भगाया जाता है । यह बयान नहीं है कि इन का अल्लाह

के कारख़ाने में कोई हस्तक्षेप है । या दुनिया की भलाई एवं बुराई इन्ही के प्रभाव से हैं । अब यदि कोई व्यक्ति तारों के वह लाभ जो क़ुरआन में बयान किए गए हैं उन को छोड़ कर यह कहे कि संसार में जो परिवर्तन होता है वह इन्ही के प्रभाव या हस्तक्षेप से है या ग़ैब का दावा करे । जिस प्रकार जाहिलियत के काल में जिन्नों से पूछ पूछ कर काहिन ग़ैब की बातें बयान किया करते थे उसी तरह ज्योतिषी तारों से मालूम करके बताते हैं । इस तरह काहिन , ज्योतिषी , रम्माल और जफ्फार सब की एक ही राह हैं ।

ज्योतिषी जादूगरों की तरह जिन्नों से दोसती गाँठता है और शैतानों से दोसती बिना उनको माने हुए नहीं हो सकती । जब उन को पुकारा जाए और भोग (चढ़ावा) दिया जाए तो दोसती पैदा होती है । अतः यह सब कुफ्र एवं शिर्क की बातें हैं । अल्लाह तआला मुसलमानों को शिर्क से बचाए आमीन ।

ज्योतिष और रमल पर विश्वास रखने का गुनाह

((عَنْ حَفْصَةَ رضي الله عنها زَوْجِ النبي صلي الله عليه وسلم قالت : قال رسول الله ﷺ من اتي عرافا فسأله عن شيءٍ لم تقبل له صلاة اربعين ليلة)) (صحيح مسلم ، كتاب السلام ، حديث رقم दृघघण)

हजरत हफसा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फरमाया जो ख़बरें बताने वाले ज्योतिषी के पास आया और उस से कुछ पूछा तो उस की चालीस दिन की नमाज़ क़बूल नहीं होगी । (मुस्लिम)

यानी जो व्यक्ति ग़ैब की बातें बताने का दावा करता है यदि किसी ने इन लोगों से जाकर कुछ पूछ लिया तो उस की चालीस दिन की उपासना बेकार हो जाएगी , क्योंकि उस ने शिर्क किया और शिर्क इबादतों का नूर मिटा देता है । नजूमी , ज्योतिषी ,

भविष्यवक्ता , जफ्फार , फाल खोलने वाले , नाम निकालने और कश्फ वाले सब अर्राफ में शामिल हैं ।

शकुन और फाल शिर्क की रस्में हैं

((عَنْ قَطَنِ بْنِ قَبِيْصَةَ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّ النبي صلي الله عليه وسلم قال : اَلْعِيافَةُ وَ الطِّيَرَةُ وَالطَّرقُ مِنَ الْجِبْتِ)) (سنن أبي داؤد ، كتاب الكهانة ، حديث رقم घढण्ञ)

अर्थ :– हजरत क़तन् बिन क़बीसा (रहिमहुल्लाह) अपने बाप क़बीसा (ﷺ) से रिवायत करते हैं कि नबी ﷺ ने फरमाया ((शकुन लेने के लिए जानवर उड़ाना , फाल निकालने के लिए कुछ डालना या फेंकना, और बुरा शकुन लेना[1] कुफ्र में से है ।)) (अबू दाऊद)

((عَنْ عَبْدِ اللّهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللّهِ ﷺ قَالَ : اَلطِّيَرَةُ شِرْكٌ ، اَلطِّيَرَةُ شِرْكٌ ، اَلطَّيَرَةُ شِرْكٌ)) (سنن أبي داؤد ، كتاب الكهانة ، حديث رقم घढण्ढ)

अर्थ : – हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया ((शकुन लेना शिर्क है , शकुन लेना शिर्क है , शकुन लेना शिर्क है ।)) (अबू दाऊद हदीस न० ३९०४)

अरब में शकुन लेने का बहुत रिवाज था और वे शकुन पर दृढ़ विश्वास रखते थे । इस लिए आप ﷺ ने अनेक बार फरमाया कि शकुन लेना शिर्क है ताकि लोग इस से रुक जाएँ ।

---

[1] **अलइयाफा** :– चिड़ियों को उड़ाते या हिरन् को भगाते थे यदि वह दाएँ तरफ जाता तो शुभ मानते यदि बाएँ तरफ जाता तो अशुभ समझते और काम से रुक जाते । **तियरा:–** का भी यही अर्थ है । **तुरुक** :– यह कङ्करी मारते या रेत पर लकीर खींचते और उस से शुभ तथा अशुभ का फाल निकालते थे ।

((عَنْ سَعْدِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ : لاَ هَامَةَ وَلاَ عَدْوَي وَلاَ طِيَرَةَ ، وَإِنْ تَكُنِ الطِّيَرَةُ فِي شَيءٍ فَفِي الْفَرسِ والْمَرْأَةِ والدَّارِ)) (سنن أبي داؤد ، كتاب الكهانة ، حديث رقم घढज्ञद्ध)

हजरत सअ्द बिन मालिक् (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया ((न उल्लू अशुभ है , न किसी का रोग किसी अन्य को लगता है और न किसी चीज़ में नहूसत् है और यदि नहूसत् होती तो औरत , घर और घोड़े में होती ।))

यानी अरब के जाहिलों का अक़ीदा था कि यदि कोई क़त्ल कर दिया जाए या मारा जाए और कोई उस का बदला न ले तो उस की खोपड़ी से एक उल्लू निकल कर फर्याद करता फिरता है उसी को हाम्मा कहा जाता था । इस के विषय में रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमया कि यह ग़लत है इसकी कोई वास्तविकता नहीं ।

इस ह़दीस से यह भी ज्ञात हुआ कि जो लोग यह कहते हैं कि आदमी मरने के पश्चात किसी जानवर का रुप धारण कर लेता है यानी आवागवन (तनासुख़े अरवाह़) का अक़ीदा रखते हैं तो यह भी ग़लत् और बे बुनियाद चीज़ है । अरब में कुछ रोग जैसे खुजली , कोढ़ वग़ैरा के बारे में यह ख्याल था कि एक से दूसरे को लग जाते हैं, तो आप ﷺ ने फरमाया कि यह भी ग़लत् है ।

इस से यह भी मालूम हुआ कि लोगों में जो यह बात प्रचलित है कि चेचक वाले से परहेज़ करते हैं और बच्चों को उस के पास जाने नहीं देते (कि कहीं उस को भी न लग जाए) , तो यह शिर्क एवं कुफ्र की रस्म है इस को न मानना चाहिए । (यानी यह अक़ीदा नहीं रखना चाहिए कि फलाँ आदमी की बीमारी हमें स्वयं बिना अल्लाह के आदेश से लग जाएगी , क्योंकि बीमारियाँ अल्लाह के हुक्म से ही लगती हैं , हाँ अल्बत्ता स्वास्थ्य के नियमानुसार परहेज़ करने में कोई हरज नहीं) ।

लोगों में यह बात भी मशहूर है कि फलाँ काम फलाँ को अशुभ है , रास नहीं आया , यह भी ग़लत है । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यदि इस बात का कुछ प्रभाव है तो तीन ही चीज़ों में है ((घर , घोड़ा , स्त्री[1] में)) यह चीज़ें कभी ना मुबारक (अशुभ) साबित होती हैं, परन्तु इन की ना मुबारकी मालूम करने का कोई माध्यम नहीं बताया गया , (कि जिस से यह जाना जा सके कि यह शुभ है और यह अशुभ) । और लोगों में जो यह प्रसिद्ध है कि शेर दहान घर[2] सितारा पेशानी घोड़ा और कल्जिब्ही औरत अशुभ होती है, बेसनद बात है । मुसलमानों को इन बातों की परवाह नहीं करनी चाहिए॥ अगर नया घर लें या घोड़ा खरीदें या विवाह करें तो अल्लाह ही से उस की भलाई माँगें और उस की बुराई से अल्लाह की शरण चाहें और बाक़ी अन्य चीज़ों में इस प्रकार की भावनाएँ न दौड़ाएँ कि फलाँ काम रास आया और फलाँ काम रास नहीं आया ।

((عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : لاَ عَدْوَي وَلاَ صَفَرَ وَلاَ هَامَةَ)) (صحيح بخاري ، كتاب الطب ، باب لا هامة ، حديث رقم छठठण)

((अबू हुरैरा -ﷺ- से रिवायत है कि पैग़म्बर ने फरमायाः न छूत छात है न उल्लू है और न सफर है।)) (बुखारी)

---

[1] छूसरे स्थान पर इस को इस प्रकार स्पष्ट किया गया हैः घर वह बुरा या अशुभ है जिस के पड़ोसी बुरे हों । औरत वह बुरी या अशुभ है जो बुरे स्वभाव की हो । घोड़ा वह अशुभ है जो शोरी और अड़ियल् हो अपने ऊपर सवार न होने दे या सवार को गिरा देता हो ।

[2] जो घर आगे से चौड़ा और पीछे से छोटा हो उसे शेर दहान कहते हैं । हिन्दुओं के विचार में ऐसा घर अशुभ होता है ।

अरब के लोग जूउल् कल्ब के रोगी के विषय में यह विचार रखते थे कि इस के पेट में कोई बला घुसी हुई है जो खाया हुआ खाना चट कर जाती है , इसी लिए इस ग़रीब का पेट नहीं भरता । इस भूत और बला का नाम वे “सफर ” के नाम से प्रसिद्ध किए हुए थे । आप ﷺ ने फरमाया कि यह केवल भावना है भूत प्रेत का कोई प्रभाव नहीं होता । मालूम हुआ कि बीमारियाँ बला के प्रभाव से नहीं होतीं । कुछ लोगों के विचार में कुछ बीमारियाँ बला के प्रभाव से होती हैं जैसे सीतला , मसानी , बराही[1] , आदि परन्तु यह बात ग़लत है । अरब के लोग इस्लाम से पूर्व काल में सफर महीने को अशुभ समझते थे और इस महीने में कोई नया काम नहीं करते थे, यह भी ग़लत है । मालूम हुआ कि सफर महीने के तेरा दिनों को अशुभ समझना और यह अक़ीदा रखना कि इस महीने में बलाएँ उतरती हैं और इसी कारण इस का नाम “तेरा तीज़ी” रखा गया कि इन की तेज़ी से काम बिगड़ जाते है , तो यह विचार ग़लत है । इसी प्रकार किसी चीज़ को या तारीख़ को या दिन को या घड़ी को अशुभ समझना ये सब शिर्क की बातें हैं ।

((عَنْ جَابِرٍ رضي الله عنه أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ أَخَذَ بِيَدِ مَجْذُوْمٍ فَوَضَعَهَا مَعَهُ فِي الْقَصْعَةِ فَقَالَ : كُلْ ثِقَةً بِاللّٰهِ وَتَوَكُّلاً عَلَيْهِ))

(سنن ابي داؤد ، كتاب الكهانة ، باب في الطيرة ، رقم घढज्ञड –
وسنن ترمذي ، كتاب الاطعمة ، باب رقم ज्ञढ - حديث رقم ज्ञडद्दद्द
وسنن ابن ماجة ، كتاب الطب ، باب الجذام ، حديث رقم घछ्द्दद्द)

---

[1] ये सब हिन्दुओं के विचार में बीमारियों की देवियाँ हैं , जिस की पूजा की जाती है ताकि बीमारियाँ दूर हो जाएँ ।

अर्थ ((हजरत जाबिर (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक कोढ़ी का हाथ पकड़ कर उसे अपने साथ प्याला में रखकर फरमाया "अल्लाह पर भरोसा कर के खा"।))

यानी हमारा केवल अल्लाह पर भरोसा है वह जिसे चाहे बीमार कर दे और जिसे चाहे तन्दुरुस्त कर दे । हम किसी के साथ खाने से परहेज नहीं करते । और बीमारी के (बिना अल्लाह की इच्छा के स्वयं) लग जाने को नहीं मानते ।

अल्लाह तआला को सिफारशी न बनाओ

((عَنْ جُبَيْرِبْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ أَتَي رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ : جُهِدَتِ الأَنفُسُ وَ ضَاعَتِ الْعِيَالُ وَ نُهِكَتِ الأَموالُ وَ هَلَكَتِ الأَنْعَامُ فَاسْتَسْقِ اللّٰهَ لَنَا ، فَإِنَّا نَسْتَشْفَعُ بِكَ عَلَى اللّٰهِ وَنَسْتَشْفَعُ بِاللّٰهِ عَلَيْكَ ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : سُبْحَانَ اللّٰهِ سُبْحَانَ اللّٰهِ! فَمَا زَالَ يُسَبِّحُ حتَّي عُرِفَ ذَلِكَ فِي وُجُوْهِ أَصْحَابِهِ ، ثُمَّ قَالَ : وَيْحَكَ أَتَدْرِيْ مَااللّٰهُ ؟ إِنَّ عَرْشَهُ عَلَي سَمَاوَاتِهِ لَهَكَذَا ، وَقَالَ بِأَصَابِعِهِ مِثْلُ الْقُبَّةِ عَلَيْهِ ، وَإِنَّهُ لَيَئِطُّ بِهِ أَطِيْطَ الرَّحْلِ بِالرَّاكِبِ)) (سنن أبي داؤد ، كتاب السنة ، رقم الحديث ४७२६)

अर्थ :– हजरत जुबैर बिन मुत्इम् (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक दीहाती ने आकर कहा " लोग परेशानी में पड़ गए, बच्चे भूख से बिल्बिला रहे हैं , माल बर्बाद हो गए , जानवर मर गए । आप हमारे लिए अल्लाह से बारिश की दुआ माँगें, हम अल्लाह के पास आप को सिफारशी बनाते हैं , और आप के पास अल्लाह तआला को" नबी ﷺ ने फरमाया सुब्हानल्लाह सुब्हानल्लाह ! (अर्थात अल्लाह पवित्र है) आप ﷺ इत्नी देर तक

अल्लाह की पवित्रता बयान करते रहे कि सहाबा के चेहरों पर उस का प्रभाव दिखने लगा । फिर आप ﷺ ने फरमाया : नादान ! अल्लाह तआला किसी से सिफारिश नहीं करता , उसकी शान इस से कहीं उच्च और बुलन्द है । मूर्ख ! क्या तू अल्लाह की महिमा जानता है और अल्लाह की जात को पहचानता है ? उस का अर्श उस के आसमानों पर इस तरह है और आप ﷺ ने अपनी उँगलियों से गुम्बद् की तरह करके बताया । इस के कारण वह अर्श (सिंहासन) चर चरा रहा है, जिस तरह ऊँट की काठी सवार के बोझ से चर चराती है ।)) (अबूदाऊद)

यानी एक बार अरब में काल पड़ गया और बारिश रुक गई । एक दीहाती ने आप ﷺ के पास आकर लोगों की परेशानी और सङ्कट बयान की और आप ﷺ को अल्लाह से दुआ के लिए कहा, और साथ ही यह भी कहा कि हम आप की सिफारिश अल्लाह के पास तथा अल्लाह की सिफारिश आप के पास चाहते हैं । यह बात सुनकर आप ﷺ अल्लाह के डर और भय से काँपने लगे और आप ﷺ अल्लाह की प्रशंसा तथा महानता बयान करने लगे । वहां उपस्थित सहाबा किराम के चेहरे भी अल्लाह की महानता सोचकर बदल गए । फिर आप ﷺ ने उस दीहाती को समझाया कि अधिकार तो केवल अल्लाह ही का चलता है यदि अल्लाह दुआ के कारण हालत् संवार दे तो यह उस की मेहरबानी है । और आप ﷺ ने उस को बताया कि जब यह कहा गया कि हम अल्लाह को पैग़म्बर के पास सिफारशी बना कर लाए तो इस का अर्थ यह हुआ कि मालिक एवं अधिकारी पैग़म्बर को बना दिया गया , हालाँ कि यह शान अल्लाह की है । अब इस के बाद ऐसा शब्द कभी ज़बान से न निकालना । अल्लाह की शान बहुत बड़ी है ,समस्त अम्बिया , अवलिया उस के सामने एक कण की भी हैसियत नहीं रखते । आसमान तथा ज़मीन को उस का अर्श एक गुम्बद की तरह घेरे हुए है । अल्लाह का अर्श (सिंहासन) तो बहुत बड़ा तथा विशाल है

परन्तु फिर भी उस शहन्शाह की महानता को संभाल नहीं सकता और चर चरा रहा है । मख़्लूक़ की कल्पना में उस की महानता नहीं आ सकती और वह उसकी महानता को बयान भी नहीं कर सकता । उस के काम में हस्तक्षेप करने की और उस के विशाल राज्य में हाथ डालना तो दूर की बात है ?

वह शहन्शाह तो बिना फौज और लश्कर के और बिना वज़ीर और सलाहकार के एक क्षण में करोड़ों काम बना देता है वह भला किसी के पास आकर क्यों सिफारिश करे ? और कौन उस के सामने मालिक व मुख़तार तथा अधिकारी बन सकता है ?

सुब्हानल्लाह ! तमाम इन्सानों में सब से अफ्ज़ल् इन्सान , महबूबे इलाही , अहमदे मुज्तबा , रसूलुल्लाह ﷺ की तो यह हालत है कि एक दीहाती के मुंह से एक व्यर्थ एवं ग़लत बात निकल गई तो आपﷺ के डर और भय के कारण होश उड़ गए । और आप ﷺ अर्श से फर्श तक जो अल्लाह की महानता भरी हुई है उस को बयान करने लगे । परन्तु उन लोगों को क्या कहा जाए जो उस से भाई बन्दी का सा या दोस्ती का सा रिश्ता समझ रहे हैं और बढ़ बढ़ कर बातें बनाते रहते हैं। कोई कहता है मैं ने अल्लाह को एक कौड़ी में ख़रीद लिया । कोई कहता है मैं रब से दो बरस बड़ा हूँ । कोई कहता है यदि मेरा रब मेरे पीर की सूरत के सिवा किसी अन्य सूरत (रुप) में ज़ाहिर हो तो में कभी उसे न देखूँ । और किसी ने यह बन्द कहा है ।

दिल् अज् मेहरे मुहम्मद् रेश दारम्
रक़ाबत् बा खुदाए ख़ेश दारम

अर्थ :– मेरा दिल मुहम्मद ﷺ की मुहब्बत से ज़ख़्मी है , मैं अपने रब से रक़ाबत् रखता हूँ ।

और किसी ने यह कहा ।

बा खुदा दीवाना बाश व बा मुहम्मद होशयार

अर्थ : रब के साथ दीवाना और मुहम्मद ﷺ के साथ होशयार रह ।

कोई रसूलुल्लाह ﷺ को अल्लाह से अफ़्ज़ल् बताता है । अल्लाह की पनाह ! अल्लाह की पनाह ! इन मुसलमानों को क्या हो गया है? कुरआन के होते हुए इन की बुद्धि पर पत्थर क्यों पड़ गए ? सुब्हानल्लाह यह गुमराहियाँ ! ऐ अल्लाह हमें ऐसी गुमराही से बचा ले । आमीन ।

किसी ने क्या ही खूब कहा है ।

अज़् खुदा ख़ाहेम तौफीक़े अदब् ।
बे अदब् महरुम गश्त अज़् फज़्ले रब ।

अर्थ :– हम अल्लाह से अदब की तौफीक़ माँगते हैं । बे अदब् रब के फज़्ल से मह़रुम रह जाता है ।

लोगों में एक खत्म मश्हूर है जिस में यह कलिमा पढ़ा जाता है: ''या शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी शैयन लिल्लाह'' यानी ऐ शैख अल्लाह के वास्ते हमारी मुराद पूरी करो। यह शिर्क है और खुला शिर्क है। अल्लाह पाक मुसलमानों को इस से बचाए, आमीन। ऐसा शब्द मुंह से न निकालो जिस से शिर्क टपकता हो या बेअदबी का पहलू निकलता हो। अल्लाह तआला की यह गहुत बड़ी शान है। वह कमाल वाला और सदा रहने वाला शहन्शाह है, तनिक में पकड़ लेना और एक बात में क्षमा कर देना उसी का काम है, यह कहना सरा-सर बेअदबी है कि देखने में बेअदबी का शब्द प्रयोग किया है और उस से कोई दूर का अर्थ मुराद है। क्योंकि अल्लाह तआला की ज़ात पहेलियों से ऊंची है। अगर कोई आदमी अपने किसी बुज़ुर्ग से हंसी करने लगे तो उसे कितना बुरा समझा जाएगा, हंसी-मज़ाक की बातें तो बेतकल्लुफ दोस्तों से होती हैं, बाप और बादशाह से नहीं।

अल्लाह के नज़दीक सब से प्यारे नाम

((عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عنهما قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ : إِنَّ أَحَبَّ أَسْمَاءِ كُمْ عَبْدُ اللّٰهِ وَعَبْدُ الرَّحْمَانِ))

(صحيح مسلم ، كتاب الآداب ، حديث رقم दृज्ञघदृ)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन् उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि - तुम्हारे बहुत ही प्यारे नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रह्मान हैं)) (मुस्लिम)

अल्लाह का बन्दा या रह्मान का बन्दा कितना प्यारा नाम है । इन्हीं नामों में अब्दुल् कुद्दूस , अब्दुल् जलील , अब्दुल् ख़ालिक़, इलाही बख़्श, अल्लाह दिया, अल्लाह दाद आदि शामिल् हैं । जिन में अल्लाह की ओर निस्बत् प्रकट होती है ।

अल्लाह के नाम के साथ कुन्नियत न रखो ।

((عَنْ شُرَيْحِ بْنِ هَانِيءٍ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّهُ لَمَّا وَفَدَ إِلَي رَسُولِ اللّٰهِ ﷺ مَعَ قَوْمِهِ سَمِعَهُمْ يُكَنُّوْنَهُ بِأَبِىْ الْحَكَمِ ، فَدَعَاهُ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ فَقَالَ : إِنَّ اللّٰهَ هُوَالْحَكَمُ وَإِلَيْهِ الْحُكْمُ ، فَلِمَ تُكَنِّي أَبَا الْحَكَمِ ؟))

(سنن أبي داؤد ، كتاب الادب ، حديث رقم द्धढ्ढद्धछ- وسنن ترمذي ، ابواب الدعوات ، باب رقم ङदृ وسنن نسائي ، كتاب آداب القضاة باب رقم ठ)

अर्थ :- ((हज़रत हानी (رضي الله عنه) का बयान है कि जब मैं अपनी क़ौम की एक जमाअत् के साथ रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया तो आप ﷺ ने उन से सुना कि मुझे मेरे साथी " अबुल् ह़कम् " कह कर आवाज़ देते हैं । आप ﷺ ने मुझे बुला कर फरमाया कि ह़कम् अल्लाह ही है और हुक्म उसी का है । तुम्हारी कुन्नियत् अबुल् ह़कम् क्यों रखी गई है ? ।))

यानी हर फैसिले का चुका देना और हर झगड़े को मिटा देना यह अल्लाह ही की शान है , जो प्रलय के दिन इस प्रकार प्रकट होगा कि वहाँ अगले पिछले सारे झगड़े निपट जाएँगे । ऐसी ताक़त् किसी भी मख़्लूक़ में नहीं है । इस हदीस से मालूम हुआ कि जो

शब्द अल्लाह ही की शान के योग्य है उसे अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए न प्रयोग किया जाए । मिसाल के तौर पर शहन्शाह केवल अल्लाह तआला को कहा जाए । वह सारे संसार का रब है जो चाहे कर डाले । यह शब्द केवल अल्लाह ही की शान में बोला जा सकता है । इसी तरह मअ्बूद , बड़ा दाना (सर्व ज्ञनी) बे परवाह आदि शब्द अल्लाह तआला ही की शान के लायक़् हैं ।

केवल माशाअल्लाह (अल्लाह जो चाहे) कहो

((عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : لاَ تَقُولُوا مَا شَاءَ اللّٰهُ وَشَاءَ مُحَمَّدٌ ، وَقُوْلُوا مَا شَآءَ اللّٰهُ وَحْدَهُ)) (شرح السنة للبغوي ج ज्ञ६ ص ङङढज्ञ حديث رقم घटज्ञ)

अर्थ :– ((हजरत हुज़ैफा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फरमाया (इस प्रकार न कहो , जो अल्लाह और मुहम्मद चाहे । परन्तु इस प्रकार कहो , जो अकेला अल्लाह चाहे ।)) (शरहुस्सुन्ना लिल् बग़वी)

यानी शाने उलूहियत् में किसी मख़्लूक़ का दख़ल् नहीं , चाहे कितना ही बड़ा और कितना निकटतम (मुक़र्रब्) क्यों न हो , उदाहरणार्थ यह न कहा जाए कि अल्लाह और रसूल चाहेगा तो काम हो जाएगा , क्योंकि संसार का सम्पूर्ण काम अल्लाह ही के चाहने से होता है । रसूलुल्लाह ﷺ के चाहने से कुछ नहीं होता । अथवा यदि कोई व्यक्ति पूछे कि फलाँ के दिल् में क्या है ? या फलाँ की शादी कब होगी ? या फलाँ पेड़ पर कित्ने पत्ते हैं ? या आसमान में कितने तारे हैं ? तो उस के जवाब में यूँ न कहे कि अल्लाह और रसूल ही जानें । क्योंकि ग़ैब की बात की ख़बर केवल अल्लाह ही को है , रसूल को ख़बर नहीं । अगर दीनी बातों में इस प्रकार कह दिया जाए (जैसा कि आप ﷺ की मौजूदगी में सहाबा किराम दीनी बातों में कह दिया करते थे) तो कोई हरज नहीं ।

क्योंकि अल्लाह ने अपने रसूल को दीन की हर बात बता दी है और लोगों को अपने पैग़म्बर की फरमांबरदारी का आदेश दिया है। (अब आप ﷺ की मृत्यु के बाद दीनी बातों में भी इस प्रकार नहीं कहना चाहिए। बल्कि इस प्रकार कहे कि ((अल्लाह बेहतर जानता है))।

गैरूल्लाह की क़सम शिर्क है

(عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: "مَنْ حَلَفَ بِغَيْرِ اللّٰهِ فَقَدْ كَفَرَ أَوْ أَشْرَكَ") (سنن ترمذي ، أبواب النذور ، حديث رقم ज्ञछघढ)

अर्थ ((हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना आप ﷺ फरमा रहे थे : जिस ने अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की क़सम खाई उस ने शिर्क या कुफ्र किया। (त्रिमिज़ी)

(عَنْ عَبْدِ الرَّحْمانِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : "لاَ تَحْلِفُوا بِالطَّوَاغِيْ وَلاَ بِآبَائِكُمْ") (صحيح مسلم ، كتاب الايمان ، حديث رقم ज्ञटद्धट)

अर्थ ((हजरत अब्दुर्रहमान बिन समुरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया (बुतों की क़स्में न खाओ , और न ही बापों की क़स्में खाओ।)) (मुस्लिम)

((عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ : إِنَّ اللّٰهَ يَنْهَاكُمْ أَنْ تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ ، مَنْ كَانَ حَالِفاً فَلْيَحْلِفْ بِاللّٰهِ أَوْ لِيَصْمُتْ)) (صحيح بخاري ، كتاب الايمان ، حديث رقم टटद्धट – وصحيح مسلم ، كتاب الايمان ، حديث رقم ज्ञटद्धट)

अर्थ ((हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर (﵁) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि ((अल्लाह तआला तुम को बाप दादा की क़स्में खाने से मना फरमाता है । जिस आदमी को क़सम खाने की जरुरत पड़ जाए तो केवल अल्लाह की क़सम खाए, वर्ना चुप रहे ।)) (बुखारी ,मुसिलम)

((عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : مَنْ حَلَفَ فَقَالَ فِيْ حَلِفِهِ بِاللاَّتِ وَالْعُزَّى فَلْيَقُلْ : لاَ إِلٰهَ إِلاَّ اللّٰهُ))

(صحيح بخاري ، كتاب الايمان حديث رقمटटछ०- وصحيح مسلم ، كتاب الايمان ، حديث رقم ज्ञटद्धठ)

अर्थ ((हज़रत अबू हुरैरा (﵁) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: जिस ने (ग़लती से) लात एवं उज्ज़ा की क़सम खाई तो उसे लाइलाहा इल्लल्लाह कह लेना चाहिए ।)) (बुखारी व मुस्लिम)

यानी इस्लाम से पहले जाहिलियत् के ज़माने में लोग बुतों की क़स्में खाते थे । परन्तु अब इस्लाम में यदि किसी मुसलमान के मुंह से बिना इच्छा व इरादा के ग़लती से अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की क़सम् निकल् जाए तो उसी समय जल्दी से लाइलाहा इल्लल्लाह पढ़ कर तौहीद का इक़रार करले । मालूम हुआ कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी चीज़ की क़सम न खाई जाए । यदि ग़लती से बिना इच्छा व इरादा के अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की क़सम ज़बान से निकल् जाए तो जल्दी से तौबा (क्षमायाचना) की जाए । मुशरिकों में जिन की क़स्में खाई जाती हैं उनकी क़सम खाने से ईमान में गड़बड़ी आ जाती है।

नज़्रों के बारे में पैग़म्बर ﷺ का फैसिला

((عَنْ ثَابِتِ بْنِ ضَحَّاكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : نَذَرَ رَجُلٌ عَلَي عَهْدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ أَنْ يَّنْحَرَ إِبِلاً بِبُوَانَةَ ، فَأَتَي رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ فَأَخْبَرَهُ،

فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : هَلْ كَانَ فِيْهَا وَثَنٌ مِنْ أَوْثَانِ الْجَاهِلِيَّةِ يُعْبَدُ؟ قَالُوْا : لاَ ، قَالَ : هَلْ كَانَ فِيْهَا عِيْدٌ مِنْ أَعْيَادِهِمْ ؟ قَالُوْا : لاَ ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : أَوْفِ بِنَذْرِكَ فَإِنَّهُ لاَ وَفَاءَ لِنَذْرٍ فِيْ مَعْصِيَةِ اللّٰهِ)) (سنن أبي داؤد ، كتاب الايمان والنذور ، حديث رقم घघणघ)

अर्थ :– ((हज़रत साबित बिन ज़ह्हाक् (رضي الله عنه) का बयान है कि एक व्यक्ति ने रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में यह नज़्र मानी कि बवाना नामक् जगह जाकर ऊँट ज़ब्ह् करुँगा । फिर रसूलुल्लाह ﷺ के पास आकर आप ﷺ को अपनी इस नज़्र के विषय में ख़बर दी । आप ﷺ ने (वहाँ उपस्थित सहाबा से) पूछा ((क्या वहाँ जाहिलियत् के थानों में से कोई थान था ? सहाबा ने उत्तर दिया कि नहीं । आप ﷺ ने फिर पूछा वहाँ कोई त्योहार तो नहीं मनाया जाता था ? बोले नहीं । आप ﷺ ने फरमायाः अपनी नज़्र पूरी कर क्योंकि उस नज़्र को पूरा करना मना है जिस में अल्लाह तआला की नाफरमानी होती हो ।)) (अबूदाऊद)

मालूम हुआ कि अल्लाह के सिवा किसी और की मन्नत मानना गुनाह है, ऐसी मन्नत को पूरा नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह बात स्वयं गुनाह है फिर उसे पूरा करना और गुनाह पर गुनाह होगा। यह भी मालूम हुआ कि जिस स्थान पर ग़ैरूल्लाह के नाम पर जानवर चढ़ाए जाते हों या ग़ैरूल्लाह की पूजा पाट होती हो या एकठ्ठा होकर शिर्क किया जाता हो वहां अल्लाह के नाम का जानवर भी न ले जाया जाए और उन में शरीक भी नहीं होना चाहिए चाहे अच्छी नीयत हो या बुरी, क्योंकि उन में शरीक होना स्वयं बुरी बात है।

सजदा केवल अल्लाह के लिए जाईज़ है

(عن عائشة رضي الله عنها أن رسول الله ﷺ كان في نفر من المهاجرين والأنصار، فجاء بعير فسجد له، فقال أصحابه: يا رسول الله يسجد لك البهائم والشجر فنحن أحق أن نسجد لك، فقال: اعبدوا ربكم وأكرموا أخاكم). [رواه أحمد]

हजरत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ मुहाजिरीन और अन्सार की एक जमाअत में तशरीफ फरमा थे कि एक ऊँट ने आकर आप को सजदा किया। सहाबा ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल ! आप को जानवर और पेड़ सजदा करते हैं, इन से अधिक तो हमारा हक़ है कि हम आपको सजदा करें। आप ने फरमायाः ''अपने रब की इबादत करो और अपने भाई का सम्मान करो''। (मुस्नद अहमद)

यानी सारे मनुष्य आपस में भाई भाई हैं, जो बहुत बुजुर्ग हो वह बड़ा भाई है, उसका बड़े भाई की तरह सम्मान करो, बाक़ी सब का मालिक अल्लाह है इबादत उसी की करनी चाहिये, मालूम हुआ कि जितने अल्लाह के निकटवर्ती बन्दे हैं चाहे अम्बिया हों, या औलिया हो वह सब के सब अल्लाह के बेबस बन्दे हैं और हमारे भाई हैं किन्तु अल्लाह तआला ने उन्हें बड़ाई प्रदान की तो वह हमारे बड़े भाई के समान हुए हमें उनकी फरमांबरदारी का हुक्म है, क्योंकि हम छोटे हैं इसलिए उनका सम्मान मनुष्यों के समान करो और उन्हें पूज्य न बनाओ। और यह भी मालूम हुआ कि कुछ बुजुर्गों का सम्मान पेड़ और जानवर भी करते हैं, चुनांचे कुछ दरगाहों पर शेर, कुछ पर हाथी और कुछ पर भेड़िये उपस्थित होते हैं किन्तु मनुष्यों को उनकी रेस नहीं करनी चाहिए। मनुष्य अल्लाह तआला का बताया हुआ सम्मान कर सकता है उस से आगे नहीं बढ़ सकता, उदाहरण स्वरूप क़ब्रों पर मुजाविर बन कर रहना इस्लामी शरीअत में नहीं है इस लिए कदापि

मुजाविर न बना जाए चाहे उस क़ब्र पर दिन रात शेर बैठा रहता हो, क्योंकि आदमी को जानवर की नक़्क़ाली करना शोभा नहीं देता।

((عَنْ قَيْسِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ أَتَيْتُ الْحِيَرَةَ فَرَأَيْتُهُمْ يَسْجُدُونَ لِمَرْزُبَانٍ لَهُمْ ، فَقُلْتُ : رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ أَحَقُّ أَن يُّسْجَدَ لَهُ فَأَتَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ فَقُلْتُ إِنِّي أَتَيْتُ الْحِيَرَةَ فَرَأَيْتُهُمْ يَسْجُدُوْنَ لِمَرْزُبَانٍ لَهُمْ ، فَأَنْتَ أَحَقُّ أَنْ نَسْجُدَ لَكَ ، فَقَالَ أَرَأَيْتَ لَوْ مَرَرْتَ بِقَبْرِيْ أَكُنْتَ تَسْجُدُ لَهُ ؟ قُلْتُ لاَ ، قَالَ : فَلاَ تَفْعَلُوْا))

(سنن أبي داؤد ، كتاب النكاح ، حديث رقم २१४०)

हज़रत कैस बिन सअद (رضي الله عنه) का बयान है कि मैं हियरा नामक शहर में गया तो मैं ने वहाँ के लोगों को अपने राजा को सज्दा करते हुए देखा। मैं ने अपने दिल में कहा कि वास्तव में रसूलुल्लाह ﷺ सजदा किए जाने के ज़ियादा हक़दार हैं। अतः मैं ने आप ﷺ के पास आकर कहा " मैं ने हियरा नामक शहर में देखा कि लोग अपने राजा को सजदा कर रहे हैं। इस लिए आप इस बात के ज़ियादा हक़दार हैं कि हम आप को सज्दा करें।" यह सुनकर आप ﷺ ने फरमाया " भला बता तो सही यदि तू मेरी क़ब्र पर गुज़रे तो क्या तू उस को सजदा करेगा ? मैं ने कहा नहीं। आप ﷺ ने फरमाया यह काम भी न करो। (अबूदाऊद)

यानी एक न एक दिन मैं भी मर कर क़ब्र में पहुँच जाऊँगा तो मैं सजदा के लायक़ नहीं हूँगा। सजदा के लायक़ तो वही पवित्र ज़ात है जो अमर है। इस हदीस से मालूम हुआ कि सजदा न ज़िन्दा को करना जाईज़ है और न मुर्दा को। और न किसी क़ब्र को जाईज़ है और न किसी थान को। क्योंकि ज़िन्दा एक दिन मरने वाला है और मरा हुआ भी कभी जिन्दा था और इन्सान था। फिर मरने के बाद वह माबूद नहीं हो गया बल्कि बन्दा ही है।

रसूलुल्लाह ﷺ का अपनी ताज़ीम (सम्मान) के विषय में आदेश

((عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : لاَ تُطْرُوْنِي كَمَا أَطَرْتِ النَّصَارَي عِيسَي بْنَ مَرْيَمَ ، فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدُهُ ، فَقُوْلُوْا : عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُوْلُهُ)) (بخاري ، كتاب الانبياء ، رقم الحديث घद्धद्धछ ومسند أحمد ज्ञ/द्दघ)

अर्थ ((हजरत उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया " मुझे मेरे पद से आगे मत बढ़ाना जैसा कि ईसाइयों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को उनके पद से आगे बढ़ा दिया। मैं तो केवल उस का बन्दा हूँ इस लिए तुम मुझे अल्लाह का बन्दा और उस का रसूल कहो।)) (बुखारी)

यानी अल्लाह तआला ने मुझे जिन खूबियों और कमालात से नवाज़ा है , वह सब बन्दा और रसूल कह देने में आ जाते हैं। क्योंकि बशर (मनुष्य) के लिए रिसालत (ईशदूतत्व) से बढ़ कर और क्या पद हो सकता है ? सारे पद इस पद से नीचे हैं। परन्तु मनुष्य रसूल बनकर भी मनुष्य ही रहता है। बन्दा होना ही उस के लिए गौरव का कारण है। नबी बनकर मनुष्य में शाने उलूहीयत् (ईश्वरीय महिमा एव गुण) नहीं आ जाती और अल्लाह तआला की ज़ात में नहीं मिल जाता। मनुष्य को मानव ही के पद पर रखो। ईसाईयों की तरह न बनो कि उन्हों ने हजरत ईसा अलैहिस्सलाम को मनुष्य और रसूल के पद से निकाल कर उलूहियत् के पद पर पहुँचा दिया। जिस की वजह से ये लोग काफिर और मुश्रिक् बन गए और अल्लाह तआला का प्रकोप तथा अभिशाप उन पर अवतरित हुआ। इसी लिए नबी अक्रम ﷺ ने अपनी उम्मत को ख़बरदार कर दिया कि ईसाईयों की सी चाल मत चलना और मेरी

प्रशंसा में हद से आगे न बढ़ जाना कि अल्लाह न करे अल्लाह के दरबार से धुतकार दिए जाओ । लेकिन हज़ार अफ्सोस कि इस उम्मत के बेअद्बों ने आप ﷺ का कहा नहीं माना और ईसाईयों की सी चाल चलना शुरु करदी । ईसाई हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में कहते थे कि अल्लाह तआला उन के रुप में प्रकट हुआ था , वह एक तरह से मनुष्य हैं और एक तरह से अल्लाह हैं । कुछ मूर्ख लोगों ने रसूलुल्लाह ﷺ के बारे में बिल्कुल् ऐसा ही कहा है । एक व्यक्ति ने कहा कि " पैग़म्बरों के रुप में हर ज़माने में अल्लाह ही आता जाता रहा , अन्त में वह अरब जैसे रुप में आकर संसार का राजा बन गया ।

किसी ने कहाः

आप हादिस भी हैं और क़दीम भी, मुमकिन भी हैं और वाजिब भी।

लाहौला वला कूवता इल्ला बिल्लाह । ऐसे शिर्क से भरे हुए वाक्य बोले जाते हैं जो आसमान तथा धर्ती में कहीं भी न समा सकें । अल्लाह पाक मुसलमानों को समझ दे । आमीन !

कुछ झूठों ने अपनी तरफ से एक हदीस गढ़कर रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ मन्सूब कर दी कि आप ﷺ ने फरमाया انا احمد بلاميم (मैं बिना मीम का अहमद हूँ) यानी मैं अहद् (यानी अल्लाह) हूँ । इसी प्रकार लोगों ने एक लम्बी-चौड़ी इबारत का नाम खुतबतुल-इफतिखार रखा और हज़रत अली की ओर मन्सूब कर दिया। ऐ रब तू हर तरह के शिर्क से पाक हैं तुझ पर बड़ा भारी बुहतान लगाया गया है। ऐ रब हक़ का बोल बाला और झूठ का मुंह काला हो। आमीन

जैसे ईसाईयों का यह अक़ीदा है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को दोनों जहान का अधिकार प्राप्त है । यदि कोई उन को मान कर उन से प्रार्थना करता है तो उसे अल्लाह की उपासना की ज़रुरत नहीं है । गुनाह ऐसे व्यक्ति के ईमान में कोई खराबी नहीं पैदा करता।

उस के लिए ह़राम और हलाल का अन्तर मिट जाता है। वह अल्लाह तआला का साँड बन जाता है जो चाहे करे , हजरत ईसा अलैहिस्सलाम क़ियामत के दिन उस की सिफारिश करके अल्लाह के अज़ाब से छुड़ा लेंगे । जाहिल् और मूर्ख मुसलमान ठीक यही अक़ीदा नबी ﷺ के बारे में रखते हैं । बल्कि इमामों और वलियों के विषय में भी इन का यही अक़ीदा है । बल्कि हर पीर और शैख के बारे में उनका यही अक़ीदा है। अल्लाह तआला मुसलमानों को हिदायत दे ।

((عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ الشِّخِّيْرِرَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: انْطَلَقْتُ فِي وَفْدِ بَنِي عَامِرٍ إِلَي رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَقُلْنَا : أَنْتَ سَيِّدُنَا ، فَقَالَ: السَّيِّدُ اللّٰهُ، قُلْنَا : وَأَفْضَلُنَا فَضْلاً وَأَعْظَمُنَا طَوْلاً : فَقَالَ قُوْلُوْا بِقَوْلِكُمْ أَوْ بَعْضِ قَوْلِكُمْ وَلاَ يَسْتَجْرِيَنَّكُمْ الشَّيْطَانُ)) (سنن أبي داؤد ،كتاب الأدب ، رقم الحديث ४८०६،ومسند أحمد ४/२५)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन् शिख़्ख़ीर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि क़बीला बनु आमिर की एक जमाअत् के साथ मैं भी रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िद्मत् में हाज़िर हुआ । हम ने कहा आप हमारे सैयिद् हैं आप ﷺ ने फरमाया सैयिद ्अल्लाह है । फिर हम ने कहा आप हम में सब से अफ्ज़ल् हैं और बड़े हैं और ज़ियादा सख़ी (दान करने वाले) हैं । आप ने फरमाया हाँ ये सारी बातें या इस प्रकार की कुछ बातें कह सकते हो और देखो कहीं शैतान तुम को सीमा से आगे न बढ़ा दे ।

यानी किसी बुज़ुर्ग की शान में ज़बान संभाल कर बात करनी चाहिए । उसकी इन्सान ही की सी तारीफ करो, बल्कि उस में भी कमी करो, मुंह ज़ोर (शरीर) घोड़े की तरह मत दौड़ो कहीं शाने उलूहीयत् में बे अदबी न हो जाए ।

सैयिद शब्द के दो अर्थ होते हैं

मालूम होना चाहिए कि सैयिद शब्द के दो अर्थ हैं । (१) एक तो यह कि वह स्वयं मालिक एवं अधिकारी हो , किसी के अधीन में न हो , उस पर किसी का आदेश न चलता हो , अपनी इच्छा से जो चाहे करे तो ऐसी शान केवल अल्लाह की है इस अर्थ और माना में अल्लाह के अतिरिक्त कोई सैयिद नहीं । (२) उस का दूसरा अर्थ यह है कि असल ह़ाकिम का आदेश सर्वप्रथम उसी के पास आए और उस के ज़बानी अन्य लोगों तक पहुँचे जैसे चौधरी, ज़मीनदार, तो इस माना में प्रत्येक नबी अपनी उम्मत का सरदार है । हर इमाम अपने ज़माना के लोगों का, हर मुजतहिद अपने मानने वालों का, हर बुज़ुर्ग अपने अक़ीदत मन्दों का, और हर आलिम अपने शागिर्दों का सैयिद है कि ये बड़े बड़े लोग पहले हुक्म पर खुद अमल करते हैं, फिर अपने छोटों को सिखाते पढ़ाते हैं, इसी अर्थ के अनुसार हमारे नबी ﷺ सम्पूर्ण जगत के सैयिद (सरदार) हैं क्योंकि अल्लाह के पास उनका पद सब से बड़ा है और अल्लाह के आदेशों पर सब से अधिक चलने वाले थे । और अल्लाह का धर्म सीखने में लोग आप ﷺ ही के मुह़्ताज हैं , इस माना के अनुसार आप ﷺ को सारे संसार का सैयिद (सरदार) कहा जा सकता है , बल्कि कहना भी चाहिए । और पहले माना के लेह़ाज से एक चींटी का सरदार भी आप ﷺ को न माना जाए , क्योकि आप ﷺ एक चींटी के भी मालिक नहीं और न ही उसमें अधिकार जमाने की क्षमता रखते थे।

तस्वीर के विषय में रसूलुल्लाह ﷺ का फरमान

((عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا أَنَّهَااشْتَرَتْ نَمْرَقَةً فِيْهَا تَصَاوِيْرُ ، فَلَمَّا رَأَهَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ قَامَ عَلَي الْبَابِ فَلَمْ يَدْخُلْ ، فَعَرَفْتُ فِي

وَجْهِهِ الْكَرَاهَةَ ، قَالَتْ :فَقُلْتُ: يَارَسُولَ اللّٰهِ أَتُوْبُ إِلَى اللّٰهِ وَإِلَى رَسُوْلِهِ ، مَاذَا أَذْنَبْتُ ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَا بَالُ هٰذِهِ النَّمْرَقَةِ ؟ قَالَتْ : قُلْتُ اشْتَرَيْتُهَا لَكَ لِتَقْعُدَ عَلَيْهَا وَتَوَسَّدَهَا ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : إِنَّ اَصْحَابَ هٰذِهِ الصُّوَرِ يُعَذَّبُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ، وَيُقَالُ لَهُمْ: أَحْيُوْا مَا خَلَقْتُمْ ، وَقَالَ : إِنَّ الْبَيْتَ الَّذِيْ فِيْهِ الصُّوَرُ لَاتَدْخُلُهُ الْمَلَائِكَةُ)) (صحيح بخاري ، كتاب البيوع ، حديث رقم द्दज्ञण्छ)

अर्थ :– ((हजरत आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का बयान है कि उन्हों ने एक क़ालीन ख़रीदा जिस में चित्र (तसवीरें) थे । जब उस को रसूलुल्लाह ﷺ ने देखा तो आप ﷺ दरवाज़े पर ही खड़े रहे अन्दर नहीं आए । हजरत आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) फरमाती हैं कि मैं ने आप ﷺ के चेहरे पर अप्रसन्नता मह्सूस की । मैं ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल ((मैं अल्लाह और उस के रसूल के सामने तौबा करती हूँ मुझ से कौन सा पाप हो गया ? आप ﷺ ने फरमाया यह क़ालीन किस लिए पड़ा है ? हजरत आईशा फरमाती हैं कि मैं ने कहा ((इसे मैं ने आप के लिए ख़रीदा है ताकि आप इस पर बैठें और तकिया बनायें । आप ﷺ ने फरमाया ((इन चित्रकारों पर क़ियामत के दिन अज़ाब होगा और इन से कहा जाएगा कि अपनी बनाई हुई तस्वीरों को ज़िन्दा करो ।)) आप ﷺ ने फरमाया ((जिस घर में तसवीरें होती हैं उस में फरिशते नहीं आते)) (बुखारी)

यानी मुश्रिक् लोग मूर्तियों की पूजा करते हैं इस लिए फरिशतों और नबियों को तस्वीरों से घिन् आती है । इसी कारण फरिश्ते ऐसे घर में नहीं प्रवेश करते जिस में चित्र हो । मालूम हुआ कि चित्र चाहे पैग़म्बर की हो या इमाम की या वली की हो या क़ुतुब् की या पीर की हो या मुरीद की अतः समस्त प्राणियों में से किसी की भी हो बनानी ह़राम है और उस को रखना भी ह़राम है । जो लोग

अपने बुज़ुर्गों की तस्वीरों का आदर व सम्मान करते हैं और तबर्रुक् समझ कर अपने पास रखते हैं वे सरासर गुमराह और मुश्रिक् हैं।

पैग़म्बर और फरिश्ते उन से घिन करते हैं। मुसलमान का फर्ज है कि वह हर प्रकार की तस्वीर को गन्दा समझ कर अपने घर से दूर फेंक दे ताकि रहमत के फरिश्ते उस घर में आएँ जाएँ और घर में बरकत् हो।

पाँच बड़े गुनाह

((عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ :إِنَّ أَشَدَّالنَّاسِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنْ قَتَلَ نَبِيًّا أَوْ قَتَلَهُ نَبِيٌّ أَوْ قَتَلَ أَحَدَ وَالِدَيْهِ ، وَالْمُصَوِّرُوْنَ وَعَالِمٌ لَمْ يَنْتَفِعْ بِعِلْمِهِ)) (رواه البيهقي في شعب الايمان ट/ज्ञ८ठ- رقم الحديث ठडडड)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) का बयान है कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना आप ﷺ फरमा रहे थे ((क़ियामत के दिन सब से अधिक अज़ाब उस व्यक्ति को होगा जिस ने नबी को या जिस को नबी ने क़त्ल किया। या जिस ने अपने बाप या माँ को क़त्ल् किया और तस्वीरें बनाने वालों को और उस आलिम् को भी जो अपने इल्म से लाभ न उठाए।)) (बैहक़ी)

यानी तस्वीर बनाने वाला भी उन बड़े बड़े गुनाहों में से है, चुनांचे जो गुनाह पैग़म्बर को क़त्ल करने वाले को होगा वही गुनाह तस्वीरें बनाने वालों को भी होगा।

((عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ اللّٰهُ : وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذَهَبَ يَخْلُقُ كَخَلْقِيْ، فَلْيَخْلُقُوْا ذَرَّةً أَوْ لِيَخْلُقُوْا حَبَّةً أَوْ شَعِيْرَةً)) [رواه الشيخان]

अबू-हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना आप फरमा रहे थे कि अल्लाह ने फरमाया है: ''उस से बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा जो मेरी तरह पैदा करने की कोशिश करे, सो भला कि एह कण या एक दाना या एक जौ तो पैदा करके दिखायें''। (बुखारी व मुस्लिम)

यानी तस्वीर बनाने वाला गुप्त रूप से उलूहियत (खुदाई) का दावा करता है कि अल्लाह के पैदा करने की तरह चीज़ें पैदा करना चाहता है, यह बड़ा गुस्ताख और झूठा है, एक दाना तक बनाने की ताक़त नही, नक़ल उतारता है, नक़्क़ाल मलऊन पर अल्लाह की धिक्कार है।

अपने बारे में रसूलुल्लाह ﷺ का फरमान

((عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ :إِنِّيْ لاَ أُرِيْدُ أَنْ تَرْفَعُوْنِيْ فَوْقَ مَنْزِلَتِيَ الَّتِي أَنْزَلَنِيْهَا اللّٰهُ تَعَالَي ، أَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ)) (رواه رزين)

हजरत अनस् (رضي الله عنه) से रिवायत् है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया ((मैं नहीं चाहता कि तुम लोग मुझे मेरे इस पद से आगे बढ़ाओ जिस पद पर अल्लाह ने मुझे रखा है। मैं मुहम्मद हूँ, अब्दुल्लाह का बेटा हूँ, अल्लाह का बन्दा हूँ और उस का रसूल हूँ।))(रज़ीन) यानी जिस प्रकार और बड़े लोग अपनी तारीफ में मुबालग़ा से मगन हो जाते हैं मुझे अपनी तारीफ़ में मुबालग़ा बिल्कुल भी पसन्द नहीं। उन लोगों को तो मुबालग़ा करने वालों के दीन से कोई वास्ता नहीं होता चाहे दीन रहे या न रहे, लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ अपनी उम्मत पर बड़े मेहरबान हैं। आप ﷺ को रात दिन यही चिन्ता लगी रहती थी कि मेरी उम्मत का दीन संवर जाए। जब आप को मालूम हुआ कि मेरे उम्मती मुझ से बड़ी मुहब्बत करते हैं और मेरे बहुत इह्सान

मन्द हैं और यह भी मालूम था कि मुहब्बत करने वाला महबूब को प्रसन्न करने के लिए आसमान व ज़मीन के कुलाबे मिलाया करता है और मुबालग़ा करते हुए प्रशंसा में सीमा से आगे बढ़ जाता है। तो ऐसा न हो कि ये मेरी प्रशंसा में सीमा से आगे बढ़ जाएँ, जिस से अल्लाह तआला की शान में बे अद्बी हो जाए और इस के कारण उन का ईमान और धर्म नष्ट हो जाए और मेरी अप्रसन्नता भी वाजिब हो जाए। इस लिए आप ﷺ ने फरमाया कि मुझे मुबालग़ा पसन्द नहीं। मेरा नाम मुहम्मद है, मैं ख़ालिक़ या राज़िक़ नहीं। मैं आम लोगों की तरह अपने बाप ही से पैदा हुआ हूँ। और मेरा आदर एवं सम्मान बन्दा होने में है। परन्तु अन्य लोगों से मैं इस बात में अलग हूँ कि मेरे पास अल्लाह की तरफ से वह्य आती है, और मैं अल्लाह के आदेशों को जानता हूँ लोग नहीं जानते। अतः लोगों को मुझ से अपना दीन सीखना चाहिए।

ऐ अल्लाह रहमतुल-लिल-आलमीन (यानी सर्व संसास के लिए रहमत) ﷺ पर अपनी दया एवं कृपा की वर्षा कर जिस प्रकार आप ﷺ ने हम जैसे जाहिलों को दीन सिखाने के लिए सर तोड़ कोशिशें कीं उनके पद और सम्मान को पहचानने वाला तू ही है। ऐ अल्लाह हम तेरे बे बस् बन्दे हैं हमारे अधिकार में कुछ नहीं है। जिस प्रकार तूने हमें अपनी दया, कृपा से शिर्क एवं तौहीद का अर्थ अच्छी तरह समझाया, लाइलाहा इल्लल्लाह के तक़ाज़ों से ख़बरदार किया, और मुश्रिकों से निकाल कर मोवह्हिद बनाया, इसी प्रकार अपनी दया तथा अनुकम्पा से हमें बिद्अत और सुन्नत का अर्थ अच्छी तरह समझा। कलिमा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह के तक़ाज़ों से आगाह फरमा और बिद्अतियों और पथ भ्रष्टों के समूह से निकाल कर कुरआन और ह़दीस की पैरवी करने वाला बना। आमीन सुम्मा आमीन।

وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العالمين.